व्याकरण वृक्ष 7

शिक्षक-दर्शिका

Harbour Press®
INTERNATIONAL

भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

पाठ योजनाः 1

आज की अवधारणा

छात्रों को भाषा, बोली, लिपि तथा व्याकरण के बारे में बताना। मौखिक व लिखित भाषा में अंतर स्पष्ट करना। सांकेतिक भाषा को समझाना। भारतीय भाषाओं, मानक भाषा व हिंदी भाषा के महत्व को बताना। साहित्य के दोनों प्रकार गद्य व पद्य से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि भाषा शब्द भाष् धातु से बना है, जिसका अर्थ 'बोलना' है। अपनी बात को बोलकर व दूसरों की बात सुनकर समझना ही भाषा है। वे लिपि तथा व्याकरण की परिभाषा से भी परिचित हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में भाषा, उसके प्रकार व उसके महत्व को जानने संबंधी रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- भाषा को परिभाषित करते हुए उसके रूपों की पहचान करने में,
- मातृभाषा, भारतीय भाषाओं तथा मानक भाषा में अंतर करने में,
- गद्य तथा पद्य साहित्य के अंतर्गत आने वाली विधाओं से परिचित होने में,
- व्याकरण के विभिन्न स्तरों से परिचित होकर वाक्य शुद्धि पर ध्यान देने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा समझाकर मौखिक व लिखित भाषा के बारे में बताना।
- बोली तथा भाषा में अंतर बताकर हिंदी भाषा का महत्व समझाना।
- लिपि और साहित्य से क्या अभिप्राय है, इसकी जानकारी देना।
- व्याकरण में भाषा पर किन स्तरों पर विचार किया जाता है, इसे बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में व्याकरण के विभिन्न स्तरों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

विश्व में बोली जाने वाली किन्हीं दस भाषाओं के नाम तथा लिपियों के नमूने इंटरनेट या पुस्तकालय द्वारा एकत्रित कीजिए।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध भाषा, लिपि, साहित्य व व्याकरण संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर मानक भाषा जानने संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में भाषा, मातृभाषा, मानक भाषा, लिपि, साहित्य, बोली व व्याकरण की परिभाषा लिखे हुए चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि भाषा के लिए निश्चित ध्वनियों की आवश्यकता होती है जिनके माध्यम से हम अपने भावों तथा दूसरों के भावों एवं विचारों को समझ पाते हैं।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को भाषा, लिपि व व्याकरण के संबंध में बताना तथा गद्य व पद्य साहित्य के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, भाषा के दो रूप होते हैं—मौखिक व लिखित। भाषा का मूल रूप मौखिक होता है यह मुख द्वारा बोले जाने के कारण मौखिक कहलाता है। लेकिन लिखित में हम लिखकर अपनी बात प्रकट करते हैं। यह भाषा का स्थायी रूप होता है। • इसके अलावा सांकेतिक भाषा को इशारों द्वारा समझाया या समझा जाता है, लेकिन इसे भाषा का रूप नहीं माना गया है। • उन्हें फिर मातृभाषा के बारे में बताएँ जो सर्वप्रथम अपने परिवार व माता तथा अन्य सदस्यों द्वारा सीखी जाती है। हमारे देश के हर राज्य की अपनी एक भाषा है। लेकिन हमारे संविधान ने केवल 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की हुई है। • छात्रों को सभी मान्यता प्राप्त भाषाओं के बारे में बताकर मानक भाषा के बारे में बताएँ, जिसे विद्वानों व शिक्षाविदों द्वारा भाषा में एकरूपता लाने के लिए मान्यता दी गई है।

	• छात्रों को बोली तथा भाषा से परिचित कराते हुए बताएँ कि भाषा का अल्पविकसित रूप बोली कहलाता है। इसका प्रयोग सीमित क्षेत्र में किया जाता है। • बोली में लोकगीत तथा लोककथाओं की रचना होती है परंतु लिखित रूप में नहीं होते। हिंदी भाषा में 18 बोलियाँ प्रचलित हैं। • भाषा बोली का ही विकसित रूप है। इसमें साहित्य की रचना भी की जाती है। जान लें कि ज्ञान के संचित कोष को ही साहित्य कहा जाता हैं, जो दो प्रकार का होता है–गद्य और पद्य। • उन्हें बताएँ कि जब विचार साधारण रूप से लिखे जाते हैं, तब वे गद्य की श्रेणी में आते हैं, वहीं पद्य साहित्य के अंतर्गत विचारों को काव्य शैली में प्रस्तुत किया जाता है। • अब छात्रों को बताएँ कि मौखिक भाषा में तो ध्वनियों को बोलकर विचार प्रकट करते हैं लेकिन लिखित भाषा में इन ध्वनियों को लेखन-चिह्नों द्वारा प्रकट किया जाता है। ये लेखन-चिह्न ही लिपि कहलाते है। • वहीं व्याकरण हमें किसी भी भाषा की शुद्धता के नियम सिखाता है। इससे भाषा में स्थिरता, शुद्धता तथा मानकता आती है। व्याकरण में हम वर्ण स्तर, शब्द स्तर तथा वाक्य स्तर पर विचार करते हैं। • छात्रों को यह सभी विषय अच्छी तरह स्पष्ट करने के बाद बीच-बीच में इनसे संबंधित छोटे-छोटे प्रश्न पूछें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. भाषा किसे कहते हैं? आप घर में जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, उस भाषा के कोई पाँच वाक्य लिखिए?

....

....

....

....

ख. लिखित भाषा किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

....

....

....

ग. हिंदी भाषा का महत्व समझाइए।

....

....

....

घ. मातृभाषा और मानक भाषा में अंतर समझाइए।

....

....

....

ङ. लिपि किसे कहते हैं?

....

....

च. व्याकरण किसे कहते हैं? व्याकरण में हम भाषा पर किन-किन स्तरों पर विचार करते हैं?

....

....

....

2. निम्नलिखित क्रियाओं में भाषा का कौन-सा रूप प्रयोग होता है? सही (✓) का चिह्न लगाकर बताइए–

क. भाषा का अल्प विकसित रूप .... कहलाता है।

ख. भाषा में एक ही .... या .... के एक से अधिक .... प्रचलित हो सकते हैं।

ग. भारतीय संविधान द्वारा .... भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है।

घ. भाषा जगत में .... का बहुत अधिक महत्व है।

ङ. मौखिक भाषा में .... को बोलकर मनुष्य अपने मनोभावों को प्रकट करता है।

3. पद्य साहित्य के अंतर्गत कौन-कौन सी विधाएँ शामिल हैं, एक सूची द्वारा बताइए।

....

....

4. **गद्य साहित्य के अंतर्गत कौन-कौन सी विधाएँ आती हैं, एक सूची द्वारा बताइए।**

....

....

5. **कोष्ठक में से चुनकर सही लिपि के आगे घेरा लगाइए।**

क. अंग्रेजी भाषा की लिपि है। (उर्दू, रोमन)

ख. पंजाबी भाषा की लिपि है। (रोमन, गुरुमुखी)

ग. उर्दू भाषा की लिपि है। (देवनागरी, फारसी)

घ. हिंदी भाषा की लिपि है। (उर्दू, देवनागरी)

ङ. संस्कृत भाषा की लिपि है। (गुरुमुखी, देवनागरी)

6. **भारत के निम्नलिखित राज्यों में कौन-कौन सी भाषाएँ बोली जाती हैं?**

क. गुजरात - __________ ख. राजस्थान - __________

ग. उत्तर प्रदेश - __________ घ. बिहार - __________

ङ. असम - __________ च. केरल - __________

7. **निम्नलिखित में भाषा के किस रूप का प्रयोग होता है–**

क. समाचार-पत्र - ....

ख. भाषण - ....

ग. पत्र - ....

घ. काव्य-पाठ - ....

ङ. तार - ....

च. टेलीफोन - ....

वर्ण-विचार पाठ योजना: 2

आज की अवधारणा

छात्र वर्णमाला, स्वर एवं उसके भेद, व्यंजन एवं उसके भेदों, अयोगवाह, मात्रा, उच्चारण-स्थानों का परिचय, श्वास की मात्रा के आधार पर वर्ण-भेद, उच्चारण संबंधी अशुद्धियों आदि से परिचित हो सकेंगे।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि स्वर तथा व्यंजनों को आपस में मिलाकर ही शब्द, पद तथा वाक्यों का निर्माण किया जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- स्वर एवं उसके भेदों को समझने में,
- व्यंजन तथा उसके भेदों को जानने में,
- अयोगवाह के अंतर्गत आने वाली ध्वनियों को जानने में,
- स्वर की मात्रा का व्यंजन के साथ किस प्रकार प्रयोग किया जाता है, इसे समझने में,
- प्राण-वायु की मात्रा के आधार पर वर्ण को कितने भेदों में विभाजित किया गया है तथा वे कौन-से हैं, इस बात को जानने में,
- विभिन्न प्रकार की उच्चारण संबंधी अशुद्धियों का ध्यान रखने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में स्वरों तथा व्यंजनों के महत्व से परिचित कराना।
- विभिन्न उच्चारण-स्थानों तथा उस स्थान का प्रयोग करते हुए बोले जाने वाले वर्णों के परिचय से अवगत कराना।
- भाषा के दोनों रूपों का प्रयोग करने के दौरान विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों से बचने की योग्यता विकसित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में वर्ण-विचार के प्रति जिज्ञासा का भाव उत्पन्न करते हुए इस विषय को भली-भाँति समझने के लिए अभिप्रेरित करना।

गतिविधियाँ

आप अपनी कार्य-पुस्तिका में प्रतिदिन कोई भी पाँच कठिन शब्द उनके अर्थ के साथ लिखें। सहायता के लिए आप हिंदी शब्दकोश की सहायता ले सकते हैं। इस तरह आप अपना स्वयं का शब्दकोश तैयार कर सकेंगे।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में वर्ण-विचार संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर विभिन्न मात्राओं तथा उनसे बने शब्दों को दर्शाते वीडियो क्लिप्स।
- व्यंजन के विभिन्न भेदों को दर्शाता चार्ट पेपर।
- उच्चारण-स्थानों का परिचय देते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'वर्ण-विचार' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को वर्णों एवं उनके भेदों, उच्चारण स्थानों से परिचित कराते हुए भाषा को शुद्ध रूप से बोलने व लिखने हेतु अभिप्रेरित करना।	• छात्रों, भाषा की वह सबसे छोटी ध्वनि, जिसके और अधिक टुकड़े न किए जा सके, 'वर्ण' कहलाती है। वहीं किसी भी भाषा में प्रयुक्त होने वाले वर्णों के क्रमबद्ध समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं। • उन्हें बताएँ कि हिंदी वर्णमाला को तीन भागों में बाँटा गया है– स्वर, व्यंजन तथा अयोगवाह। • जिन वर्णों के उच्चारण के समय मुख से निकलने वाली वायु स्वतंत्र रूप से बाहर निकलती है, वे 'स्वर' कहलाते हैं। हिंदी के स्वरों की संख्या 11 है। स्वरों के तीन भेद हैं– ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत। तीनों भेदों को अध्यापक स्पष्ट करें। • व्यंजन के बारे में बताएँ कि जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है और बोलते समय मुख से निकलने वाली वायु मुख के अलग-अलग भागों से टकराकर बाहर निकलती है, उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं। व्यंजन के भेद हैं– स्पर्श व्यंजन, अंतःस्थ व्यंजन, ऊष्म व्यंजन तथा सभी भेदों को स्पष्ट करें।

	• उन्हें बताएँ कि हिंदी वर्णमाला में स्वरों तथा व्यंजनों के अतिरिक्त तीन और ध्वनियाँ हैं– अनुस्वार, विसर्ग तथा चंद्रबिंदु। तीनों को एक-एक करके स्पष्ट करें। • तत्पश्चात् उन्हें मात्राओं का ज्ञान कराते हुए बताएँ कि 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती क्योंकि यह सभी व्यंजनों में मिला होता है। अब सभी मात्राओं को वर्णों में जोड़ते हुए उनसे शब्द बनाकर दिखाएँ। • इसके बाद मुख के विभिन्न अवयवों से परिचित कराएँ तथा अपने साथ-साथ वर्णों को उचित अवयवों के द्वारा बोलने को कहें। उन्हें उच्चारण-स्थान की दृष्टि से नाम बताने को भी कहें। • यह भी स्पष्ट करें कि श्वास/प्राण-वायु की मात्रा के आधार पर वर्णों को अल्पप्राण वर्णों में वायु की मात्रा कम होती है तथा के महाप्राण वर्णों के उच्चारण में वायु अधिक मात्रा में निकलती है। इनके उदाहरण भी बताएँ। • छात्रों को संयुक्त व्यंजन, द्वित्व व्यंजन, तथा संयुक्ताक्षर वर्णों से भी अवगत कराते हुए इनके उदाहरण दें। • अंततः उन्हें उच्चारण संबंधी अशुद्धियों से परिचित कराएँ कि हमें सदैव शुद्ध उच्चारण करना चाहिए ताकि हमारा लेखन भी शुद्ध हो सके। शुद्ध उच्चारण ही शुद्ध लेखन की नींव है। • विभिन्न वर्णों से संबंधित अशुद्धियाँ न हों, इसके लिए उन्हें पाठ से इनके शुद्ध रूपों की पहचान करवाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. स्वर और व्यंजन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

ख. वर्णमाला से आप क्या समझते हैं?

....

ग. संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं? ये कौन-कौन से हैं?

....

घ. मात्रा किसे कहते हैं?

....

2. **परिभाषा दीजिए–**

क. अयोगवाह – ....

....

ख. अनुनासिक – ....

....

ग. अनुस्वार – ....

....

3. **खाली स्थान भरिए–**

क. जिन वर्णों के उच्चारण में वायु की मात्रा कम होती है, वे .... कहलाते हैं।

ख. शुद्ध उच्चारण ही शुद्ध लेखन की .... है।

ग. किसी भी व्यंजन के साथ मिलने पर .... का रूप बदल जाता है।

घ. व्यंजन में .... अंत में जुड़ते हैं।

ङ. अंतःस्थ व्यंजनों की संख्या .... है।

4. **वर्ण-विच्छेद कीजिए–**

क. श्रमिक – .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

ख. पुस्तक – .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

ग. नीरज – .... + ... + ... + ... + ... + ...

घ. कुसुम – .... + ... + ... + ... + ... + ...

ङ. स्वाधीन – .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

5. **अनुस्वार (ं) या अनुनासिक (ँ) का प्रयोग करके सही शब्द बनाइए–**

क. श्रृखला – ____________ ख. गाव – ____________

ग. चचल – ____________ घ. कुआ – ____________

ङ. भयकर – ____________ च. काच – ____________

6. **निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–**

क. ग्रहकार्य – ____________ ख. आर्शीवाद – ____________

ग. प्रसंशा – ____________ घ. उज्जवल – ____________

ङ. क्रपा – ____________ च. मेंढ़क – ____________

7. **कल्पनात्मक प्रश्न–**

वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है, फिर भी भाषा में इसका बहुत महत्व होता है। इस आधार पर बताइए कि हमें किस पर घमंड नहीं करना चाहिए और क्यों?

उच्चारण और वर्तनी   पाठ योजना: 3

आज की अवधारणा

छात्रों को शुद्ध वर्तनी संबंधी ध्यान रखने योग्य बातें बताते हुए हिंदी वर्णों के मानक रूपों से परिचित कराना। अशुद्ध उच्चारण के कारण होने वाली स्वरों, व्यंजनों तथा अन्य प्रकार की अशुद्धियों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र इस बात से परिचित हैं कि वर्णों को शुद्ध रूप से लिखने पर ही वर्तनी भी शुद्ध हो सकेगी, किंतु इसके लिए हमारा उच्चारण भी शुद्ध होना चाहिए।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- वर्णों एवं शब्दों का मानक रूप निर्धारित होता है, यह समझने में,
- हल् चिह्नों से युक्त वर्णों में 'इ' की मात्रा का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है, इस बात को जानने में,
- श, ष, स का प्रयोग कहाँ तथा किस रूप में किया जाता है, इस बात को जानने में,
- अशुद्ध उच्चारण के कारण होने वाली अशुद्धियों को किस प्रकार शुद्ध किया जाए। इसे जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को वर्णों एवं शब्दों के मानक रूप से परिचित कराना।
- 'हल्' चिह्नों से युक्त वर्णों में 'इ' की मात्रा का शुद्ध प्रयोग करने हेतु प्रेरित करना।
- पुराने तथा अमानक रूप को नए तथा मानक रूप में परिवर्तित कर सकना।
- शुद्ध उच्चारण करते हुए विभिन्न वर्णों से संबंधित अशुद्धियों से स्वयं को दूर रखते हुए शुद्ध लेखन करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर उच्चारण और वर्तनी संबंधी जिज्ञासा उत्पन्न करते हुए उन्हें भाषा के शुद्ध रूप का प्रयोग करने हेतु अभिप्रेरित करना।

गतिविधियाँ

- अध्यापक छात्रों को कुछ चित्र दिखाएँ तथा उन्हें अपनी कार्य-पुस्तिका में उस वस्तु का नाम लिखने को कहें।
- अपने किसी अहिंदी भाषी मित्र के साथ बातचीत करें तथा यह पता करें कि आपको किस प्रकार का अंतर दिखाई पड़ता है।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- अमानक रूप वाले शब्दों के मानक रूप वाले शब्दों को दर्शाता चार्ट पेपर।
- यूट्यूब पर शुद्ध उच्चारण संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- 'हल्' चिह्नों से युक्त वर्णों में 'इ' की मात्रा के सही प्रयोग को दर्शाते शब्दों वाला चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'उच्चारण और वर्तनी' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को संधि के बारे में बताना। उनमें संधि-विच्छेद व उसके भेदों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, भाषा के उच्चरित रूप को उसी रूप में लिपिबद्ध करना 'वर्तनी' कहलाता है। • आप जानते ही हैं कि भाषा का लिखित रूप व्याकरण के नियमों पर ही आधारित होता है। इसमें प्रत्येक शब्द की वर्तनी का शुद्ध प्रयोग किया जाना चाहिए। • वर्तनी की अशुद्धता होने के अनेक कारण हैं– (i) व्याकरण के नियमों का पर्याप्त ज्ञान न होना। (ii) शुद्ध भाषा लिखने का अभ्यास न होना। (iii) शब्दों का अशुद्ध उच्चारण। (iv) अशुद्ध वर्तनी का निरंतर प्रयोग। (v) अहिंदी भाषी होने के कारण सामान्य जीवन में हिंदी का प्रयोग न करना।

	• छात्रों को बताएँ कि भारत सरकार के क्रेदीय हिदी निदेशालय ने शुदध् वर्तनी को लेकर कई वर्णों के मानक रूप निर्धारित किए हैं। आप सभी को इन्हीं मानक रूपों के प्रयोग का अभ्यास करना चाहिए। उन्हें पाठ से ऐसे शब्दों के मानक रूप उदाहरण सहित बताएँ। • उन्हें स्पष्ट करें कि जिन वर्णों पर 'हल्' चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उनमें यदि बाद वाले व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा (ि) लगानी हो, तो उसका प्रयोग संबंधित व्यंजन से तत्काल पूर्व किया जाता है, पूरे जोड़े (युग्म) के साथ नहीं उदाहरणार्थ– गड्डियाँ, द्वितीय आदि। • तत्पश्चात् पाठ से उन्हें श, ष, स का प्रयोग करना बताएँ कि कब इनका प्रयोग किया जाए तथा किस स्थिति में इनका रूप परिवर्तित होता है। • कुछ शब्दों के दो-दो रूप मान्य हैं जैसे– कुरता-कुर्ता, सरदी-सर्दी आदि। • अंततः उन्हें इस बात से अवगत कराएँ कि अशुद्ध उच्चारण के कारण हम कई प्रकार की अशुद्धियाँ कर सकते हैं जैसे-स्वरों से संबंधित अशुद्धियाँ, व्यंजनों से संबंधित अशुद्धियाँ तथा अन्य प्रकार की अशुद्धियाँ • अतः उन्हें बताएँ कि पढ़ते व बोलते समय शुद्ध उच्चारण पर बल दीजिए तथा शुद्ध उच्चारण सीखिए, ताकि लिखते समय वर्तनी की अशुद्धियों से बचा जा सके। • विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों से संबंधित उदाहरणों को छात्रों के समक्ष स्पष्ट करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

क. इमानदार – ____________ ख. नमश्कार – ____________

ग. शीर्शक – ____________ घ. सामग्रि – ____________

ङ. रामायन – ____________ च. एकलौता – ____________

छ. कवी – ____________ ज. चाहिए – ____________

झ. परिक्षा – ____________ ण. अतिथी – ____________

2. दिए गए शब्दों के नए मानक रूप लिखिए–

क. मिट्टी – ____________ ख. विद्या – ____________

ग. गद्दा – ____________ घ. विद्वान – ____________

ङ. विद्यालय – ____________ च. प्रसिद्ध – ____________

3. उचित विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क. (अ) आशीरवाद (ब) आर्शीवाद (स) आशिवार्द (द) आशीर्वाद

ख. (अ) प्रज्जवलित (ब) प्रज्वलित (स) प्रजज्वलित (द) परज्वलित

ग. (अ) अनुग्रहित (ब) अनुगृहित (स) अनुगृहित (द) अनूग्रहीत

घ. (अ) लक्ष्मण (ब) लछमण (स) लछमण (द) लाक्ष्मण

ङ. (अ) हलवायी (ब) हलवाई (स) हलर्वाइ (द) हिलवायी

4. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

क. भारतीय .... के .... युद्ध भूमि की ओर जा रहे हैं।
(सैना–सेना/सेनिक–सैनिक)

ख. होली के .... से एक .... कथा जुड़ी है।
(त्योहार–त्यौहार/पैरणिक–पौराणिक)

ग. .... व्यक्ति दूसरों को सदा .... देता है।
(झूण–झूठा/धोका–धोखा)

घ. .... अपने आश्रम में .... पढ़ रहे हैं।
(ऋषि–रिशी/रिग्वेद–ऋग्वेद)

संधि

पाठ योजनाः 4

आज की अवधारणा

छात्रों को संधि के बारे में बताना। संधि व संधि-विच्छेद को उदाहरण सहित परिभाषित करके उसके भेदों के नाम बताना। स्वर, व्यंजन व विसर्ग संधि में अंतर स्पष्ट करना। स्वर संधि के भेदों से परिचित कराना तथा व्यंजन व विसर्ग संधि के नियमों को समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि जब दो वर्ण निकटता के कारण आपस में मिल जाते हैं और इस मेल के कारण उनमें विकार आता है, तब वहाँ दो वर्णों की संधि होती है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- संधि के बारे में सोचने और विचार करने में,
- संधि युक्त शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर उनका संधि-विच्छेद करने में,
- दिए गए शब्दों को सुनकर उनका भेद पहचानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में संधि व संधि विच्छेद की उपयोगिता समझाना।
- संधि के तीनों भेदों (स्वर, व्यंजन व विसर्ग संधि) से परिचित कराना।
- दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण और अयादि संधि में अंतर स्पष्ट करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में संधि विषय के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों को कोई अपठित गद्यांश देकर उसमें से संधियुक्त शब्दों को छाँटकर उनका संधि-विच्छेद करने को कहना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में संधि विषय संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर संधि के भेदों की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में संधि विषय को स्पष्ट करते हुए चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'संधि' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित करें।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को संधि के संबंध में बताना तथा उसके भेदों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, संधि का अर्थ होता है—मिलना; विच्छेद का अर्थ होता है—अलग होना। दो वर्णों के मेल से बने नए शब्द को वापस पहली वाली स्थिति में लाना संधि-विच्छेद कहलाता है जैसे—नरेन्द्र + नर + इंद्र। • उन्हें बताएँ कि संधि के तीन भेद होते हैं—स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि। स्वर संधि यानि स्वरों का मेल। दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं जैसे—महा + आत्मा + महात्मा आदि। • स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं— दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण् संधि और अयादि संधि। इन पाँचों भेदों को श्यामपट्ट पर उदाहरण सहित परिभाषित करके समझाएँ। • उन्हें स्पष्ट करने के बाद बताएँ कि व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, वह व्यंजन संधि कहलाता है जैसे—सम्कल्पत्र्संकल्प आदि। • वहीं विसर्ग का किसी स्वर या व्यंजन से मेल होने पर जो विकार (परिवर्तन) होता है, वह विसर्ग संधि कहलाता है। • श्यामपट्ट पर व्यंजन व विसर्ग संधि को उदाहरण सहित स्पष्ट करने के बाद छात्रों को उनके नियमों से एक-एक करके अवगत कराएँ। • सभी नियमों को समझाने के बाद छात्रों को कुछ शब्द दें और उसका संधि विच्छेद करके उसके आगे उनका भेद लिखकर लाने को कहें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. संधि किसे कहते हैं?

....

....

ख. संधि के कितने भेद होते हैं? सभी भेदों के नाम लिखिए।

....

....

....

ग. गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि तथा अयादि संधि के दो-दो उदाहरण लिखिए।

(अ) गुण संधि – ____________ ____________ (ब) वृद्धि संधि – ____________ ____________

(स) यण संधि – ____________ ____________ (द) अयादि संधि – ____________ ____________

2. निम्नलिखित शब्दों के उचित संधि-विच्छेद पर (✓) निशान लगाइए–

1. महोत्सव = महा + उत्सव   महो + उत्सव   मह + उत्सव
2. सज्जन = सज् + जन   सत्त् + जन्   सत् + जन
3. स्वागत = स्व + आगत   सु + आगत   स्व + गत
4. गणेश = गण + ऐश   गण + ईश   गणो + ईश

3. निम्नलिखित शब्दों को संधि के अनुसार उनके शीर्षक तक पहुँचाइए–

रवींद्र   नमस्ते   संचय   निष्पाप   राजेश
उल्लेख   वागीश   भावुक   ततएव

<u>**स्वर संधि**</u>	<u>**व्यंजन संधि**</u>	<u>**विसर्ग संधि**</u>
....	....	....

....

....

4. सही वाक्य पर सही (✓) का तथा गलत वाक्य पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

क. 'पराधीन' स्वर संधि का उदाहरण है।

ख. वृद्धि संधि व्यंजन संधि का भेद है।

ग. स्वर संधि के चार भेद हैं।

घ. 'स्वेच्छा' गुण संधि का उदाहरण है।

ङ. वृद्धि संधि में अ–आ के बाद ए–ऐ आए, तो दोनों मिलकर ऐ हो जाता है।

च. 'गिरि+इंद्र' की संधि गिरींद्र है।

छ. संधि सदैव दो वर्णों में होती है।

5. संधि-विच्छेद करके संधि का भेद भी लिखिए–

संधि		संधि–विच्छेद	संधि–भेद
क. पराधीन	=	....	....
ख. नरेंद्र	=	....	....
ग. यथार्थ	=	....	....
घ. निर्धन	=	....	....
ङ. निश्छल	=	....	....
च. प्रत्यंचा	=	....	....

6. संधि कीजिए–

क. मनः + हर = ________ ख. सम् + न्यासी = ________

ग. निः + मल = ________ घ. षट् + आनन = ________

ङ. दुः + चक्र = ________ च. उत् + घाटन = ________

छ. अनु + छेद = ________ ज. सदा + एव = ________

7. निम्नलिखित शब्दों की संधि करके नए शब्द बनाइए–

क. देव → ऋषि ....

सप्त → ऋषि ....

महा → ऋषि ....

राज → ऋषि ....

शब्द-विचार

पाठ योजनाः 5

आज की अवधारणा

छात्रों को शब्द व पद का अर्थ स्पष्ट करते हुए विभिन्न आधारों पर किए जाने वाले शब्दों के विभाजन से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र इस बात से परिचित हैं कि भाषा विभिन्न वाक्यों का संयोजित रूप है तथा शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तो वे पद कहलाते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- शब्द तथा पद के मध्य के अंतर को समझने में,
- शब्दों का विभाजन कितने आधारों पर किया जाता है, इस बात को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- विभिन्न आधारों पर किए गए शब्दों के वर्गीकरण से बने भिन्न-भिन्न शब्दों की पहचान करना।
- विभिन्न प्रकार के शब्दों को जानकर उनके मध्य अंतर समझने की योग्यता का विकास करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में शब्द-विचार के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करते हुए विभिन्न प्रकार के शब्दों को जानने का भाव विकसित करना।

गतिविधियाँ

हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं से ऐसे पाँच-पाँच शब्द ढूँढकर लिखिए जो उत्पत्ति/स्रोत, बनावट, अर्थ तथा व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर किए गए भेद को दर्शाते हैं।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-विचार की जानकारी संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर शब्द-विचार संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- शब्दों के वर्गीकरण की जानकारी देता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय से की जाएगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि शब्दों का वर्गीकरण कई आधारों पर किया जाता है जैसे—उत्पत्ति/स्रोत, बनावट, अर्थ तथा व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को शब्दों के वर्गीकरण के आधारों की जानकारी देते हुए इसके विभिन्न भेदों से बने शब्दों की पहचान करने की योग्यता उत्पन्न करना।	• छात्रों, दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बनने वाले सार्थक तथा स्वतंत्र ध्वनि-समूह को 'शब्द' कहते हैं। • शब्द को जब वाक्य में प्रयुक्त किया जाता है तो वह 'पद' कहलाता है। • उन्हें बताएँ कि उत्पत्ति अथवा स्रोत के आधार पर शब्दों के पाँच भेद हैं—तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी तथा संकर। • सभी भेदों को अधिक-से-अधिक उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • बनावट या रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं—रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़। तीनों भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करें तथा उनसे भी इनके उदाहरण बनवाएँ। • तत्पश्चात्, उन्हें बताएँ कि अर्थ के आधार पर शब्दों को सार्थक व निरर्थक शब्दों में बाँटा जाता है। • जो शब्द अर्थ का बोध कराते हैं, वे सार्थक शब्द कहलाते हैं तथा जो शब्द अर्थबोधक नहीं होते, वे निरर्थक शब्द कहलाते हैं। • अंततः छात्रों को बताएँ कि व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्दों को दो भागों में बाँटा जाता है—विकारी तथा अविकारी शब्द। • इन दोनो भेदों को उदाहरण देते हुए समझाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. शब्द किसे कहते हैं?

....

....

ख. तत्सम और तद्भव शब्द में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

ग. संकर शब्द किन्हें कहा जाता है? संकर शब्द के कोई चार उदाहरण दीजिए।

....

....

घ. सार्थक तथा निरर्थक शब्द के उदाहरण दीजिए।

....

....

ङ. विकारी और अविकारी शब्दों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों में (✓) या (✗) का चिह्न लगाइए-

क. शब्द के तीन भेद होते हैं। ☐

ख. विदेशी भाषा से आए शब्दों को देशज शब्द कहते हैं। ☐

ग. रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं। ☐

घ. संस्कृत से हिंदी में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं। ☐

ङ. अविकारी शब्दों में काल, वचन, लिंग, कारक के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता है। ☐

3. तत्सम शब्दों का तद्भव शब्दों से मिलान कीजिए-

	तत्सम		**तद्भव**
क.	गृह	अ)	माता/माँ
ख.	स्कंध	ब)	घर
ग.	अंबा	स)	कंधा
घ.	कर्म	द)	माथा
ङ.	दुग्ध	य)	काम
च.	मस्तक	र)	दूध

4. कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान भरिए।

क. जिन शब्दों में परिवर्तन नहीं होता, उन्हें .... शब्द कहा जाता है।
(विकारी/तद्‌भव/अविकारी)

ख. देशी बोलियों से हिंदी में आए शब्द .... कहलाते हैं।
(तत्सम/देशज/विदेशज)

ग. जो शब्द लिंग, वचन, काल के अनुसार बदलते हैं, उन्हें .... कहते हैं।
(विकारी/अविकारी/देशज)

घ. एक से अधिक अर्थ वाले शब्दों को शब्द .... कहते हैं।
(समानार्थक/एकार्थी/अनेकार्थक)

5. रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ शब्दों के दो-दो उदाहरण लिखिए।

क. रूढ़ – ____________ ____________

ख. यौगिक – ____________ ____________

ग. योगरूढ़ – ____________ ____________

पर्यायवाची शब्द   पाठ योजनाः 6

आज की अवधारणा

छात्रों को पर्यायवाची शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए पाठ तथा पाठ से इतर उदाहरणों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि व्याकरण में केवल सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है। अर्थ की दृष्टि से पर्यायवाची शब्द सार्थक शब्दों का एक प्रकार है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- पर्यायवाची शब्द के अर्थ को जानने में,
- अधिकांश पर्यायवाची शब्द कैसे शब्द होते हैं? इसे समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- पर्यायवाची शब्द को परिभाषित करना।
- दैनिक जीवन में पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग बताना।
- पर्यायवाची शब्दों के महत्व से परिचित हो कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर पर्यायवाची शब्दों के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करते हुए विभिन्न शब्दों के अधिक-से-अधिक पर्यायवाची शब्द ढूँढने की दिशा में उन्हें अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

- अध्यापक छात्रों को एक वर्ग-पहेली बनाकर दें तथा उसके भीतर से दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द ढूँढकर लिखने को कहें।
- छात्रों को कक्षा में लगे चित्रों को देखकर उनमें से किन्हीं चार चित्रों के पर्यायवाची शब्द लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित पुस्तकें।
- पर्यायवाची शब्दों के विभिन्न अर्थों को दर्शाता चार्ट पेपर।
- यूट्यूब पर पर्यायवाची शब्दों से संबंधित वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'पर्यायवाची शब्द' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को पर्यायवाची शब्दों तथा उनके अर्थों को जानने के लिए जिज्ञासु बनाना।	• छात्रों, किसी शब्द के लिए एक-सा अर्थ बताने वाले शब्द 'पर्यायवाची शब्द' कहलाते हैं। इन शब्दों के अर्थ में अत्यंत सूक्ष्म अंतर होता है। • वाक्यों में शब्दों के बदलने पर भी इनके अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता है उदाहरणार्थ– 'बगीचे में सुंदर-सुंदर फूल खिले हैं।' इस वाक्य में 'बगीचे' के स्थान पर उसके पर्यायवाची शब्द 'उपवन' या 'वाटिका' को प्रयुक्त करने पर भी वाक्य के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं आएगा। • किसी भी समृद्ध भाषा में पर्यायवाची शब्दों की अधिकता रहती है। जो भाषा जितनी संपन्न होगी उसमें पर्यायवाची शब्दों की संख्या उतनी ही अधिक होगी। • उन्हें बताएँ कि पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से भाषा में सुंदरता और चमत्कार पैदा हो जाता है। इससे उनका शब्द-भंडार बढ़ता है, इसलिए सभी को इनका ज्ञान होना आवश्यक है। • अब पाठ से पर्यायवाची शब्दों का वाचन करते हुए जहाँ कहीं आवश्यक हो उनके अर्थों को स्पष्ट करें। • तत्पश्चात्, श्यामपट्ट पर अलग-अलग शब्द लिखकर अथवा चित्र दिखाकर अध्यापक छात्रों से अनेक पर्यायवाची शब्द अपनी कार्य-पुस्तिका में लिखने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. पर्यायवाची शब्द किन्हें कहते हैं?

....

ख. आप अपने नाम का पर्याय बताइए।

....

ग. पर्यायवाची शब्दों को और किस नाम से जाना जाता है?

....

घ. 'सरस्वती' शब्द का पर्याय लिखिए।

....

2. नीचे दिए गए चित्रों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

क.

ख.

ग.

घ.

3. पढ़ो और समझो–

पर्याय का अर्थ समान अर्थ रखने वाला शब्द होता है, परंतु किसी शब्द के स्थान पर हमेशा उसका पर्याय ही प्रयुक्त हो, यह ज़रूरी नहीं है। अतः अर्थ के सौंदर्य को बनाए रखने के लिए उचित शब्द का प्रयोग किया जाना आवश्यक है।

निम्नलिखित शब्दों के गलत पर्यायवाची शब्दों पर गोला ◯ लगाइए–

क. नेत्र – चक्षु, लोचन, गज

ख. इच्छा – चाह, गहना, आकांक्षा

ग. किसान – घोड़ा, कृषक, हलधर

घ. गाय – गऊ, गौ, समुद्र

ङ. झंडा – केतु, ध्वज, संसार

च. पर्वत – नभ, नग, गिरि

छ. धन – संपदा, वित्त, आग

ज. मनुष्य – नर, मनुज, कुंभ

4. **निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–**

क. नदी – ____________ ____________

ख. मित्र – ____________ ____________

ग. गणेश – ____________ ____________

घ. छाया – ____________ ____________

ङ. हिरण – ____________ ____________

च. नाव – ____________ ____________

5. **पर्याय के आधार पर दिए गए शब्दों में से उचित शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

प्रसून सखा सवेरे घोटक जननी

क. तितली फूल पर बैठी है। वह .... से रस चूसती है।

ख. सुनील मेरा मित्र है। मुझे अपने .... पर गर्व है।

ग. हमें प्रातः जल्दी उठना चाहिए। .... के समय सैर करना अच्छा होता है।

घ. घोड़ा बहुत तेज भागता है। .... घास खाता है।

ङ. मेरी माँ बहुत अच्छी हैं। मेरी .... स्कूल में पढ़ाती हैं।

6. **चित्र देखकर पर्यायवाची शब्द लिखिए–**

क.
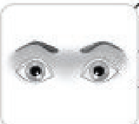

ग.
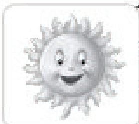

ख.
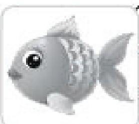

घ.

अनेकार्थी शब्द पाठ योजनाः 7

आज की अवधारणा

छात्रों को अनेकार्थी शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए इससे संबंधित उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि हिंदी भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ निकलते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- अनेकार्थी शब्द किसे कहते हैं, इसे जानने में,
- अनेकार्थी शब्द के कितने अर्थ निकलते हैं तथा क्या उनका स्थानापन्न किया जा सकता है, इस बात को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- अनेकार्थी शब्द को परिभाषित करते हुए उसे स्पष्ट करना।
- भाषा में अनेकार्थी शब्दों के महत्व से अवगत कराना।
- दैनिक जीवन में अनेकार्थी शब्दों का प्रयोग बताना।
- इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करना सिखाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अनेकार्थी शब्दों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करते हुए उन्हें इन शब्दों के उदाहरणों को अधिक-से-अधिक जानने हेतु अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कुछ चित्र बनाकर दें। अब उन्हें कुछ समय देते हुए उन चित्रों के अनेकार्थी शब्द लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित पुस्तकें।
- अनेकार्थी शब्दों के अर्थों को दर्शाता चार्ट पेपर।

- यूट्यूब पर अनेकार्थी शब्दों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अनेकार्थी शब्द' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को अनेकार्थी शब्द तथा उनके अर्थों को जानने के लिए जिज्ञासु बनाना।	• छात्रों, वे शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ निकलते हों। • अनेकार्थी शब्दों का व्यवहार हमारे जीवन में होता ही रहता है, अतः इन शब्दों को पर्यायवाची समझने की भूल न करें। • वाक्य प्रयोग के माध्यम से इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए बताएँ कि 'हाथी कर से पत्ती तोड़ रहा है' तथा 'बच्चे कर जोड़कर प्रार्थना कर रहे हैं', दोनों वाक्यों में 'कर' का अर्थ 'सूँड़' तथा 'हाथ' है। एक ही शब्द है, किंतु दोनों स्थानों पर अर्थ अलग-अलग हैं। • अनेकार्थी शब्द का अर्थ है– किसी एक शब्द के कई अर्थ उदाहरणार्थ– 'अंक' शब्द 'संख्या के अंक' तथा 'गोद' के लिए प्रयुक्त होता है। • अध्यापक पाठ से इन शब्दों का वाचन छात्रों से ही करवाएँ तथा जहाँ कहीं आवश्यक हो इनके अर्थ भी स्पष्ट करें। • छात्रों को अपने आस-पास से ऐसे उदाहरण लिखकर लाने को कहें, जिनके कई अर्थ निकलते हों। फिर उन्हें अपने मित्रों से बदलकर आपस में एक-दूसरे के उत्तरों की जाँच करने को कहें। • उन्हें बताएँ कि अनेकार्थी शब्द के अर्थ का ज्ञान प्रसंग के अनुरूप ही ग्रहण किया जाता है।।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

   क. अनेकार्थक शब्द से आप क्या समझते हैं?

....

....

ख. 'प्रकृति' शब्द के कोई दो अर्थ बताइए।

....

....

ग. 'कल' शब्द के कोई दो अर्थ बताइए।

....

....

2. निम्नलिखित शब्दों के अनुचित अर्थ वाले शब्दों में (✗) का निशान लगाइए–

क.	अंक	– गोद	◯	योग	◯	अध्याय	◯
ख.	अंबर	– सोना	◯	आकाश	◯	कपड़ा	◯
ग.	पृष्ठ	– पीठ	◯	क्षेत्र	◯	पन्ना	◯
घ.	मुद्रा	– मोहर	◯	सिक्का	◯	वंश	◯
ङ.	गुरु	– श्रेष्ठ	◯	चाल	◯	शिक्षक	◯

3. नीचे लिखे शब्दों से ऐसे दो-दो वाक्य बनाइए जिससे अलग-अलग अर्थ स्पष्ट हो जाए–

उदाहरण – माँ के <u>आँचल</u> में शांति मिलती है। (गोद)

पहाड़ी <u>अंचल</u> के लोग ईमानदार होते हैं। (क्षेत्र)

क. तीर → ....

→ ....

ख. प्रकृति → ....

→ ....

ग. अनंत → ....

→ ....

घ. वर्ण → ....

→ ....

4. सोचिए, समझिए और मिलान कीजिए–

क.	दल	(अ)	सूर्य
ख.	अरुण	(ब)	हाथ

ग.	कर	(स)	पत्ता
घ.	सारंग	(द)	प्रेम
ङ.	राग	(य)	साँप
च.	लक्ष	(र)	घड़ा
छ.	घट	(ल)	लक्ष्य
ज.	हरि	(व)	तालाब
झ.	सर	(श)	विष्णु

5. नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से पढ़िए और रेखांकित शब्दों के अर्थ दिए गए स्थान पर लिखें–

क. प्रात:काल की बेला मधुर होती है। ____________

ख. यह बाल विद्यालय है। ____________

ग. मैच में विपक्षी टीम की हार हुई। ____________

घ. हमने प्रतियोगिता में भाग लिया। ____________

ङ. उसके भाग में दुख ही दुख है। ____________

छ. निशा के पास चार कार्ड हैं। उन कार्डों पर वर्ण लिखे हैं। आप उन वर्णों से शुरू होने वाले अनेकार्थक शब्द लिखिए तथा उन शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ भी लिखिए।

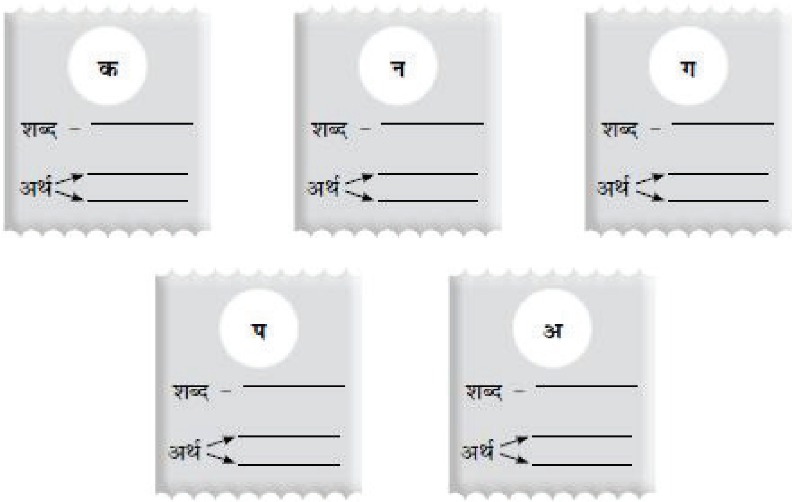

एकार्थक या पर्यायवाची प्रतीत होने वाले शब्द

पाठ योजनाः 8

आज की अवधारणा

छात्रों को एकार्थक या पर्यायवाची प्रतीत होने वाले शब्द-युग्मों की जानकारी देते हुए इन शब्दों के उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि हिंदी भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जो देखने में तो समान लगते हैं, किंतु वे भिन्नता लिए होते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों को परिभाषित करने में,
- इन शब्दों के अर्थों को समझने में।

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- भाषा में एकार्थक या पर्यायवाची प्रतीत होने वाले शब्द-युग्मों की महत्ता तथा उपयोगिता को समझना।
- इन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए इन्हें वाक्य-प्रयोग के दौरान उचित स्थान पर प्रयोग करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द-युग्मों के अर्थों को समझकर उन्हें भाषा में उपयुक्त स्थान पर प्रयोग करने की दिशा में अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक एकार्थक शब्दों की परचियाँ बनाएँ तथा एक-एक करके कक्षा के छात्रों को बुलाते हुए उनसे परचियाँ उठाकर उनमें लिखे शब्दों के अर्थ बताने को कहें। यदि उन्हें समझ न आएँ तो उन्हें उन शब्दों के अर्थों का अनुमान लगाने को कहें। इस प्रकार इन शब्दों का ज्ञान उन्हें खेल-खेल में कराया जा सकेगा।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित व्याकरणिक पुस्तकें।

- कक्षा में एकार्थक शब्दों के अर्थ की जानकारी देता चार्ट पेपर।
- यूट्यूब पर एकार्थक शब्दों के अर्थों का स्पष्टीकरण करते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों के अर्थों को जानने तथा उन्हें उचित स्थान पर प्रयोग करने हेतु जिज्ञासु बनाना।	• सार्थक शब्दों का एक भेद एकार्थक या पर्यायवाची प्रतीत होने वाले शब्द हैं। • छात्रों, ऐसे शब्द जिनके अर्थ में थोड़ी- बहुत समानता होते हुए भी अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से अंतर होता है, उन्हें एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द कहते हैं उदाहरणार्थ- 'पुराना' तथा 'प्राचीन' शब्द। इन शब्दों के अर्थ को वाक्य-प्रयोग द्वारा स्पष्ट तौर पर समझा जा सकता है- 'यह पुराना (बहुत दिनों का) समाचार-पत्र है', यह प्राचीन (कई शताब्दियों पुरानी) इमारत है। • सार्थक शब्दों का एक भेद एकार्थक या पर्यायवाची प्रतीत होने वाले शब्द हैं। • उन्हें यह समझाएँ कि ये समानार्थी नहीं होते हैं। इन शब्दों को ध्यान से देखने पर इनके अंतर का ज्ञान होता है। इनके प्रयोग में भूल न हो इसके लिए इनकी अर्थ-भिन्नता को जानना अति आवश्यक है। • छात्रों को अधिक-से-अधिक उदाहरण देकर तथा पाठ से इन शब्दों का वाचन कराते हुए उन शब्दों के अर्थ से परिचित कराएँ। • उन्हें कुछ शब्दों का वाचन कराने के पश्चात् शब्दों के अर्थ को बताने संबंधी कोई गतिविधि भी कराई जा सकती है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाते हुए रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

क. उसने अपनी .... के लिए कंगन खरीदे।

(अ) स्त्री (ब) पत्नी (स) महिला

ख. माँ ने अपने .... को गले से लगा लिया।

(अ) लड़का (ब) लड़की (स) पुत्र

ग. हीरा बहुमूल्य .... है।

(अ) मूल्यवान (ब) वस्तु (स) अमूल्य

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके दोबारा लिखें–

क. डाकुओं ने दस लोगों का वध कर दिया।

....

ख. हमें अपनी संस्कृति पर अहंकार है।

....

ग. तस्करी का सामान बेचना पाप है।

....

घ. मैंने प्रथम आने का पक्का इरादा कर लिया है।

....

ङ. क्या तुमने विद्यालय में प्रवेश के लिए निवेदन कर दिया है।

....

3. नीचे लिखे शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें।

क. बस दुर्घटना में तीन व्यक्तियों की .... हो गई। (मृत्यु/निधन)

ख. पुत्र ने पिता से .... माँगी। (आज्ञा/अनुमति)

ग. प्रत्येक व्यक्ति .... को रहने की आदत डालनी चाहिए। (मूक/मौन)

घ. वह राहगीर .... में सो गया। (परछाई/छाया)

ङ. मेरी .... धार्मिक स्वभाव की है। (पत्नी/स्त्री)

4. निम्नलिखित शब्द युग्मों में अंतर स्पष्ट करें–

क. पत्नी = स्त्री

______________ ______________

ख. मुनि = ऋषि

______________ ______________

ग.	नमस्कार	=	प्रणाम	
	____________		____________	
घ.	अपराध	=	पाप	
	____________		____________	
ङ.	कार्य	=	कर्तव्य	
	____________		____________	

5. स्तंभ 'अ' का मिलान स्तंभ 'ब' से करें-

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
क. पत्नी	(अ) कोई भी औरत
ख. स्त्री	(ब) नियम विरुद्ध कार्य
ग. पाप	(स) अपनी विवाहित स्त्री
घ. अपराध	(द) अनैतिक कार्य
ङ. अधिक	(य) आवश्यकता से अधिक

समरूपी (श्रुतिसम) भिन्नार्थक शब्द

पाठ योजनाः ९

आज की अवधारणा

छात्रों को समरूपी भिन्नार्थक का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके विभिन्न नामों से अवगत कराना तथा उदाहरण देते हुए इन शब्दों के मध्य का अर्थ स्पष्टीकरण करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को यह जानकारी है कि कुछ शब्द सुनने व पढ़ने में लगभग समान प्रतीत होते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- समरूपी भिन्नार्थक शब्दों के अन्य नामों को जानने में,
- इन शब्दों के अंतर्गत कौन-कौन से शब्द शामिल हैं, इसे समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- समरूपी भिन्नार्थक शब्द को परिभाषित कर सकेंगे।
- इन शब्दों के मध्य का अंतर जान सकेंगे।
- वाक्य-प्रयोग द्वारा इन शब्दों के अर्थों को स्पष्ट कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर समरूपी भिन्नार्थक शब्दों को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करके भाषा प्रयोग के दौरान इनका उचित-रूप से वाक्यों में प्रयोग करने की दिशा में उन्हें अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक श्यामपट्ट पर छात्रों को एक वर्ग-पहेली बनाकर दें तथा कुछ शब्द लिखकर उन्हें पहेली के भीतर से शब्द के अर्थ ढूँढकर लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर समरूपी भिन्नार्थक शब्दों की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित पुस्तकें।
- कक्षा में समरूपी भिन्नार्थक शब्दों के अर्थों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'समरूपी भिन्नार्थक' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को समरूपी भिन्नार्थक शब्दों तथा उनके अर्थों को जानने के लिए जिज्ञासु बनाना।	• समरूपी भिन्नार्थक शब्द चार शब्दों से मिलकर बने होते हैं– सम + रूप + भिन्न + अर्थ, अर्थात् 'समान लगने वाला परंतु भिन्न अर्थ।' • जो शब्द सुनने में एक जैसे लगते हैं पर उनके अर्थ भिन्न होते हैं, वे शब्द समरूपी भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। • समरूपी भिन्नार्थक शब्दों को समध्वनि, समश्रुत, समोच्चरित तथा श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द भी कहते हैं। • इन शब्दों की वर्तनी एवं ध्वनि में भिन्नता होती है, अतः अध्यापक शुद्ध उच्चारण करते हुए इन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करें। साथ ही वाक्य प्रयोग करके भी अर्थ से परिचित कराएँ। • छात्रों को भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्र दिखाकर भी अध्यापक इन शब्दों के मध्य का अंतर स्पष्ट कर सकते हैं। उदाहरणार्थ– 'इस्त्री' व 'स्त्री' का चित्र दिखाना, ताकि छात्र स्वयं ही इनका अर्थ समझ सकें। साथ ही दृश्य साधन अधिक स्थायी प्रभाव छोड़ते श्रव्य साधन की अपेक्षा हैं।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. समरूपी भिन्नार्थक शब्द किन्हें कहते हैं?

....

ख. 'अचार' और 'आचार' शब्दों के अर्थ बताइए।

....

ग. ‘चिर’ और ‘चीर’ शब्दों के अर्थ बताइए।

....

2. अर्थ के अनुसार दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

क.	जरा	–	....
	ज़रा	–	....
ख.	बात	–	....
	वात	–	....
ग.	अंतर	–	....
	अंदर	–	....
घ.	लक्ष	–	....
	लक्ष्य	–	....

3. दिए गए समरूपी भिन्नार्थक शब्दों को उनके उचित अर्थ से मिलाइए–

क.

अंतर •	• भीतर
अंदर •	• भेद

ख.

फ़न •	• गुण
फन •	• साँप का फ़न

ग.

दिन •	• गरीब
दीन •	• दिवस

घ.

मूल •	• कीमत
मूल्य •	• जड़

ङ.

अनल •	• हवा
अनिल •	• आग

च.

कलि •	• कलियुग
कली •	• फूल का अधखिला रूप

छ.

परिमाण •	• फल
परिणाम •	• मात्रा

ज.

आचार •	• खाने की वस्तु
अचार •	• आचरण

4. <u>रेखांकित</u> समरूपी भिन्नार्थक शब्दों का सही प्रयोग कर वाक्यों को दोबारा लिखिए–

1. प्रभु दिन-दुखियों की रक्षा करता है।

....

2. सर्प का फन जहरीला होता है।

....

3. इस कली युग में कौन धर्म को पूछता है?

....

4. हमें अच्छे क्रम करने चाहिए।

....

5. राजा राम के कूल में लव-कुश का जन्म हुआ।।

....

5. निम्नलिखित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

वक्ष वृक्ष धेनु नग नाग

क. राहगीर .... के नीचे विश्राम कर रहा था।

ख. गोली .... स्थल पर लगी।

ग. उस बिल में .... रहता है।

घ. हिमालय को भी .... कहते हैं।

ङ. भगवान कृष्ण के पास .... थी।

6. दिए गए शब्दों के अर्थ वर्ग में से ढूँढकर लिखें-

भें	ल	त्र	ता	ट	म	उ
ट	अ	छ	मृ	न	यु	वा
र	च	नौ	ठ	क्ष	त	ह
ख	ब	का	ट	त्र	घ	ल
आ	ल	यु	व	ती	र	गा
कां	वा	ण	ध	प	ढ़	ता
क्षा	न	व	टे	सुं	द	र

शब्द	अर्थ
बलि	
ग्रह	
तरणी	
अभिराम	

शब्द	अर्थ
बली	
गृह	
तरुणी	
अविराम	

विलोम शब्द　　पाठ योजनाः 10

आज की अवधारणा

छात्रों को विलोम शब्द का अर्थ बताते हुए पाठ तथा पाठ से इतर विलोम अथवा विपरीत शब्दों के उदाहरण देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को इस बात की जानकारी है कि सार्थक शब्दों के अंतर्गत ही विलोम शब्दों को रखा गया है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- विलोम शब्द का अर्थ समझने में,
- दिए गए शब्दों के अर्थ समझकर उनके विलोम शब्द बनाने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- भाषा प्रयोग के दौरान उचित स्थान पर इन शब्दों का प्रयोग कर सकेंगे।
- विलोम शब्द को उदाहरण सहित परिभाषित कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर विलोम शब्दों के प्रति उत्सुकता जागृत करते हुए इन शब्दों के उचित विलोम शब्दों को बनाने की दिशा में उन्हें अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापिका विलोम शब्दों की सूची बना लें। प्रत्येक छात्र एक कार्ड पर एक शब्द लिखें और दूसरे कार्ड पर उसका विलोम शब्द। पूरी कक्षा के बच्चों से कार्ड लेकर उन्हें मिला दें और एक डिब्बे में रख दें। अब हर बच्चा आकर दो-दो कार्ड उठाएगा। एक-एक बच्चा अपने एक कार्ड का शब्द पढ़ेगा, जिस बच्चे के पास उसके विलोम शब्द का कार्ड होगा, वह साथ उठाकर 'हाँ' कहेगा। फिर दोनों कार्डों को बुलेटिन बोर्ड पर लगा दें। इस तरह खेल-खेल में छात्र इन शब्दों को समझ पाएँगे।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार से संबंधित पुस्तकें।
- विलोम शब्दों से संबंधित चार्ट पेपर।

- यूट्यूब पर विलोम शब्दों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'विलोम शब्द' के साथ की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों के भीतर शब्दों का अर्थ समझने तथा उनके उपयुक्त विलोम शब्द बताने हेतु जिज्ञासा उत्पन्न करना।	• 'विलोम' का अर्थ है– उलटा या विरोधी अर्थ देने वाला। अतः किसी शब्द काविपरीत या उलटा अर्थ देने वाले शब्द 'विलोम' शब्द कहलाते हैं उदाहरणार्थ– आकर्षण विकर्षण। • विलोम शब्दों का युग्म परस्पर विरोधी होता है। • विलोम अर्थात् विपरीतार्थक शब्दों में यह ध्यान रखा जाता है कि यदि कोई शब्द संज्ञा पद का है तो उसका विलोम भी संज्ञा पद के आधार पर ही होना चाहिए। इसी आधार पर विशेषण का विलोम विशेषण पद, क्रिया का विलोम क्रिया पद, क्रियाविशेषण का विलोम क्रियाविशेषण पद ही होगा। • विपरीतार्थक या विपरीत अर्थ देने वाले शब्द निम्नलिखित विधियों से बनते हैं– (i) लिंग परिवर्तन के द्वारा; जैसे– भाई-बहन या गाय-बैल आदि। (ii) भिन्न जातीय शब्दों के द्वारा; जैसे– अधम-उत्तम। (iii) उपसर्ग की सहायता से जैसे– आस्था-अनास्था अथवा अल्पायु-दीर्घायु आदि। (iv) उपसर्ग के समान प्रयुक्त होने वाले शब्दों के परिवर्तन से जैसे– उदयाचल-अस्ताचल आदि। • उन्हें स्पष्ट करें कि दो विपरीत स्थितियाँ ही जीवन बताती हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना कर पाना असंभव है। • छात्रों को बताएँ कि वाक्य-संरचना में विलोम शब्दों का अत्यधिक महत्व होता है क्योंकि इनसे अर्थ की गुणवत्ता बढ़ जाती है। • पाठ से इन शब्दों का वाचन करवाते हुए जहाँ कहीं आवश्यक लगे अर्थ स्पष्ट करें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. विलोम शब्द किन्हें कहते हैं?

....

....

ख. तत्सम शब्दों के विलोम शब्द आप किन शब्दों में बताएँगे, उदाहरण सहित बताइए।

....

....

ग. 'पक्ष' शब्द का विलोम शब्द लिखिए।

....

....

2. सही विलोम शब्द में (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	आज्ञा	–	अवज्ञा	◯	व्यय	◯
ख.	अभिज्ञ	–	बाह्य	◯	अनभिज्ञ	◯
ग.	क्रय	–	विक्रय	◯	उदय	◯
घ.	कर्म	–	निष्कर्म	◯	शांत	◯
ङ.	कटु	–	पद्य	◯	मधुर	◯
च.	आलस्य	–	अवरोह	◯	स्फूर्ति	◯
छ.	नूतन	–	हानि	◯	पुरातन	◯
ज.	भद्र	–	अस्वस्थ	◯	अभद्र	◯
झ.	स्थूल	–	विदेश	◯	सूक्ष्म	◯

3. चित्र देखकर उचित शब्द लिखिए तथा उसका विलोम शब्द भी लिखिए–

....

....

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति रेखांकित शब्दों के उचित विलोम शब्द से करें–

क. व्याकरण में सार्थक शब्दों पर विचार किया जाता है, ... शब्दों पर नहीं।

ख. नूतन और .... विचारों का संघर्ष सदा से होता आया है।

ग. कर्म करो सफलता .... तो ईश्वर के हाथ में है।

घ. राम मेरा अग्रज है और श्याम ....।

ङ. व्यक्ति को आय के अनुसार ही .... करना चाहिए।

5. निम्नांकित शब्दों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनके विलोम शब्द भी साथ में प्रयुक्त हों–

उदाहरण - लघु जीवों को विशाल मछलियाँ निगल जाती हैं।

क. उजाला – ....

ख. निर्गुण – ....

ग. शिक्षित – ....

घ. स्वतंत्र – ....

ङ. अभिमानी – ....

च. तरल – ....

6. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

क.	मान –	______	ख.	बंधन –	______
ग.	प्रशंसा –	______	घ.	प्रेम –	______
ङ.	स्थूल –	______	च.	चतुर –	______
छ.	निद्रा –	______	ज.	मौखिक –	______
झ.	सजीव –	______	ण.	परिश्रमी –	______

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

पाठ योजनाः 11

आज की अवधारणा

छात्रों को अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी इस बात से परिचित हैं कि वाक्यांश वाक्य का अंश होते हैं जिन्हें संक्षिप्त रूप में भी लिखा जा सकता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का अर्थ स्पष्ट करने में,
- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग करने से भाषा को किस प्रकार प्रभावी बनाया जा सकता है, इस बात को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- वाक्यांश के लिए एक शब्द की उपयोगिता से अवगत कराना।
- अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करते हुए भाषा को प्रभावी बनाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के प्रति रुचि उत्पन्न करते हुए उन्हें अपनी भाषा आकर्षक एवं प्रभावी बनाने की दिशा में अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को एक वर्ग-पहेली बनाकर दें तथा उन्हें उस पहेली के भीतर से अनेक शब्दों के लिए प्रयुक्त किए जाने वाला एक शब्द ढूँढकर अलग करके लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अनेक शब्दों के लिए एक शब्द संबंधी जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

- वाक्यांशों के लिए एक शब्द के विभिन्न उदाहरणों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को भाषा प्रयोग के दौरान अनेक शब्दों के लिए एक शब्द की उपयोगिता एवं महत्व से परिचित कराना।	• छात्रों, कम-से-कम शब्दों में अपनी बात कहना भी एक कला है। यह भाषा-कौशलता के प्रतीक को दर्शाता है। • कम शब्दों का प्रयोग करने से भाषा में सजीवता आ जाती है। भाषा को प्रभावशाली तथा आकर्षक बनाने के लिए ही अनेक शब्दों की जगह एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। • एक शब्द भी कई बार अनेक शब्दों के अर्थ को समेटे रखता है। • उन्हें बताएँ कि वाक्यांशों के लिए एक शब्द का प्रयोग करने से भाषा में संक्षिप्तता आती है। • यह भी स्पष्ट करें कि कम-से-कम शब्दों में अपनी बात कह कर हम अपनी लेखन-कला को किस प्रकार उच्च स्तर का बना सकते हैं। • भाषा में यह सुविधा भी होनी चाहिए कि वक्ता अथवा लेखक कम-से-कम शब्दों में अर्थात् संक्षेप में बोलकर या लिखकर अपने विचार अभिव्यक्ति कर सके। • छात्रों को पाठ से उदाहरण समझाते हुए उनका वाचन करवाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित मोटे छपे शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखकर वाक्य दोबारा लिखिए–

क. यह संसार **नष्ट होने वाला** है।

....

ख. कृष **तेज़ बुद्धि वाला** बालक है।

....

ग. सरिता **कम खाती** है।

....

घ. सुरेंद्र मेरे **साथ काम करता** है।

....

2. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर वाक्यों की पूर्ति करें–

क. पश्चिमी देशों से संबंधित .... (पाश्चात्य/पश्चिमी)

ख. जो दिखाई न दे सके .... (परोक्ष/अदृश्य)

ग. जिसका कभी अंत न हो .... (अनंत/असीम)

घ. जिसका कोई संरक्षक न हो .... (लावारिस/अनाथ)

ङ. देखने योग्य .... (दर्शनीय/दृष्टव्य)

3. निम्नलिखित शब्दों के लिए उचित वाक्यांश लिखिए–

क. पाक्षिक – ....

ख. शाश्वत – ....

ग. हितैषी – ....

घ. मीनाक्षी – ....

4. अनेक शब्दों के लिए सही शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	पढ़ने वाला	–	पाठक	○	पठनी	○
ख.	जिसके पास धन न हो	–	धनी	○	निर्धन	○
ग.	जिसके आने की तिथि न हो	–	मासिक	○	अतिथि	○
घ.	जिसका कोई आकार न हो	–	कृतज्ञ	○	निराकार	○
ङ.	जो ईमान से काम करता हो	–	मेहनती	○	ईमानदार	○

5. नीचे 'क' तथा 'ख' कॉलम दिए गए हैं। अब आप सही मिलान कीजिए–

कॉलम 'क'	कॉलम 'ख'
क. सिर पर धारण करने योग्य	(अ) जिज्ञासु
ख. सप्ताह में एक बार होने वाला	(ब) अनुपम
ग. जो आगे की बात सोचता हो	(स) साप्ताहिक
घ. जानने की इच्छा रखने वाला	(द) भिज्ञ

ङ. जो जानता हो (य) अग्रसोची

छ. जिसकी उपमा न हो (र) शिरोधार्य

6. **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए–**

क. जिसका जन्म स्वयं हुआ हो – ____________

ख. इतिहास से संबंध रखने वाला – ____________

ग. जो ईश्वर में विश्वास न रखता हो – ____________

घ. जिसका कोई स्वामी(नाथ) न हो – ____________

ङ. जिसकी ग्रीवा सुंदर हो – ____________

च. जिसे साधा न जा सके – ____________

समूहवाची शब्द

पाठ योजनाः 12

आज की अवधारणा

छात्रों को समूहवाची शब्दों का ज्ञान कराते हुए इसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि हिंदी भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनसे हमें उनके समूह में होने का बोध होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- समूहवाची शब्दों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- अलग-अलग नामों को सुनकर उनके समूहवाची शब्द पहचानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को समूहवाची शब्दों की उपयोगिता व प्रयोग समझाना।
- विभिन्न नामों (वस्तुओं, व्यक्तियों, चीज़ों) के समूहवाची शब्दों को जानने के प्रति उत्सुकता उत्पन्न करना और उनकी जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में समूहवाची शब्दों के प्रति उत्सुकता उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों को अलग-अलग चीज़ों के चित्र दिखाकर उनके समूहवाची शब्दों के बारे में पूछें तथा जहाँ वे बताने में पूछें तथा जहाँ वे बताने में अटकें, उनकी मदद करें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में समूहवाची जानकारी संबंधी पुस्तकें।
- कक्षा में समूहवाची शब्दों की जानकारी देते चित्रात्मक चार्ट।
- यूट्यूब पर इनसे संबंधित जानकारी के वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'समूहवाची शब्द' की जानकारी से होगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को समूहवाची शब्दों के संबंध में बताना तथा उनको जानने के प्रति जिज्ञासु बनाना।	• छात्रों, हिंदी में अनेक प्रकार के समूहवाची शब्द हैं। जिनका प्रयोग प्रत्येक शब्द के साथ नहीं किया जा सकता। • छात्रों को आपसी बातचीत द्वारा पहले समूहवाची शब्दों के बारे में बताकर उन्हें स्वयं ऐसे समूहवाची शब्द बताने के लिए अग्रसित करें। • अध्यापक अलग-अलग समूहवाची शब्दों की परचियाँ बनाएँ तथा एक-एक छात्र को बुलाकर परची उठवाएँ तथा उस परची में लिखे समूहवाची शब्द को पढ़कर उससे संबंधित प्रयोग के बारे में पूछें। • अलग-अलग चीज़ों के चित्र दिखाकर भी अध्यापक, छात्रों को समूहवाची शब्दों को स्पष्ट कर सकती हैं। इस गतिविधि से छात्र समूहवाची शब्दों से भली-भाँति परिचित हो जाएँगे। • छात्रों को अपनी कार्य-पुस्तिका में दस समूहवाची शब्द उसके प्रयोग के साथ लिखकर लाने को कहें और कोई शब्द बोलकर समझाएँ जैसे– 'झुंड' शब्द पशुओं के लिए प्रयुक्त होता है। लेकिन हम इसका प्रयोग यात्रियों के लिए नहीं कर सकते। यात्रियों का 'समूह' होता है। इस तरह वे समूहवाची शब्द को अच्छे से समझ जाएँगे।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. **समूहवाची शब्द से आप क्या समझते हैं? ये शब्द व्याकरण में क्या भूमिका निभाते हैं?**

   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....

2. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

   क. श्रृंखला – ....
   ख. झुंड – ....
   ग. समूह – ....
   घ. संघ – ....
   ङ. भंडार – ....
   च. कक्षा – ....

3. **मिलान कीजिए–**

क. कुंज	अंगूरों का, चाबियों का
ख. गुच्छा	घुड़सवारों का
ग. दल	वृक्ष, लताओं का
घ. मंडल	विद्‌यार्थी की
ङ. श्रेणी	मनुष्यों की
च. भीड़	नक्षत्रों का

विविध

पाठ योजनाः 13

आज की अवधारणा

छात्रों को सामान्य वर्तनी की अशुद्धियों से परिचित कराते हुए हिंदी विषय तथा साहित्य जगत की अतिरिक्त जानकारी हेतु विभिन्न हिंदी वेबसाइट्स से अवगत कराना। साथ ही अतिरिक्त अध्ययन हेतु हिंदी की विभिन्न पुस्तकों से परिचित कराना ताकि वे उन्हें पढ़कर अपने साहित्य में वृद्धि कर सकें। उन्हें हिंदी कैलेंडर के नामों की जानकारी भी देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र वर्तनी का प्रयोग करना जानते हैं तथा महीनों के अंग्रेज़ी नामों से पहले से ही परिचित हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- सामान्य वर्तनी की अशुद्धियों से किस प्रकार बचा जा सकता है? यह जानने में,
- हिंदी विषय तथा साहित्य जगत की अतिरिक्त जानकारी हेतु इंटरनेट पर किन वेबसाइट्स से जानकारी एकत्रित की जा सकती है? यह पता करने में,
- हिंदी कैलेंडर के अनुसार महीनों के हिंदी नाम कौन–कौन से हैं? यह जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन–पाठन का उद्देश्य है–

- भाषा प्रयोग के दौरान शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना।
- हिंदी विषय तथा साहित्य जगत की अतिरिक्त जानकारी हेतु इंटरनेट पर विभिन्न प्रकार की वेबसाइट्स से जानकारी लेकर अपना ज्ञानवर्धन करना।
- हिंदी कैलेंडर के अनुसार महीनों के नाम जानना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर हिंदी भाषा तथा उसके साहित्य को जानने एवं समझने का भाव जागृत करते हुए इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

- शुद्ध वर्तनी का अभ्यास कराने के लिए अध्यापक उन्हें श्रुतलेख हेतु शब्द बोलें तथा छात्र उन्हें एक–एक करके अपनी कार्य–पुस्तिका में लिखें। सभी शब्दों को बोलने के पश्चात् अध्यापक उनके शुद्ध रूप को श्यामपट्ट पर लिखें तथा छात्र अपने द्वारा लिखे शब्दों की जाँच करें।

- अध्यापक छात्रों को किसी वेबसाइट्स को इंटरनेट पर सर्च करने को कहें तथा अगले दिन उनसे पूछें कि उन्हें उस साइट से क्या-क्या जानकारी प्राप्त हुई।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- शुद्ध वर्तनी से संबंधित शब्दों को दर्शाता चार्ट पेपर।
- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध हिंदी की साहित्यिक पुस्तकें।
- हिंदी कैलेंडर के नामों को दर्शाने वाले वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। कुल समय: पाँच मिनट	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: हिंदी साहित्य के प्रति रुझान उत्पन्न करना तथा हिंदी भाषा की योग्यता विकसित करना।	• छात्रों, वर्तनी का सीधा संबंध उच्चारण से होता है। हिंदी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। यदि उच्चारण अशुद्ध होगा तो वर्तनी की अशुद्ध होगी। प्राय: अपनी मातृभाषा या बोली के कारण तथा व्याकरण संबंधी ज्ञान की कमी के कारण उच्चारण में अशुद्धियाँ आ जाती हैं, जिसके कारण वर्तनी में भी अशुद्धियाँ आ जाती हैं, जिसके कारण वर्तनी में भी अशुद्धियाँ आ जाती हैं, जिसके कारण वर्तनी में भी अशुद्धियाँ आ जाती हैं, जिसके कारण वर्तनी में भी अशुद्धियाँ आ जाती हैं। • उन्हें पाठितांश से शुद्ध वर्तनी वाले शब्दों का शुद्ध उच्चारण करवाएँ। • हिंदी हमारी मातृभाषा है अत: हमें हिंदी भाषा की पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। • हिंदी विषय तथा इसके साहित्य के प्रति हमारी रुचि होनी चाहिए, अत: आवश्यक है कि हम विभिन्न स्रोतों से इसके साहित्य का ज्ञान प्राप्त करें। • इंटरनेट पर हिंदी विषय तथा साहित्य जगत की जानकारी हेतु कई वेबसाइट्स मौजूद हैं। इन वेबसाइट्स पर सर्फिंग करके आप हिंदी के विकास, साहित्य, लेखक/लेखिका, कवि/कवयित्री, हास्य-व्यंग्य तथा अन्य विविध प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

	• छात्रों को पाठ में दी गई कुछ वेबसाइट्स को सर्च करके उनसे प्राप्त जानकारियों को अपनी कार्य-पुस्तिका में लिखने को कहें। • हिंदी भाषा की पुस्तकें अत्यंत रोचक व ज्ञानवर्धक होती हैं। जब हम अन्य भाषाओं की पुस्तकें पढ़ते हैं, तब उस भाषा में हमारी रुचि बढ़ने लगती है तथा मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में कुशलता भी प्राप्त होती है। अतः हमें हिंदी साहित्य की पुस्तकें पढ़नी चाहिए, ताकि हिंदी भाषा के प्रति हमारी रुचि और रुझान बढ़ता जाए। • समाचार-पत्र समूहों द्वारा बाल-पत्रिकाएँ भी प्रकाशित की जाती हैं जैसे- नंदन, नन्हें सम्राट आदि। समाचार-पत्र वितरक इन्हें मासिक रूप में दे सकते हैं। इनका मूल्य भी कम होता है तथा विविध रोचक जानकारियों के साथ-साथ इनमें कहानियाँ, लेख, कविताएँ आदि भी होती हैं। • अंत में उन्हें बताएँ कि हिंदी कैलेंडर के अनुसार महीनों के नाम हिंदी में होते हैं, ये नाम अंग्रेज़ी कैलेंडर के नामों से बिल्कुल भिन्न होते हैं। • हिंदी कैलेंडर का पहला महीना चैत्र (अप्रैल) होता है। इसी से हमारे नए साल का आरंभ माना जाता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्यः अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. शब्द के शुद्ध रूप से आपका क्या अभिप्राय है?

....

....

....

2. www.hindibook.com वेबसाइट को देखिए और अपनी मनपसंद किताब चुनिए तथा उस पर कुछ वाक्य लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

2. मिलान कीजिए–

क.	स्वतंत्रता संग्राम की भारतीय वीरांगनाएँ	डॉ. बालशौरि रेड्डी
ख.	सरस महाभारत	आशा गुप्ता
ग.	सत्य की खोज	आचार्य चतुरसेन शास्त्री
घ.	हातिमताई के किस्से	विमला शर्मा
ङ.	महापुरुषों की झाँकियाँ	आर. के. नारायण
च.	मालगुडी की दुनिया	नरेश कुमार शर्मा

3. कोष्ठक में से सही लेखक चुनिए और उन पर (✓) का निशान लगाइए–

क.	मानसरोवर	– रवींद्रनाथ ठाकुर ◯	मुंशी प्रेमचंद ◯
ख.	मिठाईवाला	– आर. के. नारायण ◯	आशा गुप्ता ◯
ग.	पहेली गंगा	– मुंशी प्रेमचंद ◯	अजय शर्मा यात्री ◯
घ.	सरस महाभारत	– विमला शर्मा ◯	हरिकृष्ण तैलंग ◯
ङ.	अपना देश महान	– काका हाथरसी ◯	धनीराज नवनीत ◯
च.	भगत सिंह के आँसू	– कृष्ण गोयल विद्यार्थी ◯	मुंशी प्रेमचंद ◯

4. इंटरनेट की सहायता से मुशी प्रेमचंद की कोई भी कहानी पढ़िए और उस कहानी से मिलने वाली प्रेरणा को दिए गए स्थान पर लिखिए।

____

____

____

____

____

____

____

6. बताइए–

क. जून को और किस नाम से जाना जाता है? ______________

ख. मार्च को और किस नाम से जाना जाता है? ______________

ग. अप्रैल को और किस नाम से जानते हैं? ______________

घ. फसल कौन–से महीने में कटती है? ______________

7. इंटरनेट की सहायता से हिंदी कैलेंडर के अनुसार आने वाले त्योहारों की एक सूची बनाइए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

शब्द-निर्माणः उपसर्ग पाठ योजनाः 14

आज की अवधारणा

छात्रों को 'उपसर्ग' शब्द से परिचित कराते हुए इसके भेदों से अवगत कराना। साथ ही विभिन्न उपसर्गों के उदाहरणों को स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी इस बात को जानते हैं कि उपसर्ग शब्द नहीं होते अपितु शब्दांश होते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- उपसर्ग का अर्थ समझने में,
- उपसर्ग के विभिन्न भेदों को जानने में,
- इनसे विभिन्न शब्दों का निर्माण करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- उपसर्ग को परिभाषित कर सकेंगे।
- उपसर्गों के महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- उपसर्ग के विभिन्न भेदों से नवीन शब्दों का निर्माण कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में उपसर्ग के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके नवीन शब्द निर्माण कराने की दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कुछ उपसर्ग दें तथा उनसे वे नवीन शब्दों का निर्माण करते हुए यह भी बताएँ कि वह उपसर्ग किस भाषा का है।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपसर्ग की जानकारी देती पुस्तकें।
- यूट्यूब पर उपसर्ग एवं उसके भेदों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- विभिन्न उपसर्गों से बने शब्दों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'शब्द निर्माण: उपसर्ग' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को संज्ञा के संबंध में बताना। उनमें संज्ञा के भेदों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, शब्द भाषा की संपत्ति होते हैं। प्रत्येक भाषा में नए-नए शब्द बनने की प्रक्रिया चलती रहती है। हिंदी में शब्द-निर्माण तीन प्रकार से होता है– उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास द्वारा। आज हम केवल उपसर्ग के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। • जिन शब्दांशों को मूल शब्द के पहले लगाने से शब्दों का अर्थ बदलता है या उनमें विशिष्टता आती है, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं उदाहरणार्थ– 'हार' शब्द में 'आ' उपसर्ग लगाकर 'आहार' शब्द बनता है। वहीं इसमें 'उप' उपसर्ग लगाया जाए तो 'उपहार' शब्द का निर्माण होता है। इस प्रकार आप देखेंगे कि शब्द का अर्थ किस प्रकार परिवर्तित होता गया। • उपसर्ग भाषा के सार्थक लघुतम खंड होते हैं जो हमेशा मूल शब्दों के पहले जुड़ते हैं। • इनके बारे में यह भी बताएँ कि इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता। इनके प्रयोग से मूल शब्द के अर्थ में विशेषता उत्पन्न हो जाती है। • हिंदी भाषा में निम्नलिखित प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग होता है– संस्कृत के उपसर्ग, उपसर्ग की भाँति प्रयुक्त होने वाले अव्यय, हिंदी के उपसर्ग तथा उर्दू के उपसर्ग। • अध्यापक उपसर्ग के उपर्युक्त चारों भेदों के अधिक-से-अधिक उदाहरण देकर उन्हें अच्छी तरह समझाएँ। • तत्पश्चात् उन्हें विभिन्न उपसर्ग देते हुए स्वयं नवीन शब्द बनाने को प्रेरित करें। यदि उन्हें किसी प्रकार की शंका हो तो उसका निदान करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य: अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. दिए गए उपसर्ग को उचित मूल शब्दों के साथ जोड़कर नए शब्द बनाइए–

अनु सु ला कम दुर नि अभि बद

क.	....	+	जोर	=	....	ख.	....	+	ठल्ला	=	....
ग.	....	+	सूरत	=	....	घ.	....	+	वाद	=	....
ङ.	....	+	पुत्र	=	....	च.	....	+	पता	=	....
छ.	....	+	गुण	=	....	ज.	....	+	योग	=	....

2. निम्नलिखित उपसर्गों के प्रयोग से दो-दो शब्द बनाइए–

क.	अभि –	________	________	ख.	उप –	________	________
ग.	अनु –	________	________	घ.	अप –	________	________
ङ.	अ –	________	________	च.	खुश –	________	________
छ.	बिन –	________	________	ज.	अध –	________	________

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. उपसर्ग किसे कहते हैं?

....

ख. उपसर्ग के भेदों के नाम लिखिए।

....

ग. उपसर्ग किसमें परिवर्तन लाते हैं?

....

घ. हिंदी भाषा में उपसर्ग का प्रयोग कितने प्रकार से होता है?

....

4. निम्नलिखित शब्दों में से हिंदी, संस्कृत तथा उर्दू के उपसर्ग छाँटकर लिखिए–

अवशेष	निबंध	चौतरफ़	दुस्साहसी	खुशखबरी	सरमाया	परलोक
दुभाषिया	बाकायदा	बिलानागा	अधकचरा	कमसिन	दुश्चरित्र	औघट
स्वल्प	उऋण	लाइलाज	सुघड़	परिक्रमा	भरपूर	प्रवचन

<u>हिंदी के उपसर्ग</u>	<u>संस्कृत के उपसर्ग</u>	<u>उर्दू के उपसर्ग</u>
....	....	....
....	....	....

....

....

....

....

....

4. दिए गए शब्दों में कौन-सा उपसर्ग है? सही विकल्प पर (✓) चिह्न लगाइए–

क.	कुपात्र	–	कु ◯	पा ◯	पात्र ◯
ख.	खुशहाल	–	हाल ◯	खु ◯	खुश ◯
ग.	अधिकार	–	र ◯	कार ◯	अधि ◯
घ.	निर्जल	–	नर्ज ◯	निर् ◯	जल ◯

6. शब्दों में आए उपसर्ग को छाँटकर अलग लिखें–

क. गैरसरकारी – ______ ख. खुशबू – ______

ग. दुर्घटना – ______ घ. नादान – ______

ङ. निवास – ______ च. सुसंस्कृत – ______

छ. कमजोर – ______ ज. अपवाद – ______

7. नीचे दिए उपसर्गों से नवीन शब्द बनाइए–

क. अभि → ______ → ______ → ______

ख. उप → ______ → ______ → ______

ग. सु → ______ → ______ → ______

शब्द-निर्माण: प्रत्यय

पाठ योजना: 15

आज की अवधारणा

प्रत्यय का अर्थ बताते हुए इसके भेदों-कृत् प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय से अवगत कराना। साथ ही इन भेदों के प्रकारों को समझाते हुए इनके उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी इस बात को जानते हैं कि उपसर्ग शब्द नहीं होते अपितु शब्दांश होते हैं।

सीखने का प्रतिफल

- इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–
- 'प्रत्यय' का अर्थ बताने तथा इससे संबंधित बातों को ध्यान में रखने में,
- प्रत्यय के भेदों को जानने में,
- प्रत्यय के भेदों के भी विभिन्न प्रकारों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को कृत तथा तद्धित प्रत्यय में अंतर से परिचित कराना।
- भाषा में प्रत्ययों के महत्व से अवगत कराना।
- विभिन्न प्रत्ययों से नवीन शब्दों का निर्माण कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों को प्रत्यय के भेदों को समझने तथा भिन्न-भिन्न प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए उन्हें नवीन शब्दों के निर्माण की दिशा में अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को प्रत्यय (शब्दांश) दें तथा छात्र उनकी पहचान करते हुए बताएँ कि उसमें प्रत्यय का कौन-सा भेद है तथा उन शब्दांशों से बने दो-दो शब्द भी बताइए।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में प्रत्यय की जानकारी देती पुस्तकें।
- यूट्यूब पर प्रत्यय एवं उसके भेदों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

- प्रत्यय के भेदों एवं उनके अंतर्गत आने वाले विभिन्न प्रकार के प्रत्ययों तथा उनसे निर्मित शब्दों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्‌देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'शब्द निर्माण: प्रत्यय' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्‌देश्य: विभिन्न प्रकार के प्रत्ययों तथा उनसे नवीन शब्दों की रचना हेतु प्रेरित करना।	• छात्रों, जो शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर नवीन शब्द निर्मित करते हैं, उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं जैसे- समाज+इक = सामाजिक। • प्रत्यय के विषय में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए- (i) ये सदैव शब्दों के अंत में जुड़ते हैं। (ii) इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं हो सकता। (iii) इनके जुड़ने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न होती है। • उन्हें बताएँ कि प्रत्यय के दो भेद हैं- कृत् प्रत्यय तथा तद्‌धित प्रत्यय। • कृत् प्रत्यय के बारे में स्पष्ट करें कि क्रिया की धातुओं के अंत में लगने वाले प्रत्यय 'कृत् प्रत्यय' कहलाते हैं। • हिंदी में आने वाले कृत् प्रत्यय हैं- कर्तृवाच्य कृत् प्रत्यय, कर्मवाच्य कृत् प्रत्यय, करणवाचक कृत् प्रत्यय, भाववाचक कृत् प्रत्यय तथा क्रियावाचक कृत् प्रत्यय। सभी को उदाहरण देते हुए छात्रों के समक्ष स्पष्ट करें। • तत्पश्चात्, छात्रों को तद्‌धित प्रत्यय के बारे में बताएँ कि जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों के अंत में जुड़ कर नवीन शब्द रचना में सहायक होते हैं, उन्हें 'तद्‌धित प्रत्यय' कहते हैं जैसे- कुटिल+ता = कुटिलता। • अध्यापक तद्‌धित प्रत्यय के भेदों-कर्तृवाचक तद्‌धित प्रत्यय, भाववाचक तद्‌धित प्रत्यय, गुणवाचक तद्‌धित प्रत्यय, ऊनतावाचक तद्‌धित प्रत्यय तथा स्त्रीलिंगवाचक तद्तिध प्रत्यय को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

	• उन्हें इस बात से भी अवगत कराएँ कि कभी-कभी दो प्रत्ययों का एक साथ प्रयोग भी होता है जैसे– भारत+ईय+ता = भारतीयता। • अंततः छात्रों को पाठ से संस्कृत के कृत एवं तद्धित प्रत्ययों तथा अरबी-फ़ारसी के कुछ तद्धित प्रत्ययों के उदाहरणों से परिचित कराएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्यः अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. प्रत्यय किसे कहते हैं?

....

....

....

ख. प्रत्यय के कितने भेद होते हैं और वे कौन-कौन से होते हैं?

....

....

....

....

ग. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय और कर्मवाचक कृत् प्रत्यय में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

घ. तद्धित प्रत्यय किसे कहते हैं?

....

....

2. मूल शब्दों में उचित प्रत्यय जोड़कर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

क. हमें अपनी .... पर भी ध्यान देना चाहिए। (लिख)

ख. मुझे .... होने पर गर्व है। (भारत)

ग. रोहन मेरा .... भाई है। (मामा)

घ. नौकरानी कमरे में .... लगा रही है। (झाड़)

ङ. प्रत्येक व्यक्ति को से .... काम करना चाहिए। (ईमान)

3. दिए गए शब्दों में कौन-सा प्रत्यय है? सही विकल्प पर (✓) चिह्न लगाकर बताइए–

क.	कटौती –	औती ◯	अ ◯	टि ◯
ख.	थकावट –	वट ◯	आवट ◯	थका ◯
ग.	घटिया –	टिया ◯	इया ◯	या ◯
घ.	मरियल –	यल ◯	मरि ◯	इयल ◯
ङ.	कमाऊ –	माऊ ◯	ऊ ◯	म ◯

4. दिए गए प्रत्ययों से शब्द बनाइए–

क. ईय → ______________ → ______________ → ______________

ख. ईया → ______________ → ______________ → ______________

ग. आऊ → ______________ → ______________ → ______________

5. उपसर्ग, मूलशब्द तथा प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए–

		उपसर्ग		मूलशब्द		प्रत्यय
क.	अमानवीय –	....	+	....	+	....
ख.	असफलता –	....	+	....	+	....
ग.	बेईमानी –	....	+	....	+	....
घ.	सहपाठी –	....	+	....	+	....

6. निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर नए शब्द रूप बनाइए तथा उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

क. पल्लव

प्रत्यय .... नया शब्द ....

वाक्य ....

ख. जिम्मेदार

प्रत्यय .... नया शब्द ....

वाक्य ....

ग. स्थान

प्रत्यय .... नया शब्द ....

वाक्य ....

घ. अर्थ

प्रत्यय .... नया शब्द ....

वाक्य ....

शब्द-निर्माण: समास पाठ योजना: 16

आज की अवधारणा

छात्रों को समास, समस्तपद तथा समास-विग्रह की जानकारी देते हुए समास के चारों भेदों अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, द्वंद्व समास तथा बहुव्रीहि समास से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों ने पूर्व कक्षा में पढ़ा है कि शब्दों के मेल से समास का निर्माण होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- समास, समस्तपद तथा समास-विग्रह का अर्थ समझने में,
- समास के चारों भेदों को जानने में,
- कारकीय विभक्तियों के आधार पर तत्पुरुष समास के भेदों को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- समास, समस्तपद तथा समास-विग्रह को परिभाषित कर सकेंगे।
- समास के भेदों को परिभाषित करते हुए इनके उदाहरण दे सकेंगे।
- विभिन्न समासों के मध्य अंतर कर सकेंगे।
- कारकीय विभक्तियों के आधार पर तत्पुरुष समास के भेदों की पहचान कर सकेंगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर समास के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करके इसके विभिन्न भेदों को समझने की दिशा में उन्हें अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को श्यामपट्ट कुछ शब्द दें तथा उन्हें उन शब्दों का समास-विग्रह करने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर समास व उसके भेदों की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- विद्यालय के पुस्तकालय में समास की जानकारी देतीं पुस्तकें।
- समास के भेदों व उदाहरणों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्‌देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'समास' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्‌देश्य : छात्रों में समास व उसके भेदों को जानने संबंधी उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं। इस विधि से बने नए शब्द 'समस्तपद' कहलाते हैं। जब इन समस्तपदों को पुनः अलग किया जाता है तो वह समास-विग्रह कहलाता है। • समास के चार भेद हैं– अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्‌वंद्‌व तथा बहुव्रीहि समास। • अव्ययीभाव समास से परिचित कराते हुए बताएँ कि जिस समस्तपद में पहला पद अव्यय होता है और समस्तपद क्रियाविशेषण का कार्य करता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसके नियमों को स्पष्ट करते हुए अधिक-से-अधिक उदाहरण देकर समझाएँ। • अब तत्पुरुष समास के बारे में बताएँ कि इस पद में उत्तर पद की प्रधानता होती है तथा पूर्व पद गौण होता है। कारक विभक्तियों के आधार पर कारक विभाक्तियों के आधार पर तत्पुरुष समास के छह भेद हैं– कर्म तत्पुरुष, करण तत्पुरुष, संप्रदान तत्पुरुष, अपादान तत्पुरुष, संबंध तत्पुरुष तथा अधिकरण तत्पुरुष। उदाहरण देते हुए समास के सभी भेदों को समझाएँ। • छात्रों को बताएँ कि इसके अन्य भेद भी हैं जिनमें– कर्मधारय, द्‌विगु तथा नञ् तत्पुरुष समास शामिल हैं। कर्मधारय समास में समस्तपद के पूर्व तथा उत्तर पद के बीच विशेष्य-विशेषण अथवा उपमेय-उपमान का संबंध होता है। वहीं द्‌विगु समास में पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण होता है और समस्तपद मिलकर समूह का बोध करवाता है। नञ् तत्पुरुष के समस्तपद में पूर्व पद नकारात्मक होता है।

	• द्वंद्व समास से अवगत कराते हुए उन्हें स्पष्ट करें कि इसमें समस्तपद के पूर्व तथा उत्तर दोनों पदों के मध्य स्थित 'और, तथा, या' आदि लुप्त हो जाते हैं। छात्रों को अधिक-से-अधिक उदाहरण देकर समझाएँ। • तत्पश्चात्, उन्हें बहुव्रीहि समास से परिचित कराएँ कि जब समस्तपद के पूर्व और उत्तर दोनों ही पद प्रधान हों और दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद को प्रकट करें, तब बहुव्रीहि समास होता है। इसके उदाहरण देकर छात्रों को समझाएँ। • अंततः बहुव्रीहि तथा कर्मधारय समास के मध्य का अंतर स्पष्ट करते हुए बताएँ कि इन दोनों के बहुत से उदाहरण देखने में समान होते हैं। ऐसी स्थिति में इन्हें समास के किस भेद के अंतर्गत रखा जाए, यह तय करने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए। यदि विग्रह करने पर समस्तपद के पूर्व पद और उत्तर पद में विशेष्य-विशेषण या उपमेय-उपमान का संबंध है तो वहाँ कर्मधारय समास है यदि दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की तरफ़ संकेत करते हैं, तो वहाँ बहुव्रीहि समास होता है जैसे–कमलनयन–कमल जैसे नयन (कर्मधारय समास) कमल जैसे नयन हैं जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण (बहुव्रीहि समास)
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्यः अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. समास से क्या अभिप्राय है?

....

....

ख. कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

ग. समास के सभी भेद लिखकर उनके एक-एक उदाहरण दें।

....

....

....

घ. समस्त पद किसे कहते हैं, उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

....

....

ङ. समास विग्रह क्या है? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित समस्तपदों का विग्रह करके दोबारा वाक्य लिखिए–

क. पिताजी बाजार से दीवारघड़ी लाए हैं।

....

ख. हमें माता-पिता का आदर करना चाहिए।

....

ग. मेरे पास विद्याधन है।

....

घ. दिन में मैंने भरपेट खाना खा लिया था।

....

3. निम्नलिखित समस्तपदों में समास का भेद लिखिए–

क. हंसवाहिनी – ____________ ख. त्रिकोण – ____________

ग. श्वेतांबर – ____________ घ. लंबोदर – ____________

ङ. जन्मांध – ____________ च. देशभक्त – ____________

छ. प्रतिफल – ____________ ज. आत्मविश्वास – ____________

4. निम्नलिखित समास के दो-दो उदाहरण दें–

क. द्वंद्व – ____________ ____________

ख. द्विगु – ____________ ____________

ग. बहुव्रीहि – ____________ ____________

घ. कर्मधारय – ____________ ____________

5. **निम्नलिखित समस्तपदों का समास के अनुसार विग्रह कीजिए–**

क. दशानन
- द्विगु ....
- बहुव्रीहि ....

ख. नीलकंठ
- कर्मधारय ....
- बहुव्रीहि ....

ग. त्रिलोचन
- द्विगु ....
- बहुव्रीहि ....

घ. त्रिवेणी
- द्विगु ....
- बहुव्रीहि ....

संज्ञा

पाठ योजनाः 17

आज की अवधारणा

छात्रों को संज्ञा व उसके भेदों के बारे में बताना तथा उदाहरण सहित उन्हें परिभाषित करना। जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्ययों से भाववाचक संज्ञाओं की रचना समझना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि संज्ञा विकारी शब्द के अंतर्गत आता है। इसमें लिंग, वचन, कारक आदि के कारण परिर्वतन होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- संज्ञा व उसके भेदों के बारे में जानने में,
- संज्ञा के सभी भेदों में अंतर करके इन संज्ञा शब्दों की पहचान करने में,
- भाववाचक संज्ञाएँ कितने प्रकार के शब्दों से बनती हैं तथा वे कौन–से हैं इसे जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, द्रव्यवाचक व समुदायवाचक संज्ञा की अलग–अलग उपयोगिता समझना।
- शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर संज्ञा शब्दों की पहचान करना सिखाना।
- विभिन्न प्रकार के शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना करना सिखाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में संज्ञा शब्दों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके प्रत्येक भेद को स्पष्ट करने के लिए प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

छात्रों से संज्ञा विषय पर संवाद करते हुए पाठ्य–पुस्तक से कोई अध्याय दें तथा उसमें से पाँच व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक व द्रव्यवाचक तथा समुदायवाचक संज्ञा शब्दों को ढूँढकर भेद के अनुसार लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध संज्ञा संबंधी पुस्तकें।

- कक्षा में भाववाचक संज्ञाओं की रचना की जानकारी देते चार्ट पेपर।
- यूट्यूब पर संज्ञा के भेदों से संबंधित जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'संज्ञा' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को संज्ञा के बारे में बताना तथा भेदों व भाववाचक संज्ञा की रचना संबधी उत्सुक्ता जागृत करना।	• छात्रों, आप संज्ञा के बारे में पिछली कक्षाओं में पढ़ते आ रहे हैं कि किसी भी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव या दशा के नाम को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा का अर्थ 'नाम' या 'पहचान' है। • उन्हें बताएँ संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद हैं– व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा। इसके दो अन्य भेद भी हैं– द्रव्यवाचक संज्ञा तथा समुदायवाचक संज्ञा। • अध्यापक छात्रों को एक–एक भेद उदाहरण सहित परिभाषित करके समझाएँ तत्पश्चात् उनसे संबंधित प्रश्न पूछें। जिससे यह ज्ञात हो सके कि उन्हें कितना समझ में आया। • उन्हें बता दें कि भाववाचक संज्ञाएँ, सामान्यतः महसूस की जाती हैं और अगणनीय होती हैं। छात्रों से बातों–बातों में ऐसी वस्तुओं के बारे में पूछें, जिन्हें नापा–तोला जा सकता है तथा बताएँ कि द्रव्य की गणना नहीं की जा सकती। • उन्हें उदाहरण द्वारा व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा बनना तथा जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा बनना समझाएँ और बताएँ कि भाववाचक संज्ञाएँ बहुवचन रूप में आने पर जातिवाचक संज्ञाएँ हो जाती हैं। अंततः उन्हें भाववाचक संज्ञाओं की रचना करने के लिए इस बात की जानकारी दें कि भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार के शब्दों से बनती हैं। • श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखकर छात्रों से उनके भेद के बारे में पूछें तथा अपनी कार्य–पुस्तिका में उतारकर भेद के अनुसार लिखकर लाने को कहें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

क. संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

....

....

ख. संज्ञा के कितने भेद हैं? सभी के दो-दो उदाहरण दें।

....

....

ग. समुदायवाचक तथा द्रव्यवाचक संज्ञा किसे कहते हैं?

....

....

घ. मेरे तोते का नाम मिट्ठू है। इसमें 'तोता' और 'मिट्ठू' संज्ञा के कौन-से भेद हैं?

....

....

2. दिए गए शब्दों में संज्ञा के सही भेद पर में (✓) का चिह्न लगाइए-

क. मुंबई - व्यक्तिवाचक ◯ जातिवाचक ◯ भाववाचक ◯

ख. मित्रता - व्यक्तिवाचक ◯ जातिवाचक ◯ भाववाचक ◯

ग. स्कूल - व्यक्तिवाचक ◯ जातिवाचक ◯ भाववाचक ◯

घ. आगरा - व्यक्तिवाचक ◯ जातिवाचक ◯ भाववाचक ◯

व्यक्तिवाचक संज्ञा - जो शब्द किसी विशेष व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि का बोध कराते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

3. नीचे दिए गए चित्र को देखिए और शब्दों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

चक दे इंडिया हॉकी पंजाब हरियाणा झारखंड कबीर खान शाहरुख खान

आज मैंने टी.वी. पर .... फिल्म देखी। इस फिल्म में .... , ..., ... आदि प्रांतों की सर्वश्रेष्ठ .... महिला

खिलाड़ियों को चुन-चुन कर लाया गया था। इन खिलाड़ियों के प्रशिक्षक ...., की भूमिका .... ने निभाई। पॉपकॉर्न खाते-खाते मैंने इस फिल्म को बड़े ही चाव से देखा।

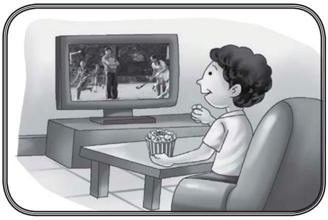

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों को भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित करके खाली जगह भरिए-

क. रमा ने खाना खाकर अपनी मिटाई। (भूखा)

ख. बच्चे की ने थकान दूर कर दी। (मुस्कराना)

ग. चुटकुला सुनकर मुझे आ गई। (हँस)

घ. नदी का बहुत तेज़ था। (बहना)

ङ. कक्षा में रमा और राधा की गहरी है। (मित्र)

5. निम्नलिखित वाक्यों में आए संज्ञा शब्द को छाँटकर उसका भेद भी लिखिए-

	संज्ञा	भेद
क. इस गन्ने में मिठास है।	....	....
ख. बच्चे खेल रहे हैं।	....	....
ग. राम बहुत नेक लड़का है।	....	....
घ. नीरज पटना जल्द ही पहुँच जाएगा।	....	....
ङ. चाबी का गुच्छा मेज़ पर रख दो।	....	....

6. निम्न शब्दों को उनके भेदों के अनुसार लिखिए-

भगत सिंह	कक्षा	माधुर्य	पहाड़	स्वास्थ्य	न्यूयॉर्क	पुस्तक
दूरी	बालक	निकटता	यौवन	पंडित	गंगा	राजेंद्र

क. व्यक्तिवाचक संज्ञा - ....

ख. जातिवाचक संज्ञा - ....

ग. भाववाचक संज्ञा - ....

लिंग

पाठ योजना: 18

आज की अवधारणा

छात्रों को लिंग के बारे में बताना तथा उसके उदाहरणों से परिचित कराना। पुल्लिंग व स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान के बारे में बताना तथा लिंग परिवर्तन समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को पता है कि संज्ञा के जिस रूप से हमें उसके स्त्री या पुरुष जाति के होने का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- लिंग शब्द के बारे में सोचने और विचार करने में,
- लिंग के भेदों के बारे में जानने में,
- लिंग के भेदों की पहचान करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि भाषा में लिंग शब्द की कितनी उपयोगिता है।
- पुल्लिंग व स्त्रीलिंग शब्दों की अलग-अलग उपयोगिताओं को समझाना।
- प्राणीवाचक व अप्राणीवाचक संज्ञाओं के लिंग निर्णय के बारे में बताना।
- पुल्लिंग व स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान बताकर लिंग परिवर्तन समझाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में लिंग विषय के प्रति कौहल उत्पन्न करके शब्दों के लिंग पहचानने के लिए प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक कक्षा के दो वर्गों में विभाजित करके छात्रों को अलग-अलग चित्र दिखाकर उसके लिंग के बारे में पूछें। जो वर्ग उत्तर न दे पाए, तो दूसरे वर्ग को मौका दें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध लिंग संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर लिंग परिवर्तन संबंधी वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में पुल्लिंग व स्त्रीलिंग की पहचान संबंधी जानकारी लिखे चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'लिंग' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को लिंग विषय के संबंध में बताना तथा उनकी पहचान व परिवर्तन जानने के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, लिंग की परिभाषा से आप परिचित हैं। इसके दो भेद हैं– पुल्लिंग व स्त्रीलिंग। पुरूष जाति का बोध कराने वाले संज्ञा शब्दों को पुल्लिंग कहते हैं तथा स्त्री जाति का बोध कराने वाले संज्ञा शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं। • उन्हें बताएँ कि संज्ञा शब्द प्राणीवाचक आरै अप्राणीवाचक दो प्रकार के होते हैं। प्राणीावाचक शब्दों में लिंग भेद आसान है क्योंकि हम उसके नर रुप को पुल्लिंग और मादा रूप को स्त्रीलिंग कह सकते हैं, किंतु अप्राणीवाचक शब्दों में लिंग–निर्णय के लिए उनके साथ लगे विशेषण और क्रिया पदों पर ध्यान देना आवश्यक है। अध्यापक इन्हें उदाहरण सहित समझाएँ। • अध्यापक, छात्रों को पुल्लिंग व स्त्रीलिंग की पहचान के नियमों के बारे में भी विस्तारपूर्वक समझाएँ तथा उन्हें अलग–अलग शब्द देकर उनके लिंग की पहचान करके पुल्लिंग या स्त्रीलिंग बताने को कहें। • ध्यान रखें कि कुछ उभलिंगी शब्द भी होते हैं, जिनका प्रयोग दोनों लिंगों में बिना रूप बदले रहता है। जैसे– प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, डॉक्टर, वकील, राजदूत आदि। • अंततः उन्हें लिंग परिवर्तन समझाएँ और बताएँ की पुल्लिंग शब्दों के साथ प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग शब्द बनाए जाते हैं।।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. लिंग किसे कहते हैं?

....

ख. स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

2. निम्नलिखित मोटे शब्दों के लिंग दिए गए स्थान पर लिखिए–

क. नल खुला रह गया और सारा पानी बह गया।

ख. मंगल ग्रह पर जीवन संभव नहीं है।

ग. एक वृद्धा अकेले सड़क पार कर रही थीं।

घ. रमेश ने अपने मित्र के साथ बेईमानी की है।

ङ. दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या के दिन मनाई जाती है।

3. नीचे दिए गए चित्रों को देखिए और चित्र के नीचे लिखे वाक्यों में उचित स्त्रीलिंग व पुल्लिंग शब्द को रेखांकित कीजिए–

क.

माँ बाज़ार से सामान ला रही हैं।

ख.

पिताजी फ़ोन पर बात कर रहे हैं।

ग.

लड़की खेल रही है।

घ.

लड़का पढ़ रहा है।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से लिंग संबंधी अशुद्धियाँ छाँटकर इन्हें पुनः लिखिए–

क. बचपन कभी लौटकर नहीं आती।

ख. आज मेरे भाई का सगाई है।

ग. मेरी मित्र मूर्ख है।

घ. चिड़ी को शिकारी ने पकड़ लिया और चिड़ा उड़ गई।

ङ. अभिनेत्री को नायक कहते हैं।

5. घड़े में कुछ शब्द हैं। उन शब्दों को सही शीर्षक के नीचे लिखिए–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

6. रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

क. बालकों ने क्रिकेट खेला और .... ने लूडो।

ख. अध्यापिकाओं ने भूगोल पढ़ाया और .... ने इतिहास।

ग. धोबी .... के साथ कपड़े धोता है।

घ. लोग मैदान में अभिनेता और .... को देखने पहुँचे।

7. उचित विकल्प में सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	देशों के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐
ख.	सागरों के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐
ग.	लिपियों के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐
घ.	नदियों के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐
ङ.	भाषाओं के नाम	–	पुल्लिंग	☐	स्त्रीलिंग	☐

वचन पाठ योजना: 19

आज की अवधारणा

छात्रों को वचन के बारे में बताना तथा उसके भेदों से परिचित कराना। वचन संबंधी महत्वपूर्ण नियम समझाना तथा वचन परिवर्तन के बारे में बताना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि व्यक्ति या वस्तु के एक अथवा अनेक होने का बोध करवाने वाले शब्द वचन कहलाते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- वचन के भेदों के बारे में जानने में,
- सदैव एकवचन व बहुवचन में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के बारे में
- एकवचन से बहुवनचन बनाने के नियमों को समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन–पाठन का उद्देश्य है–

- एकवचन व बहुवचन में अंतर समझाना।
- भाषा में वचन विषय की उपयोगिता व महत्ता बताना।
- एकवचन के स्थान पर बहुवचन व बहुवचन के स्थान पर एकवचन का प्रयोग बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में वचन विषय के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके उनके वचन परिवर्तन नियम जानने की दिशा में जिज्ञासा उत्पन्न करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक श्यामपट्ट पर एक वर्ग–पहेली बनाएँ तथा छात्रों को उनमें से सार्थक शब्दों का चयन करके उसका वचन–परिवर्तन करके कार्य–पुस्तिका में लिखकर लाने को कहें।

पाठ–विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध वचन संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर वचन परिवर्तन संबंधी जानकारी वाले वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में वचन के भेदों व महत्वपूर्ण नियम लिखा हुआ चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्‌देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि उन्हें आज नए अध्याय 'विराम-चिह्न' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्‌देश्यः छात्रों को विशेषण के संबंध में बताना तथा उसके भेदों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, शब्द के जिस रूप से किसी भी व्यक्ति, पदार्थ अथवा वस्तु के एक या एक से अधिक होने का ज्ञान मिलता है, उसे वचन कहते हैं। • वचन के दो भेद होते हैं– एकवचन व बहुवचन। किसी भी व्यक्ति, वस्तु अथवा पदार्थ के संख्या में एक होने का बोध कराने वाले शब्द एकवचन व संख्या में एक से अधिक का बोध कराने वाले शब्द बहुवचन कहलाते हैं। • छात्रों को उदाहरण सहित एकवचन व बहुवचन स्पष्ट करने के बाद वचन संबंधी महत्वपूर्ण नियमों से अवगत कराएँ। • उनसे पूछें कि अपने से बड़ों से कुछ कहने के लिए आप कौन-से वचन का प्रयोग करते हैं। फिर बताएँ कि किसी के प्रति आदर प्रकट करते समय एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता हैं तथा कभी-कभी अपना बड़प्पन दिखाने या अभिमानी रूप दर्शाने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। • उन्हें बताएँ कि कभी-कभी जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन के रूप में आती हैं, परंतु बोध बहुवचन का करवाती हैं जैसे- संतरा, रसगुल्ला। • छात्रों को सदैव एकवचन व सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के बारे में बताकर उनसे संबंधित छोटे-छोटे प्रश्न पूछें तथा फिर उन्हें वचन परिवर्तन के नियम विस्तारपूर्वक समझाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्‌देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. वचन के कितने भेद हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

....

....

ख. एकवचन और बहुवचन में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों को विशेषण की उचित अवस्था से मिलाइए–

क. आकाश में **पक्षीवृंद** उड़ रहे हैं।

....

ख. दीपावली की **छुट्टी** दस दिन की है।

....

ग. **बिल्ली** को देखते ही **चुहिया** भाग गई।

....

घ. **नदी** बह रही है।

....

ङ. दादी **कहानी** सुना रही हैं।

....

3. कोष्ठक में से उचित शब्द छाँटकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

क. घर में बिखरी पड़ी हैं। (चीज़/चीज़ें)

ख. मेला देखने गए। (लड़का/लड़के)

ग. मेज़ पर रखी हैं। (पुस्तक/पुस्तकें)

घ. सबसे अच्छा उपाय है को अपनाओ। (सद्‌गुण/सद्‌गुणों)

ङ. मुझे देखते ही उड़ गया। (तोता/तोते)

4. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए–

क. किताब – ____________ ख. तसवीर – ____________

ग. नीति – ____________ घ. गति – ____________

ङ. जाति – ____________ च. शक्ति – ____________

छ. कुटिया – ____________ ज. डिबिया – ____________

झ. रुपया – ________ ञ. गुरु – ________

5. **निम्नलिखित शब्दों में से एकवचन और बहुवचन शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए-**

खगवृंद	लुटिया	भाला	सड़कें	दीवार	बिटियाँ
कवि	प्रजा	अध्यापकगण	हम	बच्चे	पुड़ियाँ

क. एकवचन – ....

ख. बहुवचन – ....

6. **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर वचन तथा वचन की पहचान का आधार लिखिए-**

वाक्य	वचन	पहचान का आधार
क. आप कब आए?	....	....
ख. हाथी घूम रहे हैं।	....	....
ग. गुरुजन सम्मान के पात्र हैं।	....	....
घ. लड़कियाँ नांच रही हैं।	....	....
ङ. मुख्य अध्यापक आ रहे हैं।	....	....

7. **निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि इनका वचन स्पष्ट हो जाए-**

क. जनता – ....

ख. हाथी – ....

ग. चाय – ....

घ. दर्शन – ....

ङ. क्रोध – ....

कारक

पाठ योजना: 20

आज की अवधारणा

छात्रों को कारक के बारे में बताना तथा कारक के सभी भेदों को उदाहरण सहित परिभाषित करते हुए समझाना। सभी भेदों में अंतर स्पष्ट करना तथा कारक-चिह्नों की पहचान करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि कारक का अर्थ क्रिया करने वाला होता है। कारक संज्ञा अथवा सर्वनामों को क्रिया के साथ जोड़ते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- कारक व उसके भेदों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर उनमें से कारक-चिह्न पहचानने में,
- विभक्ति या परसर्ग किसे कहते हैं, यह जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को कारक-चिह्नों की उपयोगिता समझाना।
- सभी कारकों को उदाहरण सहित परिचित कराना तथा उनका अंतर स्पष्ट करना।
- सभी विभक्ति या परसर्ग से अवगत कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में कारक विषय के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक सभी कारक-चिह्नों की परचियाँ बनाकर एक-एक करके छात्रों से उठवाएँ तथा फिर उन्हें उस विभक्ति का प्रयोग करते हुए वाक्य बोलने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध कारक संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर कारक-चिह्न के प्रयोग संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में कारक के भेद अनुसार विभक्ति चिह्नों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'कारक' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्‌देश्य: छात्रों को कारक के संबंध में बताना तथा भेदों के प्रति उत्सुकत जागृत करना।	• छात्रों, संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया तथा दूसरे शब्दों के साथ निश्चित होता है, उसे कारक कहते हैं। • कारक के आठ भेद होते हैं– कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक। • उन्हें एक–एक भेद उदाहरण सहित परिभाषित करते हुए समझाते जाएँ और उनसे संबंधित वाक्य बनाने के लिए कहें। • उन्हें बताएँ कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न 'ने', कर्म कारक का 'को', करण कारक का 'से, के द्‌वारा', संप्रदान कारक का 'को, के लिए', अपादान कारक का 'से', संबंध कारक का 'का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी', अधिकरण कारक का 'में, पर', तथा संबोधन कारक का 'हे, अरे, ओ' है। • जान लें कि करण कारक तथा अपादान दोनों ही कारकों का विभक्ति–चिह्न (परसर्ग) 'से' है। करण में से 'साधन' के अर्थ में प्रयुक्त होता है, किंतु अपादान में से 'अलग होने' के अर्थ में आता है। • अब छात्रों को कर्म कारक तथा संप्रदान कारक में अंतर स्पष्ट करें कि दोनों ही कारकों में को विभक्ति चिह्न का प्रयोग होता है। कर्म कारक में को से जुड़ने वाले शब्द पर क्रिया का फल पड़ता है, किंतु संप्रदान कारक में को का प्रयोग किसी को कुछ देने के अर्थ में होता है। इस उदाहरणों द्‌वारा स्पष्ट करें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. कारक किसे कहते हैं?

....

ख. संप्रदान कारक और अपादान कारक में उदाहरण सहित अंतर समझाइए।

....

....

ग. कारक के कितने भेद होते हैं? सभी के नाम लिखिए।

....

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों को उचित कारक से मिलाइए–

क. गीता राधा से चतुर है।

ख. मीरा ने वीणा से धुन निकाली।

ग. मैं सीता के भाई के साथ गया।

घ. पेड़ से फल गिर रहे हैं।

ङ. बच्चे फुटबॉल से खेल रहे हैं।

च. दादा जी छत पर बैठे हैं।

छ. माताजी रसोई में खाना बना रही हैं।

- संबंध कारक
- अपादान कारक
- करण कारक
- अधिकरण कारक

3. निम्नलिखित परसर्गों से वाक्य बनाइए–

क. ने – ....

ख. को – ....

ग. के लिए – ....

घ. पर – ....

4. निम्नलिखित वाक्यों में से कारक चिह्न को रेखांकित कीजिए तथा उसके उचित भेद पर (✓) का निशान लगाइए-

क. बच्चों ने प्रार्थना की।   कर्ता कारक   संबंध कारक   अधिकरण कारक

ख. मोहन को दिल्ली जाना है। कर्ता कारक करण कारक अधिकरण कारक

ग. पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं। करण कारक अपादान कारक कर्ता कारक

घ. वह धरती पर गिर पड़ा। कर्ता कारक अपादान कारक अधिकरण

5. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित परसर्ग से कीजिए-

क. गुरु जी .... विद्यार्थी को बुलाया। (के लिए/ ने)

ख. दिनेश .... भाई ऑस्ट्रेलिया जा रहा है। (हे!/का)

ग. श्याम पिताजी .... पढ़ता है। (से/को)

घ. पक्षी आकाश .... उड़ रहे हैं। (में/पर)

ङ. धरती .... मिट्टी गीली थी। (का/की)

च. सविता .... पुस्तक पढ़ी। (से/ने)

6. दी गई कहानी को कारक चिह्नों द्वारा पूरा कीजिए।

किसी गाँव .... गड़रिये .... एक लड़का रहता था। वह रोज़ भेड़-बकरियाँ चराने जंगल .... जाता था। एक दिन उसे गाँववालों मज़ाक करने .... इच्छा हुई। वह एक पेड़ .... चढ़ गया और चिल्लाने लगा, "बचाओ, बचाओ! शेर आया, शेर आया!"

लड़के .... आवाज़ सुनते ही आस-पास .... लोग तथा गाँववाले अपने-अपने हथियार लेकर दौड़ पड़े। उन्होंने लड़के .... पास पहुँचकर पूछा कि शेर कहाँ है? जल्दी बता। लड़के .... हँसकर कहा, "मैंने तो यूँ ही मज़ाक किया था।" लोगों .... लड़के मूर्खता पर गुस्सा आया।

7. <u>रेखांकित</u> कारक चिह्नों के भेद दिए गए स्थान पर लिखिए-

क. राम ने रावण <u>को</u> मारा। ______________

ख. राहुल साइकिल <u>से</u> स्कूल जाता है। ______________

ग. किताबें मेज़ <u>पर</u> रखी हैं। ______________

सर्वनाम — पाठ योजनाः 21

आज की अवधारणा

छात्रों को सर्वनाम के बारे में बताना। सर्वनाम के सभी भेदों को उदाहरण सहित समझाकर अंतर स्पष्ट करना। सर्वनामों की रूप–रचना समझाना तथा महत्वपूर्ण बातों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को पता है कि सर्वनाम का अर्थ 'सबके लिए नाम' है। इसका प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है। वे सर्वनाम के भेदों के नाम भी जानते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में सर्वनाम संबंधी रुचि जागृत होगी और वें सक्षम होंगे–

- सर्वनाम के बारे में सोचने और विचार करने में,
- वाक्य में सर्वनाम के भेदों की पहचान करने में,
- सर्वनाम संबंधी आवश्यक बातें कौन–सी हैं, यह जानने में।

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- छात्रों को सर्वनाम शब्दों की उपयोगिता समझाना।
- दैनिक जीवन में सर्वनाम शब्दों की महत्ता बताना।
- सर्वनाम के सभी भेदों का उदाहरण सहित परिचय कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में सर्वनाम व उसके भेदों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों को पाठ्य–पुस्तक या अन्य किसी पुस्तक से कोई अनुच्छेद देकर उसमें से सर्वनाम शब्दों को छाँटकर अपनी कार्य–पुस्तिका में लिखने को कहें और उनके सामने उसका भेद पहचानकर लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्‌यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध सर्वनाम संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर सर्वनाम के भेदों की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में सर्वनामों की रूप रचना की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्‌देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'सर्वनाम' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित भी कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्‌देश्य : छात्रों को सर्वनाम के संबंध में बताना तथा उसके भेदों को जानने संबंधी उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। इसके छह भेद होते हैं– पुरूषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम तथा निजवाचक सर्वनाम। • सभी भेदों के नाम बताने के बाद छात्रों को पुरुषवाचक सर्वनाम की परिभाषा समझाएँ तथा बताएँ कि इसके भी तीन भेद होते हैं– उत्तम पुरुषवाचक – इसमें बोलने या लिखने वाला अपने लिए जिन शब्दों का प्रयोग करता है।, मध्यम पुरुषवाचाक – इसमें बोलने वाला सुनने वाले के जिन शब्दों का प्रयोग करता है, अन्य पुरुषवाचक– इसमें बोलने वाला अपने या सुनने वाले के अलावा अन्य लोगों के लिए जिन शब्दों का प्रयोग करता है। • उसके बाद निश्चयवाचक व अनिश्चयवाचक को उदाहरण सहित परिभाषित करके समझाएँ। • फिर छात्रों से आपसी बातचीत द्‌वारा प्रश्नवाचक सर्वनाम समझाएँ और बताएँ कि किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के विषय में प्रश्न पूछने के लिए प्रश्नवाचक सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। • उसके बाद उन्हें संबंधवाचक व निजवाचक सर्वनाम के मध्य उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट करके समझाएँ। • जब छात्र सभी भेदों से भली–भाँति परिचित हो जाएँ, तब उन्हें सभी भेदों से संबंधित चार–चार वाक्य बनाकर लाने को कहें।

	• अंत में उन्हें सर्वनामों की रूप रचना को समझाएँ और बताएँ कि सर्वनामों की रूप रचना में संबोधन कारक नहीं होता क्योंकि हम किसी को भी सर्वनाम द्‌वारा नहीं बुला सकते। • इसके अलावा जान लें कि आदर / सम्मान प्रकट करने के लिए सर्वनाम भी बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं तथा कुछ लोग 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग भी करते हैं। इसके अलावा शिष्ट समाज 'तू' के स्थान पर 'तुम' को प्रयोग करता है। • यह भी जानें कि मैं, हम, तुम के साथ रा, रे, री का प्रयोग होता है जैसे– मेरा, हमारा, तुम्हारा आदि।
पाठ की समाप्ति	
उद्‌देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

ख. सर्वनाम के कितने भेद हैं? सोदाहरण लिखें?

....

....

ग. निश्चयवाचक तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट करें?

....

....

....

घ. पुरुषवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और सर्वनाम के सही भेद पर (✓) का चिह्न लगाइए–

क. जैसा करोगे वैसा भरोगे। प्रश्नवाचक संबंधवाचक

ख.	पेड़ के नीचे कौन बैठा है?	निश्चयवाचक	प्रश्नवाचक
ग.	दरवाज़े पर कोई दस्तक दे रहा है।	निजवाचक	अनिश्चयवाचक्
घ.	मैं यह कार्य स्वयं कर लूँगा।	संबंधवाचक	निजवाचक
ङ.	तुम्हारी पुस्तक यह नहीं वह है।	निश्चयवाचक	प्रश्नवाचक
च.	तुम्हारा क्या नाम है?	प्रश्नवाचक	निश्चयवाचक

3. कोष्ठक में दिए गए उचित सर्वनाम शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. आज खाना बनाया है? (कौन/किसने)

ख. मेरी माँ ने बुलाया है। (उसे/मुझे)

ग. दूध में गिर गया। (उसने/कुछ)

घ. जैसा करोगे ही फल मिलेगा। (वो/वैसा)

ङ. आपकी प्रतीक्षा रहेगी। (मैं/मुझे)

च. नेता होता है जो जनता की सेवा करे। (यह/वो)

4. निम्नलिखित सर्वनाम शब्दों का स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

क. कहाँ – ....

ख. मेरे – ....

ग. तुम – ....

घ. स्वयं – ....

ङ. जहाँ-वहाँ – ....

5. निम्नलिखित गद्यांश में जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ पर संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करके दोबारा लिखिए-

कुत्ता घर से रोटी लेकर भागा। कुत्ता नाले के किनारे-किनारे जा रहा था। कुत्ते ने नाले के पानी में अपनी परछाई देखी। कुत्ता लालच में फँस गया। जब कुत्ते ने भौंकना चाहा, तो कुत्ते के मुँह से रोटी गिर गई।

....

....

....

....

....

विशेषण

पाठ योजनाः 22

आज की अवधारणा

छात्रों को विशेषण के बारे में बताना। विशेष्य व प्रविशेषण को समझाना। विशेषण के सभी भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करके अंतर स्पष्ट करना। विशेषणों की अवस्थाओं से परिचित कराना तथा विशेषणों की रचना समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को पता है कि विशेषण शब्द से हमें संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता का पता चलता है तथा जिनकी विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में विशेषण संबंधी रूचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- विशेषण के बारे में सोचने और विचार करने में,
- बोले गए वाक्यों व शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनकर उनमें से विशेषण व विशेष्य पहचानने में,
- प्रविशेषण क्या है, यह समझने में

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन–पाठन का उद्देश्य है–

- विशेषण के भेदों को विस्तारपूर्वक समझाना।
- दैनिक जीवन में विशेषण शब्दों का महत्व बताना।
- विशेषणों की अवस्थाएँ व उनकी तुलना में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय के बारे में बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में विशेषण शब्दों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को अलग–अलग चित्र दिखाकर उन चित्रों की विशेषताओं पर बातचीत करना तथा बातों–बातों में उनसे विशेषण व विशेष्य के बारे में पूछना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध विशेषण संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर विशेषण की अवस्थाएँ व उनकी रचना संबंधी जानकारी वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में विशेषण के भेदों की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'विशेषण' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ–प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों की विशेषण के संबंध में बताना तथा भेदों को जानने संबंधी उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, विशेषण के चार भेद होते हैं– गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, सार्वनामिक विशेषण। • इन भेदों के बारे में जानने से पहले उन्हें बताएँ कि विशेषता प्रकट करने वाले विशेषण प्रविशेषण कहलाते हैं। जैसे– नायरा अत्यंत सुंदर लड़की है। • उन्हें सबसे पहले गुणवाचक विशेषण के बारे में समझाएँ कि इससे हमें किसी भी संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण, दोष, आकार, रंग, अवस्था, स्थिति, गंध, काल, स्थान, स्वाद आदि का बोध होता हैं। • इसे समझाने के बाद छात्रों को परिमाणवाचक व संख्यावाचक विशेषण उदाहरण सहित परिभाषित करके समझाएँ तथा बताएँ कि इन दोनों विशेषण के भेदों के भी दो–दो भेद होते हैं। • निश्चित व अनिश्चित संख्यावाचक तथा परिमाणवाचक इन दोनों भेदों के भेद हैं। निश्चित संख्यावाचक /परिमाणवाचक से / निश्चित संख्या या परिमाण का बोध होता है। वहीं अनिश्चित संख्यावाचक / परिमाणवाचक से अनिश्चित संख्या या परिमाण का बोध होता है। • अब उन्हें बताएँ कि जो सर्वनाम संज्ञा से पहले आकर विशेषण का कार्य करते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। ध्यान रखें कि संज्ञा के स्थान पर आने वाले पद को सर्वनाम कहते हैं, किंतु जब सर्वनाम संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताने लगता है, तब उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

	• उसके बाद उन्हें विशेषणों की अवस्थाओं (तुलना) के बारे में बताएँ कि विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती है मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था। • उन्हें विशेषण की तीनों अवस्थाएँ विस्तारपूर्वक स्पष्ट करें। जैसे– श्रेष्ठ (मूलावस्था), श्रेष्ठतर (उततरावस्था), श्रेष्ठतम (उत्तमावस्था) • फिर उन्हें विशेषण में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण होने वाले परिवर्तन को उदाहरण सहित समझाएँ। • उन्हें बताएँ कि अधिकतर विशेषण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय में उपसर्ग या प्रत्यय जोड़ने से बनते हैं। • जब छात्र विशेषण के भेदों व उनकी अवस्थाएँ तथा रचना से परिचित हो जाएँ तब उन्हें उन सभी से संबंधित कुछ वाक्य बनाकर लाने को कहें और एक–एक करके छात्रों को समक्ष बुलाकर कोई शब्द दें और उसे विशेषण की तीनों अवस्थाओं में लिखने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. विशेषण किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

ख. आप में कौन–कौन से विशेषण शब्द विद्यमान हैं? बताइए।

....

....

ग. निश्चयवाचक सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट करें?

....

....

....

घ. विशेषणों की अवस्थाओं को उदाहरण सहित बताइए।

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को .... कहते हैं।

ख. विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं-

(अ) .... (ब) .... (स) ....

ग. जो विशेषण या की माप-तौल संबंधी विशेषता का बोध करवाएँ, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

घ. विशेषण के चार भेद होते हैं-

(अ) .... (ब) ....

(स) .... (द) ....

ङ. 'गुण' से विशेषण शब्द बनेगा - ....।

च. शास्त्र से विशेषण शब्द बनेगा - ....।

3. उचित विकल्प में सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	बीस गज ज़मीन	-	परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
ख.	कुछ लोग	-	परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
ग.	दो किलो चावल	-	परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
घ.	तीन आम	-	परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
ङ.	थोड़ी चीनी	-	परिमाणवाचक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण

4. निम्नलिखित विशेषणों की अन्य दो अवस्थाओं के रूप लिखिए-

क.	उच्च	-		
ख.	मधुर	-		
ग.	सुंदर	-		
घ.	अधिक	-		

5. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के सही रूप से खाली जगह भरिए-

क. पर्वतों की चोटियाँ .... थीं। (बर्फ)

ख. .... इमारतें हमारी धरोहर हैं। (इतिहास)

ग. कपिल मेरा .... भाई है। (मामा)

घ. यह पत्रिका .... है। (मास)

ङ. मैंने एक .... चेहरा देखा। (भय)

6. **निम्नलिखित शब्दों से बने उचित विशेषण शब्द पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-**

क.	अंक	–	अंकित	☐	अंकितम	☐
ख.	शोभा	–	शोभना	☐	शोभित	☐
ग.	शहर	–	शहरीपन	☐	शहरी	☐
घ.	ग्राम	–	ग्रामीन	☐	ग्रामीण	☐
ङ.	मैं	–	मेरे–जैसा	☐	मुझ–सा	☐

7. **चित्र देखकर तीन वाक्य लिखिए। प्रत्येक वाक्य में से उदाहरण के अनुसार विशेषण और विशेष्य को अलग करके लिखिए-**

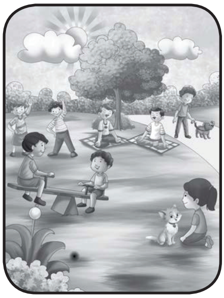

उदाहरण – दो लड़कियाँ झूला झूल रही हैं।

विशेषण – दो विशेष्य – लड़कियाँ

क ....

विशेषण – .... विशेष्य – ....

ख ....

विशेषण – .... विशेष्य – ....

ग ....

विशेषण – .... विशेष्य – ....

क्रिया

पाठ योजनाः 23

आज की अवधारणा

छात्रों को क्रिया के बारे में बताना। कर्म व संरचना के आधार पर क्रिया भेदों से अवगत कराना तथा उदाहरण सहित सभी भेदों के बीच अंतर स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को पता है कि क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। इसके मूल रूप में 'ना' प्रत्यय जोड़कर हम अनेक क्रियाएँ बना सकते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में क्रिया संबंधी रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- क्रिया के बारे में सोचने और विचार करने में,
- कर्म व संरचना दोनों आधारों पर क्रिया के भेदों को जानने में,
- सकर्मक क्रिया के दोनों भेदों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन–पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में क्रिया शब्दों की उपयोगिता समझाना।
- अकर्मक व सकर्मक क्रिया की अलग–अलग उपयोगिता समझाना।
- संरचना के आधार पर क्रिया के पाँचों भेदों से अवगत कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में क्रिया शब्दों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों को श्यामपट्ट पर कुछ क्रिया शब्द लिखकर दें तथा उन्हें उन शब्दों को ध्यानपूर्वक देखकर उनके धातु रूप लिखकर लाने को कहें।

पाठ–विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध क्रिया संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अकर्मक व सकर्मक क्रिया पहचान संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में संरचना व रचना के आधार पर क्रिया भेदों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरूआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'विशेषण' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ–प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को क्रिया के बारे में बताना तथा कर्म व संचार के आधार पर भेदों के प्रति उत्सुकटा जागृत करना।	• छात्रों, जो शब्द किसी कार्य के होने या किए जाने अथवा किसी स्थिति, घटना या अस्तित्व का बोध करवाते हैं, वे क्रिया कहलाते हैं। • उन्हें बताएँ कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं अकर्मक व सकर्मक क्रिया। वहीं संरचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं– प्रेरणार्थक क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, कृदंत क्रिया तथा पूर्वकालिक क्रिया। • छात्रों को पहले अकर्मक व सकर्मक क्रिया को उदाहरण सहित परिभाषित करके समझाएँ। उन्हें बताएँ अकर्मक क्रिया कर्म रहित व सकर्मक क्रिया कर्म सहित क्रिया होती हैं। • अकर्मक क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है। अकर्मक क्रिया का पता लगाने के लिए क्रिया के पहले क्या, किसे, किसको आदि लगाने पर प्रश्न करना चाहिए। अगर उत्तर न मिले तो क्रिया अकर्मक क्रिया होती है। • वहीं ध्यान रखें कि क्रिया के साथ क्या, किसे, किसको लगाकर प्रश्न करने पर यदि उचित उत्तर मिलता है तो वह सकर्मक क्रिया होती है। • उदाहरण सहित एककर्मक व द्विकर्मक क्रिया समझाने के बाद उन्हें बताएँ कि द्विकर्मक क्रिया में एक कर्म मुख्य होता है तथा दूसरा गौण (आश्रित)। इसमें मुख्य कर्म क्रिया से पहले तथा गौण कर्म के बाद आता है। मुख्य कर्म अप्राणीवचक होता हैं, जबकि गौण कर्म प्राणीवाचक होता है।

	• उसके बाद उन्हें संरचना के आधार पर क्रिया के पाँचों भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करें। उन्हें बताएँ कि प्रेरणार्थक क्रिया के भी दो भेद होते हैं। जब कर्ता खुद भी कार्य में सम्मिलित होते हुए प्रेरणा देता है, तब प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया होती है, वहीं जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा देता है, उसे द्विवितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। • इसके अलावा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि से बनने वाली क्रियाएँ नामधातु क्रिया कहलाती हैं। जैसे– लालच–ललचाना आदि। • संयुक्त व पूर्वकालिक क्रिया भी छात्रों को इस प्रकार समझाकर बताएँ कि शब्दों के अंत में शब्दांश या प्रत्यय जोड़कर बनाई गई क्रियाएँ कृदंत क्रिया कहलाती हैं। हिंदी में चार प्रकार के कृदंत माने जाते हैं। • जब छात्र इन सभी भेदों से भली–भाँति परिचित हो जाएँ, उसके बाद श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखें तथा छात्रों को उनके भेद बताने को कहे।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. क्रिया किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

ख. सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

ग. प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

घ. संरचना के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते हैं? सभी भेदों को लिखिए।

....

....

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. क्रिया का मूल रूप .... कहलाता है।

ख. प्रेरणार्थक क्रिया दो प्रकार की है- (अ) ...., (ब) ....।

ग. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि से बनने वाली क्रियाएँ .... क्रिया कहलाती है।

घ. जब कर्ता खुद भी कार्य में सम्मिलित होते हुए प्रेरणा देता है, तब .... क्रिया होती है।

ङ. किसी कार्य के होने या किए जाने अथवा किसी घटना, स्थिति या अस्तित्व का बोध करने वाले शब्दों को .... कहते हैं।

च. जहाँ भूतकाल की क्रिया अभी खत्म नहीं हुई हो उसे .... कहते हैं।

3. निम्नलिखित क्रिया शब्दों के विभिन्न रूप लिखें-

क. चल – ________ ________ ________

ख. कर – ________ ________ ________

ग. पढ़ – ________ ________ ________

घ. खा – ________ ________ ________

4. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया पद छाँटकर उनके भेद भी लिखें-

	क्रिया पद	भेद
क. रमेश पत्र लिख रहा है।	....	....
ख. कमल घूम रहा है।	....	....
ग. बच्चे खाना खा चुके हैं।	....	....
घ. अध्यापिका पढ़ा रही हैं।	....	....

5. निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता को गोला और कर्म को <u>रेखांकित</u> कीजिए-

क. राम ने रावण को मारा।

ख. नेहा गाना गा रही है।

ग. नीरा ने वीणा बजानी सीखी।

घ. यहाँ सभी क्रिकेट खेल रहे हैं।

ङ. विद्यार्थी पाठ पढ़ रहे हैं।

6. **निम्नलिखित वाक्यों के क्रिया-भेद लिखिए-**

	भेद
क. चिड़िया उड़ती है।	....
ख. पिताजी ने मुझे गणित समझाया।	....
ग. निधि सो रही है।	....
घ. वह खाना खाकर विद्यालय गया।	....

7. **निम्नलिखित वाक्यों को उचित क्रिया से मिलाइए-**

क. शिक्षिका ने बच्चों को पाठ पढ़ाया।

ख. माताजी खाना बनाती हैं।

ग. पुजारी पूजा कर रहा है।

घ. पुनीत चला जाएगा।

ङ. माताजी खाना बनाती हैं।

च. सीता हँसती है।

अकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया

काल पाठ योजनाः 24

आज की अवधारणा

छात्रों को काल के बारे में बताना। काल के तीनों भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करके उनके भेदों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं काल शब्द से समय का बोध होता है तथा क्रिया का वह रूप जिससे उसके होने या करने का ज्ञान हो, उसे काल कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- काल के बारे में सोचने और विचार करने में,
- वाक्यों को ध्यानपूर्वक सुनकर उस काल का भेद बताने में,
- काल के भेदों के भी भेदों की पहचान करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन–पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि भाषा में काल शब्द की कितनी उपयोगिता है।
- दैनिक जीवन में काल के भेदों की महत्ता से अवगत कराना।
- काल के तीनों भेदों के भेदों से परिचित कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में काल व उसके भेदों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक, छात्रों को भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत् काल– तीनों कालों को ध्यान में रखते हुए अपने एक दिन के सभी कामों के बारे में लिखकर लाने को कहें।

पाठ–विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध काल संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर काल के तीनों भेदों की पहचान संबंधी वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में काल के तीनों भेदों की विस्तारपूर्वक जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'काल' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को काल के संबंध में बताना तथा उसके भेदों के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, काल के तीन भेद हैं– भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यत् काल। भूतकाल से हमें कार्य के बीते हुए समय में होने का बोध होता है। • भूतकाल के छह भेद हैं– सामान्य भूत, आसन्न भूत, पूर्ण भूत, संदिग्ध भूत, हेतु–हेतुमद् भूत। • उन्हें एक–एक करके भूतकाल के सभी भेद उदाहरण सहित परिभाषित करें व सभी भेदों से संबंधित दो–दो वाक्य बनाकर दिखाने को कहें। • अब बताएँ क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के वर्तमान समय में होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं। • उन्हें बताएँ कि वर्तमान काल के भी तीन भेद होते हैं– सामान्य वर्तमान काल, अपूर्ण वर्तमान काल तथा संदिग्ध वर्तमान काल। • सामान्य वर्तमान काल में क्रिया का सामान्य रूप से होना या करना पाया जाता है। वहीं वर्तमान काल में शुरू हुआ कार्य अभी चल रहा है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते है। • इन्हें उदाहरण सहित स्पष्ट करने के बाद छात्रों को कुछ शब्द या वाक्य दें तथा उन्हें वर्तमान काल के तीनों भेदों में परिवर्तित करके लिखने को कहें। • अब भविष्यत् काल के बारे में बताएँ कि क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य के होने का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

	• भविष्यत् काल के भी दो भेद हैं– सामान्य भवष्यित् काल व संभाव्य भविष्यत् काल। • छात्रों को बताएँ कि क्रिया के जिस रूप से भविष्यत् काल में सामान्य रूप से कार्य का होना पाया जाए, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं। वहीं क्रिया के जिस रूप द्वारा भविष्यत् काल में कार्य के होने की संभावना या संदेह हो, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं। • अध्यापक इन्हें उदाहरण सहित स्पष्ट करके छात्रों से इनसे संबंधित एक–एक वाक्य बनाकर बताने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. काल किसे कहते हैं?

....

....

....

ख. काल के कितने भेद हैं? नाम तथा उदाहरण देकर स्पष्ट करें?

....

....

....

ग. भूतकाल के कितने भेद हैं? सभी भेदों का एक-एक उदाहरण दीजिए।

....

....

घ. सामान्य भविष्यत् काल किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

....

2. **निम्नलिखित वाक्यों को उचित काल से मिलाइए–**

क.	दादाजी ने दवा ले ली होगी।	आसन्न भूत
ख.	मीनू पत्र लिखती है।	सामान्य वर्तमान काल
ग.	नीरजा ने गृहकार्य कर लिया है।	भविष्यत् काल
घ.	उर्वशी नृत्य करती है।	संदिग्ध भूत
ङ.	मनीष कल हमारे यहाँ आएगा।	वर्तमान काल

3. **निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया का रूप पहचान कर उनके सामने काल का नाम लिखें–**

क. मेरी बहन कल आएगी। – ....

ख. मोहन पटना गया था। – ....

ग. हम जा रहे हैं। – ....

घ. शायद वह कल जाएगा। – ....

4. **निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान उचित विराम-चिह्न लगाकर वाक्यों को दोबारा लिखिए–**

क. यह मैच डी ए वी के बारहवीं कक्षा के छात्रों ने जीता

....

ख. वेदों की संख्या चार है ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

....

ग. महादेवी वर्मा जैसी कविता कोई नहीं लिख पाता

....

घ. महात्मा गांधी बापू के नाम से जाने जाते हैं

....

ङ. ओ भैया ज़रा इधर आना

....

4. **भूतकाल के कुछ वाक्य बनाकर लिखिए।**

....

....

....

....

....

....

....

....

5. काल के सही भेद में पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

क.	शायद आज धूप निकलेगी।	सामान्य भविष्यत्	संभाव्य भविष्यत्
ख.	शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया था।	अपूर्ण भूतकाल	पूर्ण भूतकाल
ग.	वह खाकर आई है।	सामान्य भूतकाल	आसन्न भूतकाल
घ.	महेश पढ़ता होगा।	अपूर्ण वर्तमान	संदिग्ध वर्तमान

6. कोष्ठकों में दिए गए निर्देशानुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

क. नेहा ....। (घूम–अपूर्ण वर्तमान)

ख. शायद वरुण को आज पुरस्कार .... ।(मिलना–संभाव्य भविष्यत्)

ग. करन आम ....। (खाना–अपूर्ण भूतकाल)

घ. पिताजी ने समाचार–पत्र ....। (पढ़ना–आसन्न भूतकाल)

ङ. बिल्ली दूध ....। (पीना–सामान्य वर्तमान काल)

अव्यय (अविकारी) शब्द पाठ योजनाः 25

आज की अवधारणा

छात्रों को अविकारी शब्द के बारे में बताना। उसके सभी भेदों के नाम बताकर पहले भेद क्रिया-विशेषण को समझाना। क्रिया विशेषण के चारों भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थियों को पता है कि जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक, काल, पुरुष आदि के प्रभाव से किसी प्रकार का विकार (परिवर्तन) नहीं आता, उन्हें 'अव्यय' या 'अविकारी शब्द' कहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- अव्यय शब्दों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- क्रिया-विशेषण व उसके उदाहरणों को जानने में,
- वाक्य पढ़कर या सुनकर उसमें क्रिया-विशेषण शब्द को भेद अनुसार पहचानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में क्रिया-विशेषण शब्दों की पहचान बताना।
- क्रिया-विशेषण के चारो भेदों से परिचित कराना।
- अलग-अलग शब्दों को सुनकर उनका क्रिया-विशेषण भेद पहचानने के लिए अग्रसित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'क्रिया-विशेषण' विषय के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों को एक वर्ग-पहेली बनाकर उसमें से क्रिया-विशेषण शब्द छाँटकर अपनी कार्य-पुस्तिका में अलग-अलग भेद अनुसार लिखने को कहना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध अव्यय संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर क्रिया-विशेषण संबंधी जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में अविकारी शब्द तथा क्रिया-विशेषण के भेदों की जानकारी लिखे चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'अविकारी शब्द' के पहले भेद क्रिया विशेषण पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को मुहावरों के बारे में बताना तथा लोकोक्तियों के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, क्रिया-विशेषण अविकारी शब्द का पहला भेद है। जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं। • क्रिया-विशेषण के चार भेद होते हैं– कालवाचक क्रिया-विशेषण, स्थानवाचक क्रिया-विशेषण, परिमाण ावाचक क्रिया-विशेषण और रीतिवाचक क्रिया विशेषण। • अध्यापक क्रिया-विशेषण के चारों भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करके छात्रों से उनके संबंध में छोटे-छोटे प्रश्न पूछें। • छात्रों को बताएँ कि कालवाचक क्रिया-विशेषण तीन प्रकार के होते हैं– काल संबंधी, अवधि संबंधी व बारंबारता संबंधी। • वहीं स्थानवाचक क्रिया-विशेषण के तीन भेद होते हैं– स्थितिवाचक, दिशावाचक व विस्तारपूर्वक और परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण के पाँच भेद होते हैं– न्यूनतावाचक, अधिकतावाचक, पर्याप्तवाचक, तुलनावाचक व श्रेणीवाचक। • उसके बाद रीतिवाचक क्रिया-विशेषण के भेदों के नाम बताएँ, जो इस प्रकार हैं– निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, निषेधवाचक, विधिवाचक, आकस्मिकतावाचक आदि। • अध्यापक अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा इन सभी भेदों को स्पष्ट करें तथा उनसे संबंधित वाक्य बनाकर लाने को कहें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. क्रियाविशेषण किसकी विशेषता बताता है?

....

....

ख. अविकारी शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

....

....

ग. क्रिया की स्थान संबंधी विशेषता कौन बतलाता है?

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों को क्रियाविशेषण या विशेषण से मिलाइए-

क. लता मधुर गाती है।	क्रियाविशेषण	ज़रा तेज बोलो।
ख. राधा ठंडा पानी पीती है।		मोहन साफ़ लिखता है।
ग. शोभा मीठा गाना गाती है।	विशेषण	मुझे मीठा आम दो।

3. दिए गए शब्दों में से उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण   क्रियाविशेषण   स्थानवाचक क्रियाविशेषण
रीतिवाचक क्रियाविशेषण   विशेषण

क. संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता .... बताते हैं।

ख. जिस क्रियाविशेषण शब्द से कार्य की मात्रा, परिमाण का बोध हो, उसे .... कहते हैं।

ग. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें .... कहते हैं।

घ. जिस अविकारी शब्द से क्रिया के होने की रीति का बोध हो, उसे .... कहते हैं।

ङ. क्रिया के होने के स्थान या दिशा का बोध कराने वाले शब्द .... कहलाते हैं।

4. निम्नलिखित वाक्यों में उचित क्रियाविशेषण शब्द लिखकर खाली जगह भरिए-

क. लड़की .... बोलती है।

ख. वह .... गिर पड़ा।

ग. दोपहर को सूरज .... चमकता है।

घ. चाचा दिल्ली से .... आ रहे हैं।

ङ. किसान .... उठ जाते हैं।

5. निम्नलिखित क्रियाविशेषण शब्दों से वाक्य बनाइए-

क. अधिक – ....

ख. इधर-उधर – ....

ग. सुबह-सुबह – ....

घ. नीचे – ....

ङ. अचानक – ....

वाक्य-विचार पाठ योजना: 26

आज की अवधारणा

छात्रों को वाक्य के बारे में बताना। उसकी परिभाषा समझाते हुए वाक्य के अंग व भेदों से परिचित कराना। उद्देश्य व विधेय को समझाकर अर्थ व रचना के आधार पर वाक्य के भेदों को बताना तथा वाक्य-परिवर्तन समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि शब्दों का व्यवस्थित क्रम एवं सार्थक समूह वाक्य कहलाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में 'वाक्य-विचार' विषय के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- वाक्य निर्माण के बारे में सोचने और विचार करने में,
- वाक्य के भेद के दोनों आधारों के बारे में जानने में,
- उद्देश्य व विधेय को समझकर उसकी पहचान करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को वाक्य के अंग व भेदों के बारे में समझाना।
- छात्रों को वाक्य परिवर्तन करना सिखाना।
- अर्थ व रचना के आधार पर वाक्य के भेदों से परिचित कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में 'वाक्य-विचार' विषय के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

श्यामपट्ट पर अलग-अलग वाक्य लिखकर उसमें से उद्देश्य व विधेय अलग-अलग करके छात्रों को लिखकर लाने को कहना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में वाक्य-विचार संबंधी पुस्तकें।

- वाक्य के अंग व भेदों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।
- यूट्यूब पर वाक्य-परिवर्तन समझाते वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि उन्हें आज नए अध्याय 'वाक्य-विचार' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को वाक्य के अंग के बारे में बताकर अर्थ व रचना के आधार पर वाक्य के भेदों को जानने के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, वाक्य सार्थक शब्दों का ऐसा समूह है जो व्याकरणिक नियमानुसार व्यवस्थित करने पर पूर्ण अर्थ का बोध करवाता है। • इसके दो अंग होते हैं, उद्देश्य और विधेय। वाक्य में जिसके विषय में बात की जाए, वह उद्देश्य तथा उद्देश्य के विषय में जो बात की जाए वह विधेय कहलाता है। • अध्यापक उदाहरण द्वारा उद्देश्य व विधेय स्पष्ट करने के बाद उद्देश्य व विधेय का विस्तार छात्रों को समझाएँ। • उसके बाद छात्रों को अर्थ व रचना के आधार पर वाक्य के भेदों से परिचित कराएँ। • छात्रों को पहले अर्थ के आधार पर भेदों के बारे में बताएँ। अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं- विधिवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिवाचक, आज्ञावाचक, इच्छावाचक, संदेहवाचक। • इन सभी भेदों को उदाहरण सहित स्पष्ट करके अध्यापक रचना के आधार पर उसके तीनों भेदों (सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्रित वाक्य) के बारे में समझाएँ। • अध्यापक सभी भेदों को स्पष्ट करने के बाद छात्रों को सभी भेदों से संबंधित चार-चार वाक्य बनाकर लिखकर लाने को कहें। • अंत में छात्रों को वाक्य परिवर्तन के नियमों से अवगत कराएँ तथा उन्हें सरल से मिश्रित तथा संयुक्त वाक्य बनाने को दें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. वाक्य किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

....

....

....

ख. उद्देश्य एवं विधेय में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

ग. अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं? सभी भेदों के नाम लिखें।

....

....

....

घ. रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं? सभी भेदों के नाम लिखिए।

....

....

....

2. अर्थ के आधार पर वाक्य के उचित भेद पर सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	अरे! तुम आ गए।	विस्मयवाचक वाक्य	◯	विधानवाचक वाक्य	◯
ख.	कुरसी पर बैठकर पढ़ो।	आज्ञावाचक वाक्य	◯	इच्छावाचक वाक्य	◯
ग.	क्या तुम सैर करने गए थे?	संदेहवाचक वाक्य	◯	प्रश्नवाचक वाक्य	◯
घ.	हम वहाँ नहीं जाएँगे।	निषेधवाचक वाक्य	◯	प्रश्नवाचक वाक्य	◯
ङ.	जल्दी पत्र लिखो।	आज्ञावाचक वाक्य	◯	इच्छावाचक वाक्य	◯

3. निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य पर गोला और विधेय को <u>रेखांकित</u> कीजिए-

क. सैनिक हमारी सीमाओं की सुरक्षा करते हैं।

ख. मेरे भाई ने पुस्तकालय से पुस्तकें लीं।

ग. हरिद्वार एक तीर्थस्थल है।

घ. खिलाड़ी मैदान में खेल रहे हैं।

ङ. दादी जी कानपुर जा रही हैं।

च. माता जी लाल रंग की साड़ी खरीद कर लाईं।

4. निम्नलिखित शब्दों (पदों) को व्यवस्थित क्रम में लिखकर वाक्य बनाइए-

क. लिख रही हो तुम क्या?

....

ख. स्नेहा गई थी कहाँ?

....

ग. परीक्षा नहीं दी अनिकेत ने इस वर्ष।

....

घ. तपस्या पसंद है को क्रिकेट खेलना।

....

5. नीचे दिए गए अनुच्छेद में पदक्रम ठीक नहीं हैं। अतः यह अनुच्छेद समझ में नहीं आ रहा है। आप पदक्रम को ठीक करके दोबारा लिखिए।

गौरव अपने सरकारी कॉलोनी में रहता है माता-पापा के साथ। हर घर के पीछे कॉलोनी में काफ़ी ज़मीन पड़ी है खाली। वहाँ कूड़ा जाता है फेंका। गौरव पिछले एक सप्ताह से ज़मीन की जुटा था सफ़ाई करने में। इस काम में भी उसकी मदद कर रहे उसके दोस्त थे। नहा-धोकर गौरव जब के लिए घर से स्कूल जाने लगा तो कहा उसकी माता जी ने "गौरव, आज तुम्हारा याद है न! जन्मदिन है।"

....

....

....

....

....

....

6. कल्पनात्मक प्रश्नः-

क्या आप में कहीं घूमने गए थे अथवा ऐसी कोई घटना जो आपको बहुत अच्छी लगती हो और आप जब भी उस घटना के बारे में सोचते हो तो आपको बहुत अच्छा महसूस होता हो। उस घटना को अपनी कक्षा में सबके साथ बाँटें।

....

....

....

....

वाक्य शुद्धि

पाठ योजनाः 27

आज की अवधारणा

छात्रों को वाक्य-शुद्धि के बारे में बताना। लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय, पदक्रम, पुनरुक्ति तथा मुहावरे संबंधी अन्य अशुद्धियों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि वाक्य का निर्माण कैसे होता है तथा इसके अंग कौन-कौन से हैं एवं वाक्य परिवर्तन किस प्रकार किया जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- छात्रों के द्वारा किस प्रकार की अशुद्धियाँ की जाती हैं? यह जानने में,
- अपनी भाषा को वाक्य-शुद्धि करके किस प्रकार सुधारा जा सकता है, यह समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों से परिचित कराना।
- भाषा का शुद्ध प्रयोग बताना।
- शुद्ध वाचन बताना ताकि शुद्ध-लेखन किया जा सके।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में वाक्य शुद्धि करने के प्रति उत्सुकता जागृत करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों को कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखकर दें तथा फिर उन्हें अपनी कार्य-पुस्तिका मे शुद्ध रुप में लिखकर दिखाने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध अशुद्धि-शोधन संबंधित पुस्तकें।
- कक्षा में लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, क्रिया व अव्यय आदि संबंधी अशुद्धियों को दिखाते चार्ट पेपर।
- यूट्यूब पर वाक्य शुद्धि संबंधी जानकारी देते वीडियो

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि उन्हें आज नए अध्याय 'वाक्य-शुद्धि' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों के बारे में बताना तथा उनको जानने के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, बोलचाल की भाषा में या लिखने में प्रायः हम लोग लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, क्रिया, क्रियाविशेषण तथा अन्य प्रकार की अशुद्धियाँ कर बैठते हैं। • उन्हें बताएँ कि वाक्य भाषा की महत्वपूर्ण इकाई है। इसलिए बोलते या लिखते समय हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा बोला या लिखा जाने वाला वाक्य व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध, बिल्कुल स्पष्ट और सार्थक होना चाहिए। • अशुद्धियों को दूर करने के लिए विराम-चिह्नों का यथास्थान प्रयोग करना चाहिए अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाता है। • छात्रों को पाठ में से विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों जैसे— लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, क्रिया, अव्यय, पुनरुक्ति, पदक्रम व मुहावरे आदि को समझाते हुए उन्हें शुद्ध वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें। • कक्षा को दो समूहों में विभाजित करके दोनों समूहों के सामने एक-एक करके अशुद्ध वाक्य बोलें और उसमें लगने वाली अशुद्धि के बारे में पूछें। पहला समूह यदि उत्तर न दे पाए तो दूसरे समूह को मौका दें। • उन्हें यह भी बताएँ कि वाक्य को शुद्ध रूप से लिखने व बोलने के लिए व्याकरण के विषयों को ध्यानपूर्वक समझाना चाहिए।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित वाक्यों के अशुद्ध भाग पर गोला लगाइए-

क. वह स्त्री विद्वान है।
ख. चुटकुला सुनकर हंस दिया।
ग. छत पर नहीं खेलो।
घ. वह रविवार के दिन आएगा।
ङ. यह अच्छे लोग हैं।
च. माताजी ने दिल्ली जाना है।

2. **शुद्ध-लेखन क्यों आवश्यक है? बताइए।**

....

....

....

....

....

3. **कोई ऐसे चार वाक्य लिखिए, जिन्हें लिखने में आप अकसर अशुद्धियाँ करते हैं।**

....

....

....

....

....

4. **वाक्यों को शुद्ध करके दोबारा लिखिए।**

क. तुम कल ज़रूर अवश्य आ जाना।

....

ख. कौआ पेड़ पर बैठकर चार तरफ देखने लगा।

....

ग. प्रधानमंत्री भाषण बोल रहे हैं।

....

घ. घर पर अंदर सफाई होनी चाहिए।

....

ङ. यह पुरानी दवाइयों की दुकान है।

....

5. **अशुद्ध लेखन के कोई दो कारण लिखिए।**

....

....

विराम-चिह्न

पाठ योजना: 28

आज की अवधारणा

छात्रों को विराम-चिह्न के बारे में बताना। उनकी परिभाषा समझाते हुए महत्वपूर्ण विराम-चिह्नों को उदाहरण सहित स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि विराम का अर्थ-रुकना होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में विराम-चिह्नों को जानने के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- विराम-चिह्नों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- प्रमुख विराम-चिह्नों को जानने में,
- बातचीत करते समय बीच-बीच में क्यों रुकते हैं, यह समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- प्रमुख विराम-चिह्नों के प्रयोगों को समझाना।
- भाषा में विराम-चिह्नों का महत्व जानना।
- छात्रों को यह बताना कि विराम-चिह्न भाषा को स्पष्ट तथा प्रभावशाली बनाते हैं।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में विराम-चिह्नों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों को अलग-अलग विराम-चिह्नों को चित्र के माध्यम से दिखाएँ तथा एक-एक छात्र से उस विराम-चिह्न का नाम पूछें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में विराम-चिह्न संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर विराम-चिह्नों के प्रयोग संबंधी जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में महत्वपूर्ण विराम-चिह्नों की जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि उन्हें आज नए अध्याय 'विराम-चिह्न' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को विराम-चिह्न के बारे में बताकर उनके प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, विराम का अर्थ होता है– रुकना या ठहरना। लिखित भाषा में रुकने की इस प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए कुछ चिह्न निश्चित किए गए हैं, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। • उन्हें बताएँ कि इनके प्रयोग से भाषा स्पष्ट व प्रभावशाली बनती है। यह भाषा को अर्थपूर्ण बनाने में सहायक होते हैं। • छात्रों को अवगत कराएँ कि हिंदी में प्रमुख विराम-चिह्न हैं– अल्प विराम, अद्र्ध विराम, पूर्ण विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, विस्मयादिबोधक चिह्न, निर्देशक चिह्न, योजक चिह्न, उद्धरण चिह्न, विवरण चिह्न, हंसपद, कोष्ठक व लाघव चिह्न। • अध्यापक इन सभी विराम-चिह्नों के चिह्नों व उनके अर्थ को उदाहरण सहित छात्रों को स्पष्ट रूप से समझाएँ। • उसके बाद छात्रों को प्रत्येक विराम-चिह्न का प्रयोग करके दो-दो वाक्य बनाकर लाने को कहें और उनकी प्रतिपुष्टि करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

क. विराम-चिह्न किसे कहते हैं? भाषा में विराम-चिह्न की आवश्यकता क्यों पढ़ती है?

....

....

ख. अर्द्ध विराम और अल्पविराम में क्या अंतर है?

....

....

2. निम्नलिखित वाक्यों में विराम-चिह्न लगाकर वाक्य दोबारा लिखिए-

क. वाह क्या बात है – ....

ख. रामायण किसने लिखी थी – ....

ग. मोहन ने कहा मैं बाज़ार जाऊँगा – ....

घ. शाबाश ऐसा ही करें – ....

3. विराम-चिह्न संबंधी अशुद्धियाँ ठीक करके वाक्य दोबारा लिखें।

क. गुरुजी ने कहा, "खेलो-कूदो और पढ़ो"

____

ख. दूसरों का भला करने वाले महापुरुष कहलाते ह?

____

ग. कर्म ही जीवन है, आलस्य शत्रु है!

____

घ. हे ईश्वर? इस गरीब की मदद करो।

____

ङ. यह निबंध "हमारी पुस्तक" मेरी व्याकरण, में लिखा है।

____

4. निम्नलिखित विराम-चिह्नों के नाम लिखकर बताएँ कि इनका प्रयोग कहाँ होता है-

क. , – ....

ख. ! – ....

ग. - – ....

घ. " " – ....

ङ. ( ) – ....

5. निम्नलिखित विराम-चिह्नों का उनके नाम से मिलान कीजिए-

क.	अर्द्ध विराम	? ।	6.	योजक
ख.	अल्प विराम	; ( )	7.	कोष्ठक
ग.	प्रश्नवाचक चिह्न	, -	8.	हंसपद
घ.	लाघव चिह्न	! ॰	9.	पूर्ण विराम
ङ.	निर्देशक चिह्न	— :-	10.	विवरण चिह्न

6. निम्नलिखित गद्यांश में यथास्थान विराम-चिह्न लगाकर पुनः लिखिए-

संत रामानुजाचार्य ने अपने गुरु आंबि से अष्टाक्षर मंत्र की दीक्षा ग्रहण की गुरुजी ने कहा इस मंत्र का जाप करने से तुम स्वर्ग पाओगे यदि इसे किसी और को बतलाया तो नरक के अधि कारी होगे रामनुज ने उस अष्टाक्षर मंत्र के विषय में सभी वर्णों व जातियों को बत दिया गुरु उन पर क्रोधित हुए तो वे बोले यदि एक महामंत्र के जाप से सैकड़ों व्यक्ति स्वर्ग के अधि कारी हो सकते हैं तो मैं नरक की यातनाएँ सहने को सहर्ष तैयार हूँ।

....

....

....

....

....

....

7. नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए और बताइए कि इनमें कौन-से विराम-चिह्नों का प्रयोग किया गया है। सही उत्तर के सामने सही (✓) का चिह्न लगाइए-

क.	हाँ, मैं अवश्य आऊँगा।	अल्प विराम	○	अर्द्ध विराम	○
ख.	मोहन! यहाँ आकर बैठो।	विस्मयादिबोधक	○	योजक	○
ग.	नौकरानी ने झाड़ू लगा दी।	पूर्ण विराम	○	अर्द्ध विराम	○
घ.	तुम्हारा नाम क्या है?	अल्प विराम	○	प्रश्नसूचक	○
ङ.	महात्मा गांधी अर्थात् 'बापू'।	उद्धरणचिह्न	○	पूर्ण विराम	○

8. कल्पनात्मक प्रश्नः-

अगर विराम-चिह्न न होते, तो हमारी भाषा अव्यवस्थित कैसे हो जाती? इस विषय पर सोचिए और लिखिए।

....

....

....

....

....

....

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ पाठ योजना: 29

आज की अवधारणा

छात्रों को मुहावरे व लोकोक्तियों के बारे में बताना। उन्हें परिभाषित करते हुए विभिन्न उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को पता है कि मुहावरे व लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा रोचक एवं प्रवाहपूर्ण बनती है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- मुहावरे व लोकोक्तियों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- मुहावरे व लोकोक्तियों मे अंतर समझने में,
- अलग-अलग मुहावरे व लोकोक्ति सुनकर उनका अर्थ बताने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा में मुहावरे व लोकोक्तियों की उपयोगिता समझाना।
- विभिन्न प्रकार के मुहावरों तथा लोकोक्तियों से परिचित करना।
- वाक्य प्रयोग के दौरान उचित मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग कर अपनी भाषा को प्रभावी बनाना सिखना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में मुहावरे व लोकोक्तियों के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके उनके अर्थ व वाक्य प्रयोग करने के लिए अग्रसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक मुहावरे व लोकोक्तियों तथा उनके अर्थ की परचियाँ बनाए तथा एक समूह को मुहावरे व लोकोक्ति की परचियाँ दें तथा दूसरे समूह को उनके अर्थ की। फिर एक-एक छात्र को खड़ा करके उस परची में लिखा मुहावरा या लोकोक्ति पढ़ने को कहें और दूसरे समूह से उसको सुनकर, जिसके पास उसका अर्थ या उत्तर वाली परची हो, उस छात्र को खड़ा होकर बताने को कहें। इससे छात्र मुहावरे व लोकोक्तियों के अर्थ से भली-भाँति परिचित हो जाएँगे।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर मुहावरे व लोकोक्तियों के अर्थ संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में महत्वपूर्ण मुहावरे व लोकोक्तियों को दर्शाता चार्ट पेपर।
- विद्यालय के पुस्तकालय में मुहावरे व लोकोक्तियाँ संबंधी पुस्तकें।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि उन्हें आज नए अध्याय 'मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को मुहावरे व लोकोक्ति के संबंध में बताकर उसके उदाहरणों के अर्थों को जानने की विज्ञासा उत्पन्न करना	• छात्रों, जब कोई शब्द-समूह, वाक्यांश या वाक्य अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर विशिष्ट अर्थ प्रकट करता है, तो उसे मुहावरा कहते हैं। • उन्हें बताएँ यह एक ऐसा वाक्यांश है, जिसका शाब्दिक अर्थ न होकर लाक्षणिक अर्थ होता है। जब इसका प्रयोग हम वाक्य में करते हैं तो क्रिया, लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार इसमें परिवर्तन होता है। • मुहावरों के प्रयोग से भाषा में विशेष प्रकार का चमत्कार उत्पन्न हो जाता हैं, जिससे भाषा रोचक एवं प्रवाहपूर्ण बन जाती है। • यह जान लें कि मुहावरों का शाब्दिक अर्थ नहीं होता है बल्कि ये एक विशेष अर्थ को निरूपित करते हैं। उदाहरणार्थ: 'कान भरना' इसका अर्थ 'कान में कुछ भरना' न होकर 'चुगली करना' है। • भाषा को रोचक, प्रभावी, मर्मस्पर्शी व आकर्षक बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। • छात्रों को अवगत कराएँ कि मुहावरे प्रकृति, शरीर के अंगों, खाद्य तथा पेय पदार्थों, गिनती, तथा पशु-पक्षियों आदि से संबंधित हो सकते हैं।

	• अब छात्रों को पाठ से मुहावरे लेकर उन्हें स्पष्ट करें तथा फिर लोकोक्ति के बारे में बताएँ कि लोगों में प्रचलित उक्ति (कहावत) लोकोक्ति कहलाती हैं। • लोकोक्ति शब्द 'लोक + उक्ति' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है लोगों द्वारा कही गई उक्ति। यह पुराने रीति-रिवाज़ों, चिरकालीन अनुभवों के आधार पर बनती है और उनका अर्थ वास्तविक जीवन पर सटीक बैठता है। उदाहरणार्थः 'घर का भेदी लंका ढाए' अर्थात् 'आपसी फूट से विनाश होता है।' • उन्हें बताएँ कि मुहावरे वाक्यांश होते हैं किंतु लोकोक्तियाँ अपने-आप में पूर्ण वाक्य हैं। किसी भी बात को समझाने या प्रमाणित करने अथवा पुष्ट करने के लिए लोकोक्ति अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होती है। लोकोक्ति अपने-आप मे एक पूर्ण वाक्य होती है। इसका अर्थ कभी संकेतिक तो कभी साधारण होता है। • छात्रों को लोकोक्तियों के अर्थ वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट करें। जब छात्रों को मुहावरे व लोकोक्तियाँ समझ आ जाएँ उसके बाद श्यामपट्ट पर कुछ मुहावरे व लोकोक्तियाँ लिखें और छात्रों को उनके अर्थ व वाक्य प्रयोग करके लाने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता को (गोला) और कर्म

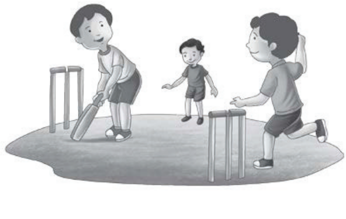

क. राम ने रावण को मारा।

ख. नेहा गाना गा रही है।

ग. नीरा ने वीणा बजानी सीखी।

घ. यहाँ सभी क्रिकेट खेल रहे हैं।

ङ. विद्यार्थी पाठ पढ़ रहे हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. क्रिया किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

....

ख. सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

ग. प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

घ. संरचना के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते हैं? सभी भेदों को लिखिए।

....

....

....

3. निम्नलिखित वाक्यों को उचित मुहावरों से पूरा करें-

क. आयकर अधिकारी को अपने घर आया देखकर ....

....

ख. दिनभर काम करते रहने के कारण ....

....

ग. मेरे पिता जो कह देते हैं, ...

....

घ. आजकल नेता जनता की सेवा करने के स्थान पर अपना ....

....

ङ. अध्यापिका के कक्षा में न होने पर विद्यार्थियों ....

....

4. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया पद छाँटकर उनके भेद भी लिखें-

	क्रिया पद	भेद
क. रमेश पत्र लिख रहा है।	....	....
ख. कमल घूम रहा है।	....	....
ग. बच्चे खाना खा चुके हैं।	....	....
घ. अध्यापिका पढ़ा रही हैं।	....	....

5. **निम्नलिखित क्रिया शब्दों के विभिन्न रूप लिखें-**

क. चल	–	______	______	______
ख. कर	–	______	______	______
ग. पढ़	–	______	______	______
घ. खा	–	______	______	______

6. **निम्नलिखित वाक्यों के क्रिया-भेद लिखिए-**

	भेद
क. चिड़िया उड़ती है।	....
ख. पिताजी ने मुझे गणित समझाया।	....
ग. निधि सो रही है।	....
घ. वह खाना खाकर विद्यालय गया।	....

7. **निम्नलिखित वाक्यों को उचित क्रिया से मिलाइए-**

क. शिक्षिका ने बच्चों को पाठ पढ़ाया।

ख. माताजी खाना बनाती हैं।

ग. पुजारी पूजा कर रहा है।

घ. पुनीत चला जाएगा।

ङ. माताजी खाना बनाती हैं।

च. सीता हँसती है।

अकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया

8. **दिए गए रिक्त स्थानों में क्रिया शब्द लिखकर एक कविता तैयार कीजिए-**

ठंडी हवा .... अति प्यारी,
क्या शोभा .... है क्यारी।
पत्ते यूँ ओस से जड़े ....,
जैसे मोती बिखर पड़े।
.... बालकों हुआ सवेरा,
दूर .... आलस का डेरा।
मुँह .... , थोड़ा कुछ ....।
फिर .... में ध्यान ....।

मौखिक अभिव्यक्ति पाठ योजनाः 30

आज की अवधारणा

छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति के विविध रूपों जैसे– कविता पाठ, संवाद तथा अभिनय, भाषण, वाद-विवाद, चुटकुले/हास्य प्रसंग, वार्तालाप, परिचर्चा, कहानी, श्रुतलेख तथा चित्र अभिव्यक्ति से परिचित कराते हुए उनके उदाहरणों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि मनुष्य दो प्रकार से अपने भावों को अभिव्यक्त कर सकता है– बोलकर और लिखकर। इसी आधार पर भाषा के दो रूप मौखिक एवं लिखित हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में समक्ष हो सकेंगे–

- मौखिक अभिव्यक्ति के अंतर्गत कौन-कौन से रूप शामिल हैं?
- मौखिक अभिव्यक्ति के रूपों के प्रदर्शन के दौरान किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्र मौखिक अभिव्यक्ति के रूपों के प्रदर्शन के दौरान आवश्यक बातों पर ध्यान दे सकेंगे।
- इन रूपों के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्ति करते हुए अपनी बात दूसरों तक पहुँचा सकेंगे।
- दैनिक जीवन में मौखिक अभिव्यक्ति के महत्व को जान पाएँगे।

लक्ष्य कौशल

छात्रों की कल्पनात्मक तथा प्रस्तुतीकरण को पंख देते हुए उनकी मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता का उड़ान देना।

गतिविधियाँ

आपसी संवाद एवं नैतिक विषयों, विद्यालय तथा आस-पास दिखाई पड़ने वरली समस्याओं पर भाषण तैयार करना। गायन विधि तथा उचित हाव-भाव के साथ कविता प्रस्तुतीकरण करना। वर्तमान की किसी घटना पर वाद-विवाद चर्चा का आयोजन

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर कविता वाचन संबंधी वीडियो क्लिप्स।

- समाचार-पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले चुटकुले/हास्य प्रसंग।
- मौखिक अभिव्यक्ति के रूपों से परिचित कराता चार्ट पेपर।
- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध कहानी तथा कविताओं से संबंधित पुस्तकें।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ नए अध्याय से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि उन्हें वह जानकारी दी जा रही है जो उनके पास पहले से है, पर वे उसे पूर्णत: जानते नहीं। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति में सक्षम बनाते हुए उन्हें दूसरों के समक्ष अपने विचार स्वतंत्र रूप से प्रकट करने हेतु प्रेरित करना।	• छात्रों, भाषा का मूल रूप 'मौखिक' भाषा है। मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा मनुष्य समाज के अन्य लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ता है। मौखिक रचना के रूपों के अंतर्गत आने वाले रूप हैं– कविता पाठ, संवाद तथा अभिनय, भाषण, वाद-विवाद, चुटकुले/हास्य प्रसंग, वार्तालाप, परिचर्चा, कहानी तथा श्रुतलेख। • काव्यांश का सस्वर वाचन अथवा गद्यांश का भावानुरूप वाचन मौखिक रचना का प्रमुख अंग है। इसे प्रथम सोपान भी कह सकते हैं। कक्षा में किसी भी पाठ को या कविता को समझने से पूर्व उसका वाचन किया जाता है। • कविता पाठ के दौरान इसके वाचन में यति-गति, आरोह-अवरोह, विराम-चिह्न, उच्चारण की शुद्धता आदि का ध्यान रखना चाहिए। कविता पाठ संबंधी आवश्यक बातों से छात्रों को परिचित कराएँ। • मौखिक अभिव्यक्ति के रूप संवाद तथा अभिनय के बारे में बताएँ कि यह कला मंच प्रस्तुति के अंतर्गत आती है। इसमें संवाद वाचन इस ढंग से किया जाता है, जैसे कि पात्र स्वयं बोल रहा हो। पाठ्यक्रम में रखी गई एकांकी आदि को भी कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा अभिनय करवाते हुए ही समझाना चाहिए। अभिनय की अभिव्यक्ति के समय ध्यान रखने योग्य आवश्यक बातों को अध्यापक द्वारा बताया जाएँ।

	• अगले रूप 'भाषण' से परिचित कराते हुए स्पष्ट करें कि भाषण एक कला है, जो मौखिक दक्षता का मापदंड माना जाता है। आत्मविश्वास उत्पन्न करने का यह एक सक्षम माध्यम है। • भाषण देने से पूर्व उसका अभ्यास करना चाहिए तथा सूक्तियों, मुहावरों एवं प्रासंगिक उदाहरणों का प्रयोग करना चाहिए। भाषण देते समय उच्चारण की स्पष्टता होनी चाहिए। • छात्रों को 'वाद-विवाद' अभिव्यक्ति से अवगत कराएँ कि यह मौखिक भाषा का कौशल है। इसका अभिप्राय है दिए गए विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में विचार प्रस्तुत करना। इससे तर्कशील विचारधारा का कौशल विकसित किया जाता है। उन्हें वाद-विवाद संबंधी आवश्यक बातों से परिचित कराएँ। • मौखिक अभिव्यक्ति के अन्य रूप 'चुटकुले/हास्य प्रसंग' को स्पष्ट करें कि इससे जीवन में सरसता एवं जीवंतता का संचार होता है। इसे सुनाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इससे किसी धर्म या जाति पर कटाक्ष न हो। • यह विषय स्तर के अनुरूप हो। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि चुटकुले सुनाते समय स्वयं नहीं हँसना चाहिए। • छात्रों को बताएँ कि 'वार्तालाप' भी मौखिक अभिव्यक्ति का ही रूप है। दो या दो से अधिक लोगों के बीच होने वाली बातचीत को वार्तालाप कहते हैं। इसका विषय साधारण या विशेष दोनों ही प्रकार का होता है। वार्तालाप के दौरान जिन बातों का ध्यान रखना चाहिए उन्हें छात्रों के समक्ष रखें। • 'परिचर्चा' अभिव्यक्ति के बारे में बताएँ कि समूह में की गई ऐसी बातचीत जिसमें किसी विशेष विषय पर विचार होता है 'परिचर्चा' कहलाती है। इसमें कोई मुख्य वक्ता नहीं होता। एक वक्ता किसी विषय पर बोलता है, फिर दूसरा उठकर विषय से संबंधित प्रश्न करके बात को आगे बढ़ाता है। इस प्रकार सभी की सहभागिता से विषय से संबंधित परतें खुलती जाती हैं। परिचर्चा संबंधी आवश्यक बातों को छात्रों के समक्ष स्पष्ट करें। • मौखिक अभिव्यक्ति के अन्य रूप कहानी के बारे में जानकारी दें कि कहानी सुनना हम सभी को बहुत अच्छा लगता है। कहानी सुनाने का अच्छा ढंग उसे और भी रोचक बना देता है।

	• छात्रों को बताएँ कि इस मौखिक अभिव्यक्ति के दौरान अवसर तथा श्रोताओं के आयु वर्ग का ध्यान रखते हुए कहानी का चयन करना चाहिए। कहानी संबंधी आवश्यक बातों को उनके समक्ष रखें। • 'श्रुतलेख' अभिव्यक्ति से अवगत कराएँ कि सुनकर लिखने की विधा को 'श्रुतलेख' कहते हैं। इस कला से विद्‌यार्थियों में वर्तनी संबंधी अशुद्‌धियाँ करने की संभावना कम हो जाती है। • श्रुतलेख शब्द-स्तर पर भी किया जा सकता है तथा अनुच्छेद रूप में भी। विद्‌यार्थियों को चाहिए कि लिखने से पूर्व शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनें, तत्पश्चात् लिखें। की गई अशुद्‌धियों को पुनः दो-तीन बार लिखें, ताकि भविष्य में उनकी संभावना न रहें। • अंत में उन्हें चित्र अभिव्यक्ति से परिचित कराएँ कि इस विधा के अंतर्गत विद्‌यार्थियों को चित्र दिखाया जाता है, फिर उस चित्र पर कुछ पंक्तियाँ, कहानी या चित्र संबंधी शीर्षक लिखने को कहा जाता है। • इससे विद्‌यार्थियों की विचार शक्ति बढ़ती है। किसी ऐतिहासिक या पौराणिक चित्र को देखकर उस पर बोलने से स्मरण शक्ति व कल्पनाशीलता का विकास होता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्‌देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. 'भारत में स्वच्छता' विषय पर भाषण लेखन कीजिए–

भारत में स्वच्छता

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. **रोगी और वैद्य के बीच संवाद लेखन कीजिए।**

रोगी – ....

वैद्य – ....

रोगी – ....

वैद्य – ....

रोगी – ....

वैद्य – ....

रोगी – ....

वैद्य – ....

रोगी – ....

3. **चुटकुलेः-**

अध्यापक – चिन्टू, तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए?

चिन्टू – सर, कल मैं सपने में अमेरिका चला गया था।

अध्यापक – ठीक है! पिन्टू तुम क्यों नहीं आए?

पिन्टू – सर, मैं चिन्टू को एयरपोर्ट छोड़ने गया था।

अब आपकी बारी

चुटकुले लिखिए

4. **इंटरनेट की सहायता से कोई भी कविता लिखिए जो स्वच्छता अथवा प्रदूषण से संबंधित हो।**

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अपठित गद्यांश   पाठ योजनाः 31

आज की अवधारणा

छात्रों को अपठित गद्यांश के बारे में बताकर उसे परिभाषित करते हुए उसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र अभी तक पठित गद्याशों को पढ़ते तथा हल करते आ रहे हैं क्योंकि वे उनके पाठ्क्रम से संबंधित होते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- अपठित गद्यांश के बारे में सोचने और विचार करने में,
- अपठित गद्यांश को किस प्रकार हल किया जाए, इसे समझने में,
- अपठित गद्यांश को हल करने संबंधी महत्वपूर्ण बातों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- अपठित गद्यांश को हल करना सिखना।
- छात्रों की चिंतन-मनन क्षमता का विकास करना।
- गद्यांश के मूल भाव को समझने की समझ विकसित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों को अपठित गद्यांशों को हल करने संबंधी कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक द्वारा कोई एक गद्यांश पढ़वाते हुए उस पर आधारित प्रश्न बनाते हुए आपसी संवाद के माध्यम से प्रश्नोत्तरी खेलना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध अपठित गद्यांश संबंधी पुस्तकें।
- अपठित गद्यांश को हल करने संबंधी जानकारी देने वाले यूट्यूब पर वीछियो क्लिप्स।

- कक्षा में अपठित गद्यांश संबंधित जानकारी लिखे चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'अपठित गद्यांश' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को अपठित गद्यांश के संबंध में बताना तथा हल करने संबंधी आवश्यक बातों को जानने की उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, अपठित गद्यांश का अर्थ होता है, वे गद्यांश जिन्हें आपने पहले न पढ़ा हो। • ये गद्यांश पाठ्यक्रम की पुस्तक से नहीं लिए जाते। इनका संबंध किसी भी विषय से हो सकता है जैसे– कला, विज्ञान, राजनीति, साहित्य या अर्थशास्त्र। • इसके अंतर्गत किसी भी गद्यांश को पढ़कर तथा सोच–समझकर उसके प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देने होते हैं। • जान लें ये गद्यांश मानसिक व्यायाम करने के साथ–साथ सामान्य ज्ञान में भी वृद्धि करते हैं। • छात्रों को बताएँ कि ये व्यक्तिगत योग्यता एवं अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि करते हैं। इसके अभ्यास से अर्थ ग्रहण की क्षमता का विकास होता है तथा ये व्याकरण संबंधी ज्ञान बढ़ाने में सहायक होते हैं। • अपठित गद्यांशों को हल करते समय हमें निम्नलिखित बातें ध्यान रखनी चाहिए, जो इस प्रकार से हैं– (i) गद्यांश को पहले दो–तीन बार ध्यान से पढ़ना चाहिए। (ii) पूछे गए प्रश्नों के उत्तर गद्यांश में से ढुँढकर उन्हें रेखांकित करना चाहिए। (iii) अपने शब्दों में उत्तर देने का प्रयास करना चाहिए। इसकी भाषा सरल, स्पष्ट तथा उत्तर संक्षिप्त होने चाहिए। (iv) शीर्षक का चुनाव सावधानी से करना चाहिए तथा कम से कम शब्दों में लिखना चाहिए। पहले गद्यांश का केंद्रीय भाव ग्रहण करें। ऐसा करने पर आप शीर्षक आसानी से ढुँढ सकेंगे।

	(v) अशुद्धियों से बचना चाहिए। • छात्रों को पुस्तक से उदाहरण लेकर यह सभी बातें स्पष्ट रूप से समझाएँ। फिर उन्हें कोई अपठित गद्यांश देकर उन्हें हल करने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. मनुष्य का जीवन संसार के छोटे-बड़े प्राणियों और पदार्थों में श्रेष्ठ माना गया है। वह इसलिए कि मनुष्य बड़ा बुद्धिमान और कल्पनाशील प्राणी है। अपने विचारों के बल पर ही वह जो चाहे कर सकता है और बहुत ऊँचा उठ सकता है। परंतु विचार सच्चे, सादे और पवित्र होने के साथ-साथ मनुष्य के व्यावहारिक जीवन से संबंध रखने वाले होने चाहिए। इन्हीं बातों को आधार बनाकर 'सादा जीवन, उच्च विचार' को मानव-जीवन की सफलता की सीढ़ी माना गया है। सादगी मनुष्य के पहनावे से नहीं, बल्कि उसके प्रत्येक हाव-भाव, विचार तथा जीवन के ढंग से टपकनी चाहिए। यही वास्तविक सादगी है, जो विचारों को भी उच्च बनाकर सब प्रकार की उन्नति और विकास का कारण बनती है। संसार का इतिहास इस बात का गवाह है कि आरंभ से ही सादगी पसंद व्यक्ति ही जनता को उच्च विचार देकर उन्नति और विकास की राह प्रशस्त करते आ रहे हैं। महात्मा बुद्ध, संत कबीर, गुरु नानक, महात्मा गांधी, डॉ. राधाकृष्णन, विनोबा भावे आदि इस तथ्य के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

   क. उपर्युक्त गद्यांश के लिए शीर्षक दीजिए।

   ....

   ख. मनुष्य का जीवन श्रेष्ठ क्यों माना जाता है और क्यों?

   ....

   ....

   ग. मनुष्य अपने विचारों के बल पर क्या-क्या कर सकता है?

   ....

   ....

   ....

   ....

   घ. उन्नति करने के लिए मनुष्य के विचार कैसे होने चाहिए?

   ....

   ङ. वास्तविक सादगी क्या है, बताइए।

   ....

....

....

....

2. पेड़-पौधों के साथ मानव का बहुत पुराना संबंध है। वृक्षों के अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पेड़-पौधे मनुष्य की अनेक प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। ये केवल सौंदर्य और सुरक्षा के साधन मात्र नहीं हैं, अपितु हमारे जीवनदाता भी हैं। जिस प्रकार माता अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं, वैसे ही पेड़-पौधे भी हमें शुद्ध वायु देकर जीवित रखते हैं। पेड़-पौधों से प्राप्त अनेक पदार्थ पर अनेक उद्योग-धंधे आश्रित रहते हैं। ये वातावरण को शुद्ध करने के साथ-साथ प्रदूषण भी रोकते हैं। दुर्भाग्यवश जिस प्रकार वनों को निरंतर काटा जा रहा है, उसके कारण सूखा, बाढ़, भूकंप जैसी प्राकृतिक विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा है। भारतीय संस्कृति में तो अनेक वृक्षों को पवित्र माना गया है। वृक्षों के महत्व को ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार ने वन महोत्सव कार्यक्रम प्रारंभ किया है जो प्रतिवर्ष जुलाई माह में मनाया जाता है।

क. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

....

ख. वनों के काटने से क्या दुष्परिणाम हो रहे हैं?

....

ग. पेड़-पौधों से मनुष्य की कौन-कौन सी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं?

....

घ. वृक्षों को मनुष्य का जीवनदाता क्यों कहा जाता है?

....

ङ. 'महोत्सव' शब्द का संधि-विच्छेद कीजिए।

....

च. 'प्रदूषण' और 'प्रतिवर्ष' शब्द किस-किस उपसर्ग से मिलकर बने हैं?

....

3. स्वस्थ शरीर वाला मनुष्य ही इस संसार के सभी प्रकार के सुखों को भोग सकता है तथा सुखमय जीवन बिता सकता है। स्वस्थ शरीर के लिए पौष्टिक भोजन तथा व्यायाम दोनों ही अति आवश्यक हैं। व्यायाम करने का भी ढंग होता है। इसे करते समय कुछ सावधानियाँ सदैव बरतनी चाहिए। पहली सावधानी यह है कि आयु, समय व शरीर की क्षमता के अनुसार ही व्यायाम करना चाहिए। दूसरी सावधानी यह है कि सही व्यायाम का चुनाव करना चाहिए तथा व्यायाम की उचित मात्रा निश्चित करनी चाहिए। तीसरी सावधानी यह है कि शुद्ध वायु, प्रकाश वाले खुले स्थान में व्यायाम करना चाहिए। व्यायाम के तुरंत बाद स्नान नहीं करना चाहिए। व्यायाम के अनेक लाभ हैं- इससे शरीर में शुद्ध रक्त का संचार होता है, भोजन ठीक से पचता है और शरीर पुष्ट बनता है, थकान का अनुभव कम होता है तथा मस्तिष्क भी स्वस्थ रहता है।

क. उपयुक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

....

ख. कैसा मनुष्य संसार के सभी सुख भोग सकता है?

....

ग. स्वस्थ शरीर के लिए क्या-क्या आवश्यक है?

....

घ. व्यायाम करते समय क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

....

....

....

4. लोकगीत अपनी लोच, ताज़गी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न है। यह सीधे जनता का संगीत है। यह घर, गाँव व नगर की जनता का गीत है। इसके लिए साधना की आवश्यकता नहीं होती। यह त्योहारों तथा विशेष अवसरों पर गाया जाता है। इसके रचनाकार अधिकतर गाँव के निवासी होते हैं। स्त्रियों ने इसकी रचना में विशेष योगदान दिया है। यह बाजों की मदद के बिना ही या साधारण ढोलक, झाँझ, बाँसुरी, करताल आदि की सहायता से गाया जा सकता है। एक समय था, जब शास्त्रीय संगीत के सामने इसे हेय समझा जाता था, परंतु साधारण जनता की ओर जब से लोगों की नज़र गई है, तब से कला और साहित्य के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। अनेक लोगों ने विविध बोलियों के लोक साहित्य और लोकगीत के संग्रह के लिए कमर कस ली है और इस प्रकार के अनेक संग्रह अब तक प्रकाशित भी हो गए हैं।

क. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है:-

अ. लोगों का गीत ब. शास्त्रीय गीत स. लोकगीत द. आज का लोकगीत

ख. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

....

ग. लोकगीत किसका गीत है और क्यों?

....

....

घ. लोकगीत शास्त्रीय संगीत से किस प्रकार अलग है?

....

ङ. लोकगीत किसकी सहायता से बजाया जाता है?

....

....

च. गद्यांश में किन वाद्य यंत्रों का प्रयोग हुआ है?

....

अपठित पद्यांश   पाठ योजनाः 32

आज की अवधारणा

छात्रों को अपठित पद्यांश के बारे में बताकर उसे परिभाषित करते हुए उसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र अभी तक कविताएँ पढ़ते व सुनते आ रहे हैं। वे पठित पद्यांश का हल करना जानते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- अपठित पद्यांश के बारे में सोचने और विचार करने में,
- अपठित पद्यांश को किस प्रकार हल किया जाए, इसे समझने में,
- अपठित पद्यांश को हल करने संबंधी महत्वपूर्ण बातों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- अपठित पद्यांशों को हल करना सिखना।
- काव्य के प्रति अपना रुझान उत्पन्न करना।
- पद्यांश के मूल भाव को समझने की समझ विकसित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में अपठित पद्यांशों को हल करने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करना तथा इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को आपसी चर्चा करते हुए इंटरनेट के माध्यम से कविताओं को कंठस्थ करने और उनके मूल भाव को समझकर लिखकर लाने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध अपठित-पद्यांश संबंधी पुस्तकें।
- यूटयूब पर अपठित पद्यांश को हल करने संबंधी जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में अपठित पद्यांश संबंधित जानकारी देते चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'अपठित पद्यांश' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को अपठित पद्यांश के संबंध में बताना तथा हल करने संबंधी आवश्यक बातों को जानने की उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, अपठित पद्यांश का अर्थ है कविता का ऐसा अंश जिसे आपने अपनी हिंदी की पाठ्य-पुस्तक में पहले न पढ़ा हो। • उन्हें बताएँ कि इसके अंतर्गत छात्रों को संपूर्ण कविता न देकर उसका एक अंश दिया जाता है जिस पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं। • उन्हें समझाएँ कि अपठित पद्यांश को पहली बार पूरे मनोयोग से पढ़ना चाहिए तथा उसके अर्थ को जानने का प्रयास करना चाहिए। • इन पद्यांशों के माध्यम से छात्रों के भाव ग्रहण क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है। • छात्रों को अपठित पद्यांशों को हल करते समय निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखना चाहिए, जो कि इस प्रकार हैं– (i) पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके प्रश्नों को ध्यान से पढ़ना चाहिए। (ii) प्रश्नों को पढ़ने के पश्चात् पद्यांश को पुनः पढ़िए तथा उन पंक्तियों को चुनिए जिनमें प्रश्नों के उत्तर मिलने की संभावना हो। (iii) जो उत्तर आसानी से मिलते जाएँ, उन्हें लिखते रहिए। (iv) कुछ प्रश्न कठिन व सांकेतिक होते हैं। उनका उत्तर देने के लिए पद्यांश का हाव-भाव समझना बहुत जरूरी है। (v) प्रश्नों के उत्तर को अपने शब्दों में लिखिए। (vi) प्रतीकात्मक व लाक्षणिक शब्दों के उत्तर एक से अधिक शब्दों में दीजिए। इससे उत्तरों की स्पष्टता बढ़ेगी। • अध्यापक, छात्रों को पाठ से उदाहरणों को स्पष्ट करते हुए बताएँ कि पद्यांश को किस प्रकार हल किया जाता है।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. अंबा, तात कब आयेंगे?
धीरज धर बेटा, अवश्य हम उन्हें एक दिन पाएँगे।
मुझे भले ही भूल जाएँ वे, तुझे क्यों न अपनाएँगे।
कोई पिता न लाया होगा, वह पदार्थ वे लाएँगे।
माँ तब पिता-पुत्र हम दोनों संग-संग फिर जाएँगे।
देना तू पाथेय, प्रेम से विचर-विचर कर खाएँगे।
पर अपने इन सूने दिन तुझको कैसे पाएँगे?

क. माता के अनुसार पिता पुत्र के लिए क्या लाएँगे?

....

ख. पुत्र क्या सोचकर प्रसन्न है?

....

ग. 'अंबा' शब्द के चार पर्यायवाची लिखिए।

....

घ. 'प्रेम' शब्द का तद्भव रुप लिखिए।

....

ङ. उपर्युक्त पद्यांश में पुत्र किसके आने की राह देख रहा है?

....

2. हवा हूँ हवा मैं बसंती हवा हूँ!
सुनो बात मेरी-अनोखी हवा हूँ।
बड़ी बावली हूँ, बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फ़िकर है, बड़ी ही निडर हूँ।
जिधर चाहती हूँ उधर घूमती हूँ,
मुसाफ़िर अजब हूँ।
जहाँ से चली मैं, जहाँ को गई मैं,
शहर, गाँव, बस्ती, नदी, रेत, निर्जन, हरे खेत, पोखर
झूलती चली मैं, झुमाती चली मैं!

हवा हूँ हवा मैं बसंती हवा हूँ!

क. हवा कहाँ-कहाँ घूमती है?

....

ख. हवा ने अपनी कौन-सी विशेषताएँ बताई हैं?

....

ग. 'खेत' और 'गाँव' शब्द के तत्सम रूप लिखिए।

....

घ. 'निर्जन' शब्द का संधि-विच्छेद कीजिए।

....

ङ. उपर्युक्त पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

....

3. पल को मत व्यर्थ समझ लेना,
जीवन का पल-पल सोना है।
कब बीता समय लौट पाता,
इसका न एक पल खोना है।
जो पल को नहीं सँभाल सका,
उसके घंटे-दिन उड़ जाते।
मंजिल की ओर बढ़े पग भी
बरबस पीछे को मुड़ जाते।
जो मोल नहीं पल का समझा,
वह आगे कभी न बढ़ता है।
जो सदुपयोग करता पल का,
वह उच्च शिखर पर चढ़ता है।

क. जीवन के हर पल को कवि ने किसके समान बताया है?

....

ख. मंजिल की ओर बढ़ते हुए किसके पैर पीछे को मुड़ जाते हैं?

....

ग. उन्नति के शिखर पर कौन चढ़ता है?

....

घ. पद्यांश का कोई उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

....

4. नया मार्ग अपनाना होगा!
लीक-लीक चलने वालों को,

नई रीति बतलाना होगा!
नया मार्ग अपनाना होगा!
दुनिया बहुत बढ़ गई आगे
और अभी हम वहीं खड़े हैं!
उन्हीं पुराने आदर्शों को
कसकर पकड़े हुए अड़े हैं!
नई कल्पना, नई कामना
नए विचार जगाना होगा!
नया मार्ग अपनाना होगा!

क. कवि किस बात का आग्रह कर रहे हैं?

....

ख. कैसे लोगों को नया रास्ता बतलाना होगा?

....

ग. कवि को किस बात का दुख है?

....

घ. कवि हमें किस तरह के परिवर्तन लाने के लिए कह रहे हैं?

....

ङ. इस पद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

....

दैनंदिनी-लेखन

पाठ योजनाः 33

आज की अवधारणा

छात्रों को दैनंदिनी-लेखन के बारे में बताना तथा उसे परिभाषित करते हुए उसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को पता है कि दैनंदिनी लेखन में अपने अनुभवों एवं घटनाओं को सहेजकर रखा जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- दैनंदिनी-लेखन के बारे में सोचने और विचार करने में,
- दैनंदिनी-लेखन संबंधी आवश्यक बातों को जानने में,
- अपनी प्रतिदिन की प्रिय व अप्रिय सभी घटनाओं को लिखने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- दैनंदिनी लेखन का उद्देश्य व महत्व बताना।
- दैनंदिनी के माध्यम से अपनी दिन-प्रतिदिन की घटनाओं को लिखना सीखना।
- दैनंदिनी लेखन के उद्देश्य तथा आवश्यक बातों को ध्यान में रखते हुए प्रभावी दैनंदिनी लिखना सिखना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में दैनंदिनी–लेखन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों से उनके दैनिक जीवन की घटनाओं पर बातचीत करते हुए दैनंदिनी लिखने को कहना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में दैनंदिनी–लेखन संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर दैनंदिनी की आवश्यक जानकारी व उद्देश्य संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में दैनंदिनी–लेखन हेतु आवश्यक बातों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरूआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'दैनंदिनी–लेखन' विषय पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को अपठित पद्यांश के संबंध में बताना तथा हल करने संबंधी आवश्यक बातों को जानने की उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, दैनंदिनी–लेखन में किसी व्यक्ति द्वारा दिनभर की घटनाओं और अनुभवों को क्रमबद्ध रूप से लिखा जाता है। • इसमें व्यक्ति के निज अनुभव, तथ्य संग्रह, प्रतिदिन घटित होने वाली घटनाओं का लेखा-जोखा, संपर्क में आए व्यक्तियों, नए स्थानों, नए अनुभवों व नई घटनाओं आदि का संक्षिप्त वर्णन होता है। • उन्हें बताएँ कि दैनंदिनी-लेखन को डायरी-लेखन भी कहा जाता है। इसमें प्रतिदिन की विशेष घटनाओं को लिखकर हम उन्हें यादगार बना लेते हैं। • दैनंदिनी सही अर्थ में एक मित्र की तरह होती हैं। जिस प्रकार हम फोटो देखकर उस अवसर की याद को ताजा कर लेते हैं, उसी प्रकार दैनंदिनी के माध्यम से हम अतीत में लौट सकते हैं तथा अपने खट्टे–मीठे अनुभवों को पुनर्जीवित कर सकते हैं। • प्रसिद्ध व महान व्यक्ति भी दैनंदिनी लिखते थे। कई बार उनकी दैनंदिनी आत्मकथा का रूप ले लेती हैं जिससे हम उन महान व्यक्तियों के विचारों, अनुभवों व दिनचर्या के बारे में जान पाते हैं। • छात्रों को बताएँ कि दैनंदिनी लिखते समय कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है, जो इस प्रकार हैं– (i) पृष्ठ में सबसे ऊपर तिथि, दिन तथा लिखने का समय अवश्य लिखें। (ii) इसे प्रायः सोने से पहले लिखें, ताकि पूरे दिन में घटित सभी विशेष घटनाओं को लिख सकें। (iii) दैनंदिनी के अंत में अपने हस्ताक्षर करें, ताकि वह आपके व्यक्तिगत दस्तावेज़ बन सकें। (iv) दैनंदिनी लिखते समय सरल व स्पष्ट भाषा का प्रयोग करें। • दैनंदिनी ऐतिहासिक तथ्यों को सामने लाकर उनका करीबी से मूल्यांकन करवाती है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. गरमी की छुट्टियों में नाना-नानी के घर जाने पर, नाना-नानी से हुई मुलाकात का वर्णन करते हुए दैनंदिनी लिखिए।

2. जन्माष्टमी के मेले के अनुभव पर दैनंदिनी (डायरी) लेखन कीजिए-

3. स्कूल की तरफ़ से अपने मित्रों के साथ पिकनिक जाने पर दैनंदिनी-लेखन कीजिए-

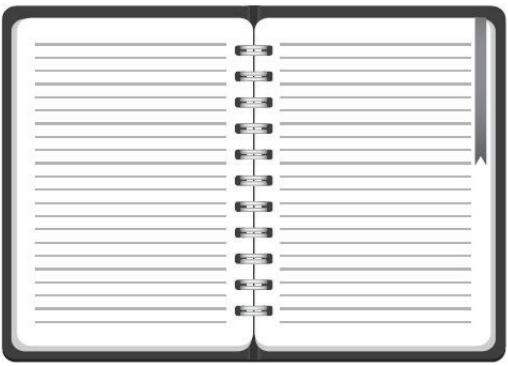

संवाद-लेखन

पाठ योजनाः 34

आज की अवधारणा

छात्रों को संवाद-लेखन के बारे में बताते हुए इसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में आपसी संवादों का प्रयोग करते ही रहते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- संवाद-लेखन से क्या अभिप्राय है, इसे जानने में तथा
- संवाद-लेखन के दौरान किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए, इसे समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को भाषा प्रयोग के दौरान संवाद-लेखन की उपयोगिता से परिचित कराना।
- छात्रों के भीतर संवाद-लेखन की क्षमता का विकास करना।
- संवाद-लेखन का महत्व स्पष्ट करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर संवाद-लेखन के प्रति कौतूहलता उत्पन्न करके किसी भी विषय पर संवाद लिखने की योग्यता का विकास करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को अपनी पसंद के किसी वर्तमान मुद्दे पर संवाद-लेखन करने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में संवाद संबंधी साहित्यिक पुस्तकें।
- यूट्यूब पर संवाद-लेखन की जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।
- संवाद-लेखन संबंधी आवश्यक बातों तथा इसके उदाहरण को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'संवाद-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों के भीतर संवाद-लेखन की क्षमता का विकास करना।	• छात्रों को बताएँ कि किसी भी दी गई स्थिति पर दो या अधिक पात्रों के बीच बातचीत को संवाद में लिखना 'संवाद-लेखन' कहलाता है। • हम सभी बातचीत के दौरान संवादों का प्रयोग करते हैं। संवाद का विषय कुछ भी हो सकता है। • बातचीत को आकर्षक और प्रभावशाली बनाने में संवादों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। • उन्हें स्पष्ट करें कि संवाद मौखिक अभिव्यक्ति भी हो सकती है और लिखित भी। मौखिक संवाद में वक्ता और श्रोता दोनों आमने-सामने होते हैं इसलिए उसमें दूसरे के कथन को सुनकर संवाद बोले जाते हैं। वहीं लिखित संवाद में लेखक अपनी कल्पना से ही दो या अधिक पात्रों के संवाद लिखता है। • संवाद-लेखन के दौरान कुछ विशेष बातों पर ध्यान देना आवश्यक है, जो हैं– i) संवाद की भाषा सरल, स्पष्ट, पात्रानुकूल व भावानुकूल होनी चाहिए। ii) वाक्य रोचक व संक्षिप्त होने चाहिए। iii) संवाद घटना, परिस्थिति तथा समय के अनुकूल होने चाहिए। iv) संवादों में क्रमबद्धता होनी चाहिए। • संवाद-लेखन का कार्य प्रायः नाटकों, एकांकी, रंगमंच आदि के लिए किया जाता है। कहानियों और उपन्यासों के बीच-बीच में भी छोटे-छोटे संवादों का प्रयोग किया जाता है।

	• सभी व्यक्तियों के बातचीत का ढंग अलग-अलग होता है। उनके विचार और भाषा भी अलग-अलग होती है। इसका ध्यान रखते हुए उन्हीं की भाषा और उन्हीं के तरीके से संवाद-लेखन किया जाना चाहिए।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. बढ़ते हुए महिला अपराध के संदर्भ में दो महिलाओं के मध्य होने वाला संवाद लिखिए।

महिला (पहली) – ....

महिला (दूसरी) – ....

महिला (पहली) – ....

महिला (दूसरी) – ....

महिला (पहली) – ....

महिला (दूसरी) – ....

महिला (पहली) – ....

महिला (दूसरी) – ....

महिला (पहली) – ....

महिला (दूसरी) – ....

2. दो मित्रों के बीच वृक्षारोपण पर संवाद लेखन कीजिए।

सोमेश – ....

नीरव – ....

सोमेश – ....

नीरव – ....

सोमेश – ....

नीरव – ....

सोमेश – ....

नीरव – ....

सोमेश – ....

नीरव – ....

3. क्रिकेट मैच पर दो मित्रों के मध्य होने वाला संवाद लिखिए।

मनोज – ....

राहुल – ....

मनोज – ....

राहुल – ....

मनोज – ....

राहुल – ....

मनोज – ....

राहुल – ....

मनोज – ....

राहुल – ....

4. अध्यापिका और विद्यार्थी के बीच संवाद लिखिए।

अध्यापिका – ....

सुरेंद्र – ....

अध्यापिका – ....

सुरेंद्र – ....

अध्यापिका – ....

सुरेंद्र – ....

अध्यापिका – ....

सुरेंद्र – ....

अध्यापिका – ....

सुरेंद्र – ....

सूचना-लेखन　　पाठ योजनाः 35

आज की अवधारणा

छात्रों को सूचना–लेखन के बारे में बताना तथा उसे परिभाषित करते हुए उसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र अपने आस–पास के वातावरण में विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को पढ़ते व सुनते आ रहे हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- सूचना-लेखन के बारे में सोचने और विचार करने में,
- सूचना-लेखन संबंधी आवश्यक बातों को जानने में,
- अलग-अलग विषयों पर सूचना लिखने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि सूचना–लेखन क्या है।
- दैनिक जीवन में सूचनाओं का महत्व बताना।
- सूचना लिखते समय किन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इसकी जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में सूचना–लेखन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक, छात्रों को समाचार पत्र व पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली सूचनाओं को एकत्रित करके अपनी स्क्रैपबुक में चिपकाने को कहें।

पाठ–विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध सूचना–लेखन संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर विभिन्न प्रकार की सूचनाओं संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में सूचना–लेखन हेतु आवश्यक बातों की जानकारी देने वाले चार्ट–पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'सूचना–लेखन' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवध ारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को सूचना–लेखन के संबंध में बताना तथा सूचना–लेखन के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, अंग्रेज़ी शब्द ष्टछवजपबमष्ठ को हिंदी की तकनीकी शब्दावनी में 'सूचना' कहा जाता है। सूचन से तात्पर्य है– किसी बारे में सूचित करना। • आँकड़ों के साथ भविष्य में होने वाले समारोह, कार्यक्रम आदि के विषय में बताना 'सूचना' कहलाता है। • सूचना के ज़रिए लोगों को भविष्य की घटनाओं से परिचित कराया जाता है। • उन्हें बताएँ कि सूचना दो प्रकार की हो सकती हैं– सुखद एवं दुखद। • सुखद सूचना के अंतर्गत खेल, प्रतियोगिता समारोह आदि की जानकारी आती है तथा • सूचना के अंतर्गत किसी की मृत्यु, दुर्घटना आदि संबंधी जानकारी दी जाती है • सूचना–लेखन के दौरान कुछ बातों का ध्यान रखा जाता है, ये इस प्रकार हैं– (i) सूचना संक्षिप्त एवं सरल होनी चाहिए। (ii) सूचना का एक उचित शीर्षक दें। (iii) सूचना क्या और किन्हें देनी हैं। (iv) सूचना विषय की समय–सीमा देना। (v) सूचना अधिक लंबी न हो। (vi) 'सूचना' शब्द बड़े और मोटे अक्षरों में लिखा हो। (vii) सूचना बॉक्स के अंदर लिखी जानी चाहिए। (viii) शब्द उस बॉक्स को छूने नहीं चाहिए।

	• छात्रों के समक्ष पाठ में दिए गए उदाहरणों को एक–एक करके स्पष्ट कीजिए। • छात्रों को कई समूहों में बाँटकर समाचार–पत्र के अंश दें तथा उसे पढ़कर प्रत्येक समूह अपने सदस्यों के साथ मिलकर किसी विषय पर सूचना–लेखन करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित विषयों पर सूचना तैयार कीजिए-

1. दिल्ली पब्लिक स्कूल की साहित्य संगठन की अध्यक्षा होने के नाते विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को कविता–प्रतियोगिता के आयोजन की सूचना दीजिए।

2. आपकी पुस्तक स्कूल में खो गई है। इसके लिए सूचना-पत्र तैयार कीजिए।

3. विद्यालय की ओर से निःशुल्क नेत्र जाँच का आयोजन किया जा रहा है। विद्यालय के प्रधानाचार्य की ओर से सूचना-पत्र तैयार कीजिए।

4. विद्यालय में होने वाले वार्षिकोत्सव के लिए सूचना-पत्र तैयार कीजिए।

5. आपको खेल के मैदान में एक घड़ी मिली है। इस विषय पर नीचे दिए जा रहे सूचना-पत्र को पूरा कीजिए।

बालभवन पब्लिक स्कूल

सूचना

एक घड़ी मिली है!

दिनांक ____________

आप सभी छात्र-छात्राओं ____________

पत्र-लेखन

पाठ योजनाः 36

आज की अवधारणा

छात्रों को पत्र-लेखन के बारे में बताना। उसकी महत्ता से अवगत कराते हुए पत्र-लेखन विधि से परिचित कराना। पत्र-लेखन संबंधी आवश्यक जानकारी व उसके प्रकारों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि पत्र-लेखन के माध्यम से हम रिश्तेदारों का हाल-चाल तो जान ही सकते हैं साथ ही विभिन्न समस्याओं से संबंधित पत्र भी लिख सकते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- पत्र-लेखन के बारे में सोचने और विचार करने में,
- पत्र के कितने प्रकार हैं तथा वे कौन-से हैं? ये जानने में,
- पत्र-लेखन संबंधी लाभों को जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि पत्र-लेखन की जीवन में कितनी उपयोगिता है।
- पत्र-लेखन संबंधी लाभों से अवगत कराना।
- पत्र-लेखन की विधि से परिचित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में पत्र–लेखन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक, छात्रों को अपने निर्देशन में पत्र के प्रारूप के अनुसार अपने सहपाठी अथवा मित्र को पत्र लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध पत्र–लेखन संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर पत्रों के उदाहरण संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में पत्र–लेखन की विधि संबंधी जानकारी देने वाले चार्ट–पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'सूचना–लेखन' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को पत्र–लेखन के संबंध में बताना। उनमें पत्र के प्रारूप व उसकी विधि के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, आज के समय में इंटरनेट और मोबाइल फ़ोन ने संदेशवाहक का काम शुरू कर दिया है। पत्र लिखने की कला समाप्त होती जा रही है, किंतु फिर भी पत्र-लेखन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। पत्र के द्वारा हम अपने भावों को बहुत सुंदर ढंग से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचा सकते हैं। • छात्रों को पत्र-लेखन के लाभों के बारे में बताएँ, जो इस प्रकार से हैं– (i) निकटतम संबंधियों, मित्रों आदि को पत्र लिखकर हम उनसे जुड़े रहते हैं। (ii) शिकायती पत्रों द्वारा हम अपनी समस्या संबंधित कार्यालय तक पहुँचाते हैं तथा प्रशंसा–पत्रों द्वारा दूसरों का मनोबल ऊँचा करते हैं। (iii) संपर्क साधने का यह सर्वात्तम साधन है। (iv) वर्तमान समय में पत्र–लेखन का प्रयोग कम होता जा रहा है किंतु हिंदी पाठ्यक्रम में इस विधा को स्थान देकर हम इसे जीवंतता प्रदान करते आ रहे हैं। • पत्र दो प्रकार के होते हैं– (i) अनौपचारिक पत्र– इनमें पारिवारिक, व्यक्तिगत एवं निमंत्रण-पत्र आदि शामिल होते हैं। (ii) औपचारिक पत्र-इस प्रकार के पत्रों में कार्यालयों, व्यापारिक संस्थाओं, संपादकों आदि को लिखे जाने वाले पत्र शामिल हैं। पूछताछ संबंधी पत्र, शिकायती-पत्र, आवेदन-पत्र, सूचना और तत्संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए लिखे जाने वाले पत्र भी इसके अंतर्गत आते हैं।

	• उन्हें बताएँ कि पत्र को ढंग से लिखा जाए तो वह पाठक के हृदय पर अधिक प्रभाव छोड़ता है। प्रत्येक पत्र को लिखने की एक विधि होती है। अतः उसी विधि के अनुरूप हमें पत्र–लेखन करना चाहिए। • अनौपचारिक पत्र को लिखने के लिए उसका प्रारूप बनाना चाहिए जिसमें बाईं ओर पत्र भेजने वाले का पता, दिनांक, संबोधन, अभिवादन, संदेश और तत्पश्चात् पत्र लिखने वाले का भेजने वाले से संबंध और पत्र-प्रेषक का नाम लिखा जाना चाहिए। • अध्यापक पाठ से अनौपचारिक पत्र का उदाहरण देते हुए उन्हें प्रारूप स्पष्ट करें। • अब औपचारिक पत्र का प्रारूप छात्रों को बताएँ कि इसमें बाईं ओर पत्र भेजने वाले का पता (केवल व्यावसायिक पत्र में), पद पाने वाले का पद नाम और पता, दिनांक, विषय, संबोधन, विषय संबंधित जानकारी तथा समापन करते हुए पत्र लिखने वाले का नाम लिखा जाना चाहिए। • अध्यापक पाठ से औपचारिक पत्र का उदाहरण देते हुए उन्हें प्रारूप को स्पष्ट करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखिए-

<u>औपचारिक पत्र</u>

1. नगर-निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को अपने क्षेत्र की सफाई के लिए पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. खेल का सामान उपलब्ध कराने के लिए प्रधानाचार्य को पत्र।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. आर्थिक सहायता (छात्रवृत्ति)के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अनौपचारिक पत्र

1. आप छात्रावास में रहते हैं, अत: पिताजी से रुपए मँगवाने हेतु पत्र लिखिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2. मित्र को पुरस्कार मिलने पर बधाई-पत्र लिखिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

3. अत्यधिक फैशन से बचने के लिए प्रेरणा देते हुए छोटी बहन को पत्र लिखिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

अनुच्छेद-लेखन
पाठ योजनाः 37

आज की अवधारणा

छात्रों को अनुच्छेद-लेखन के बारे में बताना तथा उससे संबंधित आवश्यक जानकारी देते हुए उदाहरणों का अवबोधन करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र अनुच्छेद–लेखन संबंधी सामान्य परिचय से अवगत हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में अनुच्छेद-लेखन संबंधी रुची जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- अनुच्छेद-लेखन क्या है, यह जानने में,
- अनुच्छेद-लेखन संबंधी ध्यान रखने योग्य आवश्यक बातों को जानने में,
- इस बात को समझने में कि अनुच्छेद-लेखन में अपने विचारों को किस प्रकार व्यक्त किया जाता है।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- कम-से-कम शब्दों में अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए अनुच्छेद-लेखन करना सीखना।
- अनुच्छेद-लेखन के माध्यम से अपनी सृजनात्मकता तथा चिंतन-मनन क्षमता को विकसित करना।
- लेखन-कौशल की योग्यता का विकास करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में अनुच्छेद-लेखन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों से हर सप्ताह किसी घटना अथवा अनुभव को संक्षिप्त रूप में लिखकर लाने को कहना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों से संबंधित अनुच्छेद-लेखन संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अनुच्छेद-लेखन की जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में अनुच्छेद-लेखन संबंधी आवश्यक बातों कि जानकारी देता हुआ चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अनुच्छेद-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को पत्र–लेखन के संबंध में बताना। उनमें पत्र के प्रारूप व उसकी विधि के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, अनुच्छेद-लेखन गद्य की लघु विधा है। इसमें किसी विचार, अनुभव या दृश्य अथवा घटना को कम से कम शब्दों में व्यक्त किया जाता है। • अनुच्छेद-लेखन सृजनात्मकता क्षमता में वृद्धि करने में अत्यंत सहायक है। • 'अनुच्छेद' शब्द अंग्रज़ी भाषा के ष्च्तंहतंचीष्ठ शब्द का हिंदी पर्याय है। यह निबंध का संक्षिप्त रूप होता है। • अनुच्छेद में हर वाक्य मूल विषय से जुड़ा रहता है। अनावश्यक विस्तार के लिए इसमें कोई विस्तार नहीं होता। • उन्हें बताएँ कि इसमें घटना अथवा विषय से संबद्ध वर्णन संतुलित तथा स्वंय में पूर्ण होना चाहिए। • इस बात से भी छात्रों का अवगत कराएँ कि यह किसी लेख, निबंध या रचना का अंश भी हो सकता है, किंतु यह स्वंय में पूर्ण होना चाहिए। • अनुच्छेद–लेखन के अंतर्गत विषय के विस्तार का स्थान नहीं होता, बल्कि उसे संक्षिप्त तथा सारगर्भित ढंग से लिखा जाता है। • अनुच्छेद–लेखन के दौरान निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए– (i) अनुच्छेद लिखने से पूर्व उसकी रूपरेखा, संकेत–बिंदु आदि बनाने चाहिए। (ii) इसमें विषय के किसी एक पक्ष का ही वर्णन करें। (iii) भाषा सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली होनी चाहिए। (iv) एक ही बात को बार–बार न दोहराएँ। (v) शब्द–सीमा को ध्यान में रखकर ही अनुच्छेद लिखें। (vi) पूरे अनुच्छेद में एकरूपता होनी चाहिए।

	(vii) अनुच्छेद में विषय से संबंधित बात को लगभग 150 शब्दों में लिखना चाहिए • उन्हें बताएँ कि यदि अनुच्छेद के प्रारंभ में विषय से संबंधित सूक्ति, उदाहरण या कविता की कोई पंक्ति लिख दी जाए तो उसकी प्रभावशीलता और अधिक बढ़ जाती है। • छात्रों को अलग–अलग समूहों में विभाजित कर उन्हें समाचार–पत्र का एक–एक अंश देकर पढ़ने को कहें। अब प्रत्येक समूह को आपसी विचार–विमर्श कर अनुच्छेद लिखने को कहें। • अध्यापक छात्रों को श्यामपट्ट पर कुछ संकेत–बिंदु देकर भी उनसे अनुच्छेद–लेखन करा सकते हैं।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए-

1. पुस्तकालय

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. पेड़ हमारे मित्र

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

3. सागर तट की सैर

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

4. मीठी बोली

....
....
....
....
....

5. होली का त्योहार

6. श्रम का महत्व

निबंध-लेखन

पाठ योजना: 38

आज की अवधारणा

छात्रों को निबंध–लेखन के बारे में बताना। उनसे संबंधित आवश्यक जानकारी देते हुए उदाहरणों से परिचित करना। निबंध के तीनों अंगों के बारे में समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र यह जानते हैं कि निबंध के भीतर कई अनुच्छेद शामिल होते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- निबंध–लेखन के बारे में सोचने और विचार करने में,
- निबंध–लेखन संबंधी ध्यान रखने योग्य आवश्यक बातों को जानने में,
- इस बात को समझने में कि निबंध–लेखन में अपने विचारों को किस प्रकार व्यक्त किया जाता हैं।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- अच्छे निबंध की विशेषताओं के बारे में बताना।
- निबंध–लेखन की उपयोगिता को समझाना।
- निबंध के अंगों से परिचित कराना तथा विषय की दृष्टि से कितने प्रकार के निबंध होते हैं, यह बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में पत्र–लेखन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक आपसी बातचीत द्वारा किसी विषय से संबंधित संकेत–बिंदु दें या कोई अलग–अलग चित्र दिखाएँ तथा छात्रों को फिर उससे संबंधित निबंध लिखकर लाने को कहें।

पाठ–विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध निबंधात्मक पुस्तकें।
- यूट्यूब पर निबंध–लेखन संबंधी आवश्यक जानकारी देते वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में निबंध के अंगों व महत्वपूर्ण जानकारी लिखे हुए चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरूआत उनकी मुसकराहट के साथ–साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज नए अध्याय 'निबंध-लेखन' पर जानकारी दी जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को निबंध –लेखन के बारे में बताना तथा निबंध के अंगों को जानने संबंधी उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, निबंध लिखना भी एक कला है। इसका अर्थ है– 'बँधा हुआ' अर्थात् 'एक सूत्र में बँधी हुई रचना।' हिंदी का 'निबंध' शब्द अंग्रज़ी के 'Essay' शब्द का अनुवाद है जो मूल रूप से फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। • निबंध वास्तव में गद्य की कसौटी है जिसमें हम अपने भावों–विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकते हैं। • निबंध में अपने विचारों को क्रमबद्ध ढंग से सीमित शब्दों में व्यक्त करना चाहिए। • साधारण तौर पर निबंध के विषय परिचित विषय होते हैं, अर्थात् जिनके बारे में हम सुनते, देखते व पढ़ते रहते हैं। • निबंध में निबंधकार अपने सहज, स्वाभाविक रूप को पाठक के सामने प्रस्तुत करता है। • उन्हें बताएँ कि अच्छे निबंध–लेखन के लिए सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक परिस्थतियों के प्रति जागरूक रहना चाहिए। • अच्छे निबंध में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए– (i) निबंध की भाषा सरल, प्रभावी व विषय के अनुरूप हो। (ii) विषय का अनावश्यक विस्तार न हो। (iii) निबंध में व्यक्त किए गए विचार मौलिक हों। (iv) निबंध को प्रभावी बननने के लिए वाक्यों, पंक्तियों, उदाहरणों, सूक्तियों का प्रयोग किया गया हो। • छात्रों को स्पष्ट करते हुए बताएँ कि निबंध के तीन अंग होते हैं– भूमिका, विषय–वस्तु तथा उपसंहार।

	• सर्वप्रथम निबंध के प्रथम अंग 'भूमिका' को लेते हुए उन्हें बताएँ कि यह निबंध का आरंभिक अंश है। निबंध का आरंभ आकर्षक, रोचक तथा प्रभावी होना चाहिए। इसमें लेखक निबंध के विषय से परिचित कराता है। • 'विषय–वस्तु' अंग को निबंध का प्राण माना जाता है। क्योंकि इसमें विषय को स्पष्ट किया जाता है। इसमें विषय–सामग्री को क्रमानुसार अलग–अलग अनुच्छेदों में विभाजित करना चाहिए। अनुच्छेदों में अलग–अलग विचारों के होने पर भी संबंध होना जरूरी है। • निबंध की सभी बातों को सारांश रूप में 'उपसंहार' में प्रस्तुत किया जाता है। यह भी आकर्षक एवं प्रभावी होना चाहिए। इसके अंत को किसी काव्य–पंक्ति, सूक्ति अथवा दोहे से प्रभावी बनाया जा सकता है। • ध्यान रखें कि विषय की दृष्टि से निबंध अनेक प्रकार के हो सकते हैं, जैसे– विवरणात्मक या वर्णनात्मक निबंध: इसमें घटना, यात्रा–उत्सव, व्यक्ति तथ समारोह आदि का वर्णन किया जाता है। • इसी तरह दूसरे प्रकार के विचारात्मक निबंधों में देशभक्ति, किसी विचार, स्थिति तथा कोई समस्या आदि विषयों को व्यक्त किया जाता है। • उसी तरह तीसरे प्रकार के भावात्मक निबंधों में किसी मनोबल; जैसे– परोपकार, पराधीनता आदि की प्रधानता रहती है। • पाठ से कोई उदाहरण लेते हुए छात्रों को बताएँ कि इसमें कौन–सा प्रकार है तथा उसके अंगों को स्पष्ट करें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए–

1. वनों का महत्व

....

....

2. समय-नियोजन

3. विद्‌यार्थी और अनुशासन

4. प्रदूषण